फाल्गुन माह , कृष्ण पक्ष 21 वर्ष, अंक 48 पृष्ठ 8 मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज शनिवार 12 मार्च 2022 विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

यूपी जीता अब गुजरात की बारी

मोदी का मिशन गुजरात: पंचायत महासम्मेलन में 3 मिनट तक हिंदी में बोलने के बाद गुजराती में कहा- बापू के ग्रामीण विकास के सपने को पूरा करना है

अहमदाबादः प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 11 और 12 मार्च को गुजरात का दो दिवसीय दौरा चल रहा है। एयरपोर्ट 9 किमी लंबे रोड शो के बाद पीएम मोदी बीजपे ऑफिस कमलम में मीटिंग के लिए पहुंचे और सरपंच सम्मेलन को संबोधित किया। इसमें करीब डेढ़ लाख लोग शामिल रहे। बता दें, कोरोना काल के बाद यह पहला मौका है, जब मोदी गुजरात में किसी बड़े सार्वजनिक कार्यक्रम में शामिल हो रहे हैं। 4 राज्यों उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, मणिपुर और गोवा की जीत के बाद गुजरात में बीजेपी कार्यकर्ताओं का जोश चरम पर दिखाई दे रहा है।

सरपंचों को गुजराती भाषा में संबोधित करते हुए मोदी ने कहा - केम छो (कैसे हो?): इसके बाद उन्होंने विशेष रूप से गांव के लोगों का अभिनंदन किया और कोरोना काल में गांववालों की जज्बे की तारीफ करते हुए कहा - दुनिया में इतनी जबर्दस्त महामारी कोरोना आई, जिसने पूरी दुनिया की हालत खराब कर दी। अन्य जगहों की तरह कोरोना गुजरात के भी गांव-गांव तक पहुंचा, लेकिन गांववालों से कोरोना जीत नहीं सका। क्योंकि, गांव वालों ने इससे लड़ने के लिए खुद नए-नए नियम बनाए। जो लोग गांव से बाहर थे, उन्हें गांव से बाहर रखा। जो गांव के अंदर थे, उन्हें गांव के अंदर ही रखा। गांव वालों ने खुद ही एक अद्भूत व्यवस्था बनाई और कोरोना जैसी महामारी को गांव में घुसने नहीं दिया। इसके लिए मैं गांववालों का बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूं।

बीजेपी का गुजरात मिशन: पीएम मोदी की भगवा टोपी चर्चा में

अहमदाबादः उत्तर प्रदेश समेत चार राज्यों के विधानसभा चुनाव में भगवा लहराने के दूसरे दिन ही पीएम नरेंद्र मोदी गुजरात पहुंच गए। अहमदाबाद एयरपोर्ट से प्रदेश बीजेपी कार्यालय 'कमलम' तक करीब 10 किलोमीटर का उनका भव्य रोड शो निकला। इस दौरान मोदी भगवा रंग की कमल निशान वाली टोपी में नजर आए, जिसकी खूब चर्चा हो रही है। दरअसल, यह टोपी भी भाजपा की एक स्ट्रैटजी का हिस्सा है, क्योंकि यह टोपी भाजपा के लाखों कार्यकर्ताओं को भी बांटी गई है। इसके जरिए मोदी ने नेताओं और कार्यकर्ताओं को एकसूत्र में बांधने की शुरूआत की है। भाजपा ने यह घोषणा की है कि गुजरात के विधानसभा चुनाव तक नेता से लेकर भाजपा का हरेक कार्यकर्ता तक इसी टोपी में नजर आएगा।

बनारस की रैली में मोदी बनारसी बनारस की रैली में बनारसी गमछा, बनारसी टोपी में आए थे नजरः पीएम मोदी ने 4 मार्च को अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी में पांच साल बाद रोड शो किया था। इस दौरान वे ठेठ बनारसी रंग में नजर आए थे। इस दौरान वे बनारसी गमछा तो सर्दी में पहनी जाने वाली खादी की गर्म सदरी के साथ नेताजी सुभाष चंद्र बोस सरीखी भगवा रंग की टोपी के अनोखे लिबास में नजर आए थे। इस रोड शो में वोकल फॉर लोकल और बनारसीपने का संदेश दिया था।

इजराइल की यात्रा पर हिमाचली टोपी में आए थे नजरः मोदी जुलाई 2017 में इजराइल की यात्रा पर गए थे। उस दौरान उन्होंने हिमाचली टोपी पहनी थी, जिसमें गढ़वाली शैली की झलक थी। यह टोपी उस समय बहुत लोकप्रिय हुई थी और बाद में यह फैशन ट्रेंड में शामिल हो गई थी। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी हिमाचली टोपी की डिमांड बढ़ गई थी।

नेताजी की कैप और ब्रह्म कमल टोपी में भी आ चुके हैं नजरः 'आजाद हिन्द फौज सरकार' की 75वीं जयंती के मौके पर 21 अक्टूबर 2018 को लालकिले में हुए समारोह में ढट नरेंद्र मोदी आजाद हिन्द फौज की टोपी में नजर आए थे।

न्यूज फ्लैश

दिल्ली हाईकोर्ट ने केंद्र से पूछा- निजामुद्दीन मरकज की मस्जिद का कौन सा हिस्सा खोला जाए

नई दिल्लीः दिल्ली हाईकोर्ट ने केंद्र सरकार से पूछा है कि वो ये स्पष्ट रुप से बताए कि वो निजामुद्दीन मरकज स्थित मस्जिद बंगले वाली के किस हिस्से को नमाज के लिए खोला जा सकता है। जस्टिस मनोज कुमार ओहरी की बेंच ने केंद्र सरकार के वकील रजत नायर से कहा कि वो इस संबंध में केंद्र का निर्देश लें और 14 मार्च तक कोर्ट को बताएं। दरअसल केंद्र सरकार ने हाईकोर्ट को बताया था कि शबे बारात और रमजान के मौके पर निजामुद्दीन मरकज स्थित मस्जिद बंगले वाली में कुछ लोगों को नमाज पढ़ने की अनुमति दी जा सकती है। इस पर हाईकोर्ट ने कहा कि अगर दिल्ली आपदा प्रबंधन प्राधिकार ने कोई प्रतिबंध नहीं लगाया है तो किसी त्यौहार के मौके पर ही क्यों, हमेशा के लिए क्यों नहीं खोला जा सकता है। तब नायर ने कहा कि अगर मस्जिद की पहली मंजिल खोले जाने में कोई आपत्ति नहीं है लेकिन अगर पूरा परिसर खोलने की मांग की जाएगी तो उस पर केंद्र को आपत्ति है। तब कोर्ट ने पूछा कि जब मस्जिद के चार मंजिल हैं तो केवल पहली मंजिल को ही खोलने की अनुमति क्यों। आप इस पर केंद्र सरकार से स्पष्ट निर्देश लेकर आइए।

पाकिस्तान की वायुसेना में चीन का फाइटर जेट शामिल

इस्लामाबादः पाकिस्तान की वायुसेना में चीन से खरीदे गए जे-10सी फाइटर जेट को शुक्रवार को औपचारिक रूप से शामिल कर लिया गया। कामरा एयरबेस पर हुए इस आयोजन में प्रधानमंत्री इमरान खान और चीन के पाकिस्तान स्थित राजदूत के अलावा पाकिस्तान के कई मंत्री मौजूद रहे। इस मौके पर इमरान खान ने भारत के राफेल फाइटर जेट पर निशाना साधा। खान ने कहा कि जे-10 सी फाइटर जेट के शामिल होने से क्षेत्रीय असंतुलन खत्म हो जाएगा। खान ने कहा, "करीब 40 साल पहले जब एफ-16 को शामिल किया गया था तब पूरा देश खुश हो गया था।

हम बापू और सरदार पटेल के सपनों को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं: मोदी

पीएम मोदी ने कहा कि- यह बापू की भूमि है, यह सरदार वल्लभभाई पटेल की भूमि है। बापू ने हमेशा ग्रामीण विकास, आत्मनिर्भर गांव, मजबूत और सक्षम गांव की बात की। ग्रामीण विकास बापू का सबसे महत्वपूर्ण सपना था। क्योंकि, लोकतंत्र की शक्ति ग्राम व्यवस्था में भी देखने को मिलती है। इसलिए हम पूज्य बापू के सपनों को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। वर्तमान में ई-ग्राम पंचायत केंद्रों से 56 सेवाएं प्रदान की जा रही हैं।

'गांववालों ने देश का अन्न भंडार भरने में कसर नहीं छोड़ी'

पीएम मोदी ने आगे कहा कि कोरोना काल में पूरी दुनिया थम गई थी। लेकिन, गांव के हमारे भाई-बहनों ने इस दौरान भी खेती-किसानी की और देश के अन्न भंडार को भरने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इसके लिए मैं माताओं-बहनों का भी विशेष रूप से अभिनंदन करता हूं कि उन्होंने इस संकट की घड़ी में अपने परिवार की देखरेख के साथ पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर हर काम में उनका सहयोग किया। सेवाएं बढ़ाने के लिए हमने बजट में 4000 गांवों में मुफ्त वाईफाई सेवा देने का फैसला किया गया है। ज्योतिग्राम योजना से गांवों की स्थिति अब बदल चुकी है। गांवों-गांवों तक बिजली पहुंचने से गांवों में भी इंडस्ट्रीज पहुंच रही हैं।

मेरी राह में गड्ढे खोदने वाले खुद गिरे: नवजोत सिंह सिद्धू

चंडीगढ़: पंजाब में विधानसभा चुनाव में बड़ा उलटफेर देखने को मिला। राज्य के मुख्यमंत्री सहित तीन पूर्व मुख्यमंत्री को हार मिली है। इसी बीच कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू ने कहा कि उनकी राह में गड्ढे खोदने वाले खुद ही गड्ढे में गिर गए हैं। शुक्रवार को चुनाव परिणाम आने के बाद पहली बार मीडिया से मुखातिब नवजोत सिद्धू ने फिर से आक्रामक रवैया दिखाते हुए कहा है कि उन्होंने अपने जीवन में कई तरह के उतार-चढ़ाव देखे हैं। यह हार जीवन का हिस्सा है और इससे सबक लेकर आगे चलने की जरूरत है। सिद्धू ने कहा कि इस चुनाव में तीन पूर्व मुख्यमंत्री सहित मुख्यमंत्री निपट गए। जैसा कोई बोजेगा वैसा ही काटेगा। उन्होंने चन्नी पर किसी तरह की सीधी टिप्पणी करने से बचते हुए कहा कि जिस दिन राहुल गांधी ने उन्हें मुख्यमंत्री का चेहरा घोषित किया था। उस दिन के बाद उन्होंने चन्नी का पूरा सहयोग किया। चन्नी को बतौर मुख्यमंत्री और भावी मुख्यमंत्री के रूप में पूरा सम्मान दिया। सिद्धू ने कहा कि वर्ष 2017 में पंजाब के लोगों ने कांग्रेस को एक अवसर दिया था। कांग्रेस ने इस अवसर पर सही इस्तेमाल नहीं किया। एक भ्रष्ट व ढोंगी मुख्यमंत्री को पंजाबवासियों पर बैठा दिया। किसी और के इशारे पर काम करने वाले भ्रष्ट मुख्यमंत्री को कुर्सी से उतारने में चार साल से अधिक का समय लग गया। अब पंजाब वासियों ने आम आदमी पार्टी को मौका दिया है। उन्होंने कहा कि आप को इस अवसर का लाभ लेकर पंजाब वासियों के हित में काम करना चाहिए।पंजाब वासी पुराने सिस्टम को बदलना चाहते थे, इसलिए उन्होंने आप को चुना है। सिद्धू ने कहा कि लोकतंत्र में लोग कभी गलत नहीं होते। लोगों की आवाज को भगवान की आवाज मानकर आगे काम करना होगा।

मुख्यमंत्री के तौर पर भगवंत पंजाब के लोगों की रखेंगे मान : केजरीवाल

16 मार्च को सीएम पद की शपथ लेंगे भगवंत मान

नई दिल्लीः दिल्ली के मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी (आप) के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि पंजाब के भावी मुख्यमंत्री भगवंत मान पंजाब के लोगों की उम्मीदों को पूरा कर उनका मान रखेंगे। भगवंत मान के साथ मुलाकात की तस्वीर साझा करते हुए केजरीवाल ने शुक्रवार को ट्वीट कर कहा कि पंजाब में आप को मिले पूर्ण बहुमत के बाद आज छोटे भाई और पंजाब के भावी मुख्यमंत्री भगवंत मान ने उनके घर पहुंचकर मुलाकात की और शपथ ग्रहण का न्यौता दिया। केजरीवाल ने कहा कि उन्हें पूरा भरोसा है कि भगवंत एक मुख्यमंत्री के तौर पर पंजाब के लोगों की हर उम्मीद को पूरा करेंगे। सूत्रों का कहना है कि मान यहां पार्टी के शीर्ष नेताओं के साथ बैठक कर पंजाब कैबिनेट को लेकर चर्चा करेंगे। साथ ही शपथ ग्रहण समारोह को लेकर भी शीर्ष नेताओं से बात करेंगे।

पेट्रोल-डीजल के दाम रहे स्थिर, कच्चा तेल 109 डॉलर प्रति बैरल के पार

नई दिल्लीः यूक्रेन-रूस युद्ध के बीच कच्चे तेल की कीमत में गिरावट का रूख है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चा तेल 110 डॉलर प्रति बैरल के करीब है। हालांकि, घरेलू बाजार में पेट्रोल-डीजल के दाम स्थिर रहे। सार्वजनिक क्षेत्र की तेल विपणन कंपनियों ने दोनों ईंधनों की कीमतों में कोई बदलाव नहीं किया है। दिल्ली में शुक्रवार को पेट्रोल 95.41 रुपये प्रति लीटर, जबकि डीजल 86.67 रुपये प्रति लीटर पर टिका रहा। देश के अन्य महानगरों मुंबई, कोलकाता और चेन्नई में भी पेट्रोल की कीमत क्रमशः 109.98 रुपये, 104.67 रुपये और 101.40 रुपये प्रति लीटर पर टिका हुआ है।

एमसीडी चुनाव पर रोक न लगाए केन्द्र : सीएम अरविंद केजरीवाल

नई दिल्लीः आम आदमी पार्टी (आप) के मुखिया और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने केन्द्र सरकार से अनुरोध किया कि दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) के चुनाव समय पर कराए जाएं। उन्होंने कहा कि वह प्रधानमंत्री मोदी से अनुरोध करते हैं कि एमसीडी चुनाव को न टालें। केजरीवाल ने शुक्रवार को दिल्ली में एक प्रेसवार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि केन्द्र सरकार जानबूझ कर एमसीडी चुनाव टाल रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा के लोग जानते हैं कि अभी आम आदमी पार्टी की लहर है। इस लहर में आप जीत जाएगी। इससे भाजपा के लोग डर गए हैं। इस लिए वह जानबूझ कर चुनाव आयोग पर दबाव बनाकर एमसीडी चुनाव को रोक रहे हैं। उन्होंने कहा कि जनता जानती है कि भाजपा निगम चुनाव से डरी हुई है।

सीबीएसई ने 10-12वीं के लिए टर्म 2 बोर्ड परीक्षाओं की डेटशीट जारी की

नई दिल्लीः केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने 10वीं और 12वीं कक्षा के टर्म 2 की डेट शीट जारी कर दी है। टर्म 2 की बोर्ड परीक्षाएं 26 अप्रैल से शुरू होंगी। 10वीं की अंतिम परीक्षा 24 मई को जबकि 12वीं की परीक्षाएं 15 जून को समाप्त होंगी। साइंस स्ट्रीम के छात्रों के लिए राहत की बात यह है कि सीबीएसई 12वीं कक्षा की टर्म 2 की बोर्ड परीक्षा 2022 की तारीखों और जेईई मेन 2022 सत्र 2 की तारीखों के बीच कोई सीधा टकराव नहीं है। जेईई मेन का दूसरा सत्र 24 से 29 मई के बीच आयोजित किया जाएगा। इन तिथियों साइंस स्ट्रीम की परीक्षाएं नहीं हैं। 24 मई को राजनीति विज्ञान, 25 मई को गृह विज्ञान, 26 मई को संगीत विषय के अलावा ऑटोमोटिव, हेल्थकेयर, कॉस्ट अकाउंटिंग और शॉर्टहैंड (हिंदी) की परीक्षा होगी। इसके बाद 27 मई को वित्तीय बाजार प्रबंधन, टाइपोग्राफी और कंप्यूटर अनुप्रयोग, चिकित्सा निदान और वस्त्र डिजाइन और 28 मई को अर्थशास्त्र की परीक्षा है। जेईई मेन सत्र 2 की समाप्ति तिथि के एक दिन बाद 30 मई को जीव विज्ञान का पेपर निर्धारित है। उल्लेखनीय है कि जेईई मेन का प्रथम सत्र 21 अप्रैल को समाप्त होगा और सीबीएसई टर्म 2 परीक्षा उसके चार दिन बाद शुरू होगी। इससे जेईई की तैयारी में जुटे उम्मीदवारों को कोई परेशानी नहीं होगी।

यूरोपीय संघ ने यूक्रेन को नहीं दी त्वरित सदस्यता, आवेदन ठुकराया

ब्रसेल्सः यूरोपीय संघ (ईयू) ने शुक्रवार को यूक्रेन की उम्मीद को धराशायी कर दिया। ईयू के नेताओं ने त्वरित सदस्यता देने के यूक्रेन के आवेदन को ठुकरा दिया है। हालांकि युद्धगस्त यूक्रेन के नागरिकों को पीड़ा पहुचाने के लिए रूस की निंदा की है। ईयू के नेताओं ने कहा है कि रूस के 24 फरवरी के हमले के बाद यूरोपीय संघ ने रूस के खिलाफ व्यापक प्रतिबंध लगाए हैं। यूक्रेन को राजनीतिक और मानवीय सहायता प्रदान करने के साथ कुछ हथियारों की आपूर्ति भी की गई है। यूक्रेन के आवेदन के विचार के लिए शुक्रवार सुबह हुई 27 नेताओं की बैठक में क्रोएशिया के प्रधानमंत्री लेडी प्लेंकोविक ने कहा, हममें से किसी ने भी रातोंरात यूरोपीय संघ में प्रवेश नहीं किया।

कृषि में निरंतर प्रगति कर रहा है भारत : तोमर

नई दिल्लीः कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि भारत कृषि क्षेत्र में प्रगति के पथ पर निरंतर आगे बढ़ रहा है । तोमर ने शुक्रवार को वर्चुअल माध्यम से 36वें एशिया-प्रशांत एफएओ (खाद्य एवं कृषि संगठन) के क्षेत्रीय सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि भारत दुनिया की सबसे बड़ी अनुसंधान व विकास प्रणालियों में से एक है। जो सर्वोत्तम पद्धतियों को अन्य देशों के साथ साझा करने के लिए तैयार है। तोमर ने कहा कि एशिया प्रशांत क्षेत्र टिड्डियों-फॉल आर्मी वर्म जैसे सीमापार कीटों से प्रभावित हुआ तब उचित समय पर भारत ने वृहद नियंत्रण अभियान चलाया और अन्य प्रभावित देशों की सहायता भी की। टिड्डी नियंत्रण के लिए ड्रोन का भी सफलतापूर्वक उपयोग किया। तोमर ने कहा कि भूखमरी समाप्त करने वाला एसडीजी लक्ष्य पूरा करने के साथ ही प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग, मजबूत कृषि मूल्य श्रृंखला विकास के माध्यम से उत्पादन-उत्पादकता बढ़ाने के लिए, कृषि क्षेत्र में सर्वोत्तम पद्धतियों के आदान-प्रदान और एक साथ काम करने के भारत के संकल्प की पुष्टि की। जिससे किसानों को अत्यधिक लाभ होगा । कोविड-19 महामारी के कारण आपूर्ति श्रृंखलाओं में विभिन्न व्यवधानों के बावजूद भारत में कृषि क्षेत्र ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है। आपूर्ति श्रृंखलाओं को खुला रखने और न्यूनतम समर्थन मूल्य पर विभिन्न फसलों की खरीद के बेहतर तंत्र के माध्यम से किसानों को प्रत्यक्ष बाजार सहायता प्रदान करते हुए हमारे सक्रिय नीतिगत हस्तक्षेपों के कारण कृषि क्षेत्र का सकारात्मक प्रदर्शन संभव हो पाया है। तोमर ने कहा कि भारत सरकार के द्वारा खरीदा खाद्यान्न करीब अस्सी करोड़ लोगों को मुफ्त में दिया किया गया। जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि महामारी के दौर में भी कोई व्यक्ति भूखा नहीं रहे। उन्होंने कहा कि भारत कृषि क्षेत्र को सतत व लचीला बनाकर किसानों के जीवन और आजीविका में सुधार लाने का प्रयास कर रहा हैं। जिसके लिए राष्ट्रीय स्तर के अनेक कार्यक्रम शुरू किए गए हैं। उल्लेखनीय है कि सम्मेलन में बांग्लादेश के कृषि मंत्री एवं 36वें एशिया-प्रशांत क्षेत्रीय सम्मेलन मंत्रिस्तरीय सत्र के अध्यक्ष डॉ. मुहम्मद अब्दुर रज्जाक, एफएओ के महानिदेशक व एफएओ परिषद के अध्यक्ष क्यू डोंग्यू, अन्य एशियाई व प्रशांत देशों के मंत्रीगण और विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संगठनों के प्रमुख शामिल हुए।

रूस की बमबारी से थर्राया यूक्रेन, खार्किव का शेल्टर होम आया जद में

कीवः रूस की सेना की ताबड़तोड़ बमबारी से यूक्रेन के कई शहर थर्रा गए हैं। युद्ध के 16वें दिन रूस की सेना राजधानी कीव के और करीब पहुंच गई है। इस बीच खार्किव शहर के गवर्नर के ओले सिनेहुबोव ने दावा किया है कि रूसी सेना ने खार्किव में एक शेल्टर होम पर हमला किया।

खार्किव के गवर्नर के मुताबिक रूस के हमले के समय इस शेल्टर होम में 330 से ज्यादा लोग मौजूद थे। वहां से 73 लोगों को निकाला गया है। अब भी 250 से ज्यादा लोग शेल्टर होम में अंदर फंसे हुए हैं। इनमें से कई दिव्यांग हैं। यूक्रेन की राजधानी कीव को रूस की सेना ने दो तरफ से घेर लिया है और टैंक-एंटी टैंक गाइडेड मिसाइलों से हमले तेज कर दिए हैं। उत्तर में इरपिन और पूर्व में ब्रोवरी पर रूस की सेना लगातार हमले कर रही है। रूस की सेना का काफिला कीव पर कब्जे के लिए तेजी से आगे बढ़ रहा है। रशियन सेना टैंक, पैराट्रूपर्स, इन्फेंट्री, एंटी टैंक गाइडेड मिसाइल से हमला कर रही है।

लड़ाई के 16वें दिन शुक्रवार को यूक्रेन ने दावा किया है कि उसने ब्रोबरी में रूस के पांच टैंकों को नष्ट कर दिया है। रूस की सेना को यूक्रेन की सेना मुंहतोड़ जवाब दे रही है।

खबर संक्षेप

साली को ले कर जीजा फरार, थाना पुलिस में कोराव में हुई रिपोर्ट

कोरांव। थाना पुलिस कोरांव में एक पत्नी ने अपने पति के खिलाफ उसकी बहन को ले कर फरार हो जाने की रपट दी है। बता दें कि ग्राम अल्हवा की सुमन कोल जो दो बच्चों की अम्मा है,उसने रपट दी है कि मेरे पति दिनेस कोल मेरी सगी बहन आरती उम्र 14 वर्ष को 9 मार्च को मेरे मायके ग्राम धुंस से दोपहर बहला फुसला कर भगा ले गया। जब विरोध किया तो मेरी सास ससुर ने धमकी दिया कि तुझे अब छोड़वा कर तेरी बहन को रखवा देगें। और ज्यादा विरोध करेगी तो जान से भी मरवा देगें। समाचार लिखे जाने तक पुलिस ने कोई कार्यवाही नहीं की थी।

अपराधी के शरणदाता से यारी में चार सब इंस्पेक्टर समेत आठ पुलिस कर्मी निलंबित

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। मनमानी पुलिसिंग और वरिष्ठ अधिकारियों को भी अंधेरे में रखबर बिना किसी लिखा-पढ़ी के फरार अपराधी के शरणदाताओं को थाने से छोड़ना कोतवाली पुलिस को महंगा पड़ गया। प्रयागराज के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने 4 दारोगा व 4 सिपाहियों को शुक्रवार को निलंबित कर दिया। विभागीय जांच में प्रथम दृष्टया अवैध वसूली का मामला सामने आया है। फिलहाल अभी इंस्टपेक्टर कोतवाली की भूमिका की जांच जारी है। अगर दोष सिद्ध हुआ तो उनका भी निलंबन हो सकता है।

क्या है मामला : हिमाचल प्रदेश का रहने वाला डेविड पिछले साल गिरफ्तार हुआ था। पेशी पर ले जाने के दौरान वह पुलिस को चकमा देकर फरार हो गया था। इस बीच हिमाचल पुलिस को सूचना मिली कि डेविड आजकल प्रयागराज में छिपा है। सूत्र ने पुलिस को बताया कि वह कोतवाली क्षेत्र के ही एक लॉज में छिपा है। हिमाचल पुलिस ने कोतवाली पुलिस से मदद मांगी। प्रभारी ने दो सिपाहियों, कोतवाली और शाहगंज थाने के एक-एक चौकी इंचार्ज के साथ शनिवार की रात शाहगंज क्षेत्र स्थित एक लॉज में छापा मारा। पुलिस इससे पहले कि डेविड तक पहुंच पाती वह मौके से फरार हो गया। पुलिस ने उसके ससुर समेत फरार अपराधी को शरण देने वाले 7 लोगों को हिरासत में थाने ले आई। पूछताछ के बाद सभी को थाने से छोड़ दिया गया। कोई लिखा-पढ़ी भी नहीं हुई। अब बिना लिखा-पढ़ी के शरणदाताओं को छोड़ने पर मामला तूल पकड़ लिया। तरह तरह की चचाएं होने लगीं। मामला संज्ञान में आने के बाद इसकी जांच बैठा दी गई है।

अफसरों को भी रखा अंधेरे में, नहीं दी थी जानकारी : सूत्रों के मुताबिक कोतवाली थाना पुलिस ने इस ऑपरेशन की न तो उच्चाधिकारियों को सूचना दी और न ही दबिश और गिरफ्तार लोगों की कोई जानकारी दी। क्राइम ब्रांच के प्रभारी से जब पूछा गया तो वह देहात क्षेत्र के एक एएसपी का नाम लेता रहा। अब ये एएसपी कौन है और उसकी इस मामले में क्या भूमिका है इसकी भी जांच होगी।

ये हुए निलंबित : जिन सब इंस्पेक्टर्स को निलंबित किया गया है उनमें महावीर सिंह, वरुण कांत प्रताप सिंह, राजीव श्रीवास्तव, विश्वेन्द्र प्रताप यादव व आरक्षी संतोष कुमार यादव, अनुराग यादव, जयकांत पांडेय व अपनीश शामिल हैं। जो चार आरक्षियों के खिलाफ निलंबन की कार्रवाई हुई है वे सभी क्राइम ब्रांच के नारकोटिक्स सेल में तैनात हैं।

जांच अभी जारी रहेगी : प्रयागराज के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अजय कुमार ने बताया कि अभी इस मामले की जांच जारी रहेगी। इन सभी पर मुख्यतः स्वेच्छाचारी ढंग से दबिश देना, दबिश के बाद हिरासत में लिए गए लोगों के बारे में थाना प्रभारी समेत किसी भी उच्चाधिकारी को सूचना ना देना, अवैध वसूली की प्रबल संभावना होना आदि आरोप थे जिनकी जांच कराने पर आरोप सही पाए गए हैं। प्रभारी निरीक्षक कोतवाली नरेंद्र प्रसाद की संलिप्तता की भी जांच हो रही है। अगर दोषी पाए गए तो सख्त कार्रवाई होगी।

लावरवाही और स्वेच्छाचारिता बर्दाश्त नहीं होगी

एसएसपी अजय कुमार ने दो टूक संदेश दिया है कि किसी भी पुलिस कर्मी की लापरवाही और स्वेच्छाचारिता बर्दाश्त नहीं की जाएगी। अगर किसी कर्मी के अपराधियों से सांठ--गांठ सामने आती है तो उसे भी दंड भुगतना पड़ेगा। किसी भी दोषी को बख्शा नहीं जाएगा।

न्यूज झरोखा.....

अल्प समय में विपरीत परिस्थितियों में आर पार की लड़ाई लड़ी : डॉ राकेश धर त्रिपाठी

जंघई। पूर्व उच्च शिक्षा मंत्री डॉ राकेश धर त्रिपाठी प्रतापपुर विधानसभा क्षेत्र के सभी मतदाताओं कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस चुनाव में एनडीए प्रत्याशी के रूप में प्रतापपुर विधानसभा क्षेत्र से नेतृत्व करने का मुझे सौभाग्य मिला जिससे मैं कृतज्ञ हूं।आप सभी के एक सिपाही की तरह मैंने पूरी निष्ठा और मेहनत के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया एवं आपके बीच रहकर आप सभी के सहयोग से बहुत ही अल्प समय में विपरीत परिस्थितियों में आर पार की लड़ाई लड़ी और बड़ी संख्या में 80009 मतों के रूप में आशीर्वाद मिला।मैं प्रतापपुर की धरती पर विकास के लिए संकल्प लेकर आया था, लेकिन मेरा ये सपना अधूरा रह गया इसको मैं किसी ना किसी रूप में पूरा करने का प्रयास करूंगा। प्रतापपुर विधानसभा के मतदाताओं द्वारा मुझ पर विश्वास करने के लिए हृदय से आभार मैं सदैव आपकी सेवा के लिए खड़ा रहूंगा, आपके लिए लड़ता रहूंगा आपका आशीर्वाद ही मेरी ताकत है।

प्रतापपुर मेरा परिवार प्रतापपुर के सभी निवासी देवतुल्य : घनश्याम पांडेय

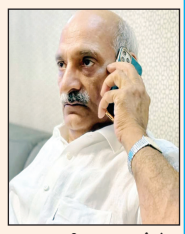

जंघई। प्रतापपुर विधानसभा क्षेत्र से बसपा प्रत्याशी रहे इंजीनियर घनश्याम पांडेय द्वारा चुनाव नतीजे का स्वागत करते हुए कहा कि मेरा प्रतापपुर मेरा परिवार है। प्रतापपुर के सभी देवतुल्य जनता जनार्दन के अपार स्नेह व समर्थन के लिए सभी का आभार है।आज भी आपका बेटा, आपका भाई, आपका सेवक आपके सुख- दुःख में साथ खड़ा मिलेगा और पहले की तरह आपकी समस्याओं के समाधान और अपने परिवार रूपी प्रतापपुर के विकास के लिए सतत प्रयासरत रहेगा।

करछना के भरहा गांव में किसानों को दी गई तकनीकी खेती के बारे में जानकारी

अखंड भारत संदेश

करछना। क्षेत्र में भरहा गांव मे शुक्रवार को सहगल फाउंडेशन एवम् मोजैक प्राइवेट लिमिटेड के द्वारा कृषि ज्योति परियोजना के अंतर्गत तकनीकी विधि के द्वारा किचन गार्डन और गेहूं की खेती कराई गई थीं संस्था के प्रतिनिधि मोहित शुक्ला के द्वारा किसानो की बैठक आयोजन किया गया जिस मौके पर मोजेक प्रा. लि. के प्रतिनिधि शशिकांत भिन्डे एवं विसाल कुमार उपाध्याय के द्वारा किचेन गार्डन और डेमो प्लाट का निरिक्षण किया गया साथ में संस्था के प्रतिनिधि , धर्मेंद्र सिंह मोहित शुक्ल , धीरज कुमार सिंह, अरुण शुक्ला , के साथ लाभान्वित किसान मौजूद रहे उसके बाद किसानों के साथ बैठक की गई जिसमें मोजेक प्राईवेट लिमिटेड के प्रतिनिधि के द्वारा किसानों को तकनीकी विधि के द्वारा खेती के बारे मे जानकारी साझा की गई जिसमे किसानों ने अपने विचारो को व्यक्त किया इस मौके पर मोजेक प्राईवेट लिमिटेड के प्रतिनिधि शशिकांत भिंडे द्वारा गेहूं की फसल और किचेन गार्डन का निरिक्षण किया गया। इस मौके पर बडी संख्या में किसान मौजूद रहे।

किसानों को तकनीकी खेती करने की दी गयी जानकारी

बिना भेदभाव सभी वर्गों तक सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाने का नतीजा है पूर्णबहुमत : आर के शर्मा

घूरपुर। विधानसभा चुनाव में भाजपा की प्रचंड जीत पर बारा क्षेत्र के भाजपाइयों में शुक्रवार के दिन भी भारी उत्साह दिखा। समर्थकों ने गाजे बाजे के साथ एक दूसरे को जीत की बधाई देते हुए मिठाई खिलाकर जश्न मनाया। घूरपुर बाजार में भाजपा नेता राम कुमार शर्मा , अजय द्विवेदी,सुबोध जायसवाल, मिश्री लाल केसरवानी, सोनू जायसवाल, सुनील जायसवाल, दिनेश केसरवानी आदि दर्जनों नेताओं ने घूरपुर चौराहे पर स्थित शिव मंदिर पहुंच शिव जी को लड्डू का भोग लगाकर एक दूसरे का मुंह मीठा कराया । मौजूद लोगों ने कहा कि यह जीत आम जन मानस की जीत है। भाजपा पिवमो जिला मीडिया प्रभारी राम कुमार शर्मा ने कहा कि मोदी और योगी की विकास परक सोच व बिना भेदभाव के सभी वर्गों तक सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाने का नतीजा है। इसी क्रम में गौहनिया, करमा, जसरा मे भी जीत की खुशी मना भाजपाईयो ने मिठाई खिला एक दूसरे को बधाई दी।

आगामी त्यौहार होली के मद्देनजर पीस कमेटी की बैठक संपन्न

अखंड भारत संदेश

लेडियारी। विधानसभा चुनाव के परिणाम के पश्चात आगामी त्यौहार होली को बड़े ही प्यार और सादगी से मनाने हेतु थाना क्षेत्र खीरी के समस्त ग्राम प्रधान, वरिष्ठ जन एवं व्यापारियों को लेकर एक अहम बैठक थाने परिसर में आहूत की गई' बैठक में मुख्य रूप से आगामी त्यौहार होली को लेकर उपस्थित जनमानस से कहा गया कि सभी लोग अपने अपने गावो और क्षेत्रों में बड़े ही सादगी और प्यार के साथ होली मनवाने में सहयोग प्रदान करवाएं' होली का त्यौहार आपसी भाईचारे और सद्भावना को पैदा करने वाला त्यौहार है इस दिन किसी भी प्रकार के मादक पदार्थों के सेवन करने से बचें और विशेष कार्य होने पर ही अपने घरों से कहीं बाहर या रिश्तेदारी में जाने कोशिश करें' बैठक में उपस्थित व्यापारियों से भी निवेदन किया गया कि बाजारों में त्यौहार के दिन आने जाने वाले लोगों अर्थात बाहरी लोगों के साथ किसी भी प्रकार से रंग न फेंके जाएं और ना ही उनकी गाड़ियों को रोका जाए' और

आपसी सद्भावना और भाईचारे को लेकर प्यार से मनाएं त्यौहार : एसओ खीरी

पीस कमेटी की बैठक मे थानाध्यक्ष के साथ शामिल लोग

कीचड़ वाली होली तो कतई ना खेली जाए क्योंकि प्राय इन्हीं सब बातों को लेकर त्यौहार के दिन झगड़े हुआ करते हैं'ज्यादा से ज्यादा प्राकृतिक रंगों का ही प्रयोग करें क्योंकि बाजारों में नाना प्रकार के कॉस्मेटिक रंग आ चुके हैं जो कि चेहरे पर काफी नुकसान भी किया करते हैं' चुनाव परिणाम को लेकर किसी भी प्रकार से आपसी भाईचारे को समाप्त ना करें' किसी भी अफवाह पर कतई ध्यान ना दें कोई भी सूचना होने पर तत्काल पुलिस को सूचित करें' साथ ही साथ संबंधित क्षेत्र के विद्युत विभाग, स्वास्थ्य विभाग, जल विभाग एवं सफाई कर्मचारियों से किए कि किसी भी प्रकार की असुविधा त्योहार के दिन ना होने पाए' उक्त मौके पर मुख्य रूप से उप निरीक्षक चंद्रशेखर यादव,विनोद कुमार, बप्पा सोनी, अनुराग वर्मा, हरिनंदन सिंह, कांस्टेबल अमरेश सिंह, बलबीर सिंह, जितेंद्र यादव, त्रिवेंद्र सिंह, बरकत अली, अंकित यादव, पुत्ती लाल, मुस्ताक अली, रवि सिंह, माशूक अली,अशोक पाल,लवकुश कुमार,सुनील गुप्ता,राकेश गुप्ता,नीरेंद्र निषाद, श्री भगवान सहित गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

चैनल के मीडिया कर्मी को बंधक बनाकर मार पीट के मामले में प्रधानाचार्य सहित अन्य पर केश

अखंड भारत संदेश

मऊआइमा। एक चैनल के मीडिया कर्मी जब फीस न देने पर छात्रों को परीक्षा से निकाल देने की सूचना पर इन्टर कालेज में समाचार कवरेज करने गया तो उसको बंधक बना कर कैमरा तोड कर मारने पीटने का आरोप मीडिया कर्मी ने लगाते हुए प्रधानाचार्य सहित अन्य स्टाप के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है । उधर विधालय के स्टाप का आरोप है कि कथित मीडिया कर्मी पैसों की मांग करने आया था। न देने पर वह झूठा मुकदमा दर्ज कराया है। मिली जानकारी के अनुसार मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम अलावलपुर निवासी दीपक कुमार पुत्र शिवकुमार का आरोप है कि उसे स्टैंडर्ड इन्टर कालेज में फीस न देने पर छात्रों को परीक्षा से बाहर कर देने की सूचना मिली। दीपक कुमार का आरोप है कि जब वह समाचार कवरेज करने गया तो उसे बंधक बनाकर कर मारा पीटा गया और कैमरा तोड दिया गया । दीपक कुमार ने इसकी शिकायत मऊआइमा थाने में की। पुलिस ने स्टैंडर्ड इन्टर कालेज के प्रधानाचार्य राकेश यादव और अन्य विधालय के स्टाप नाम अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है। उधर विधालय के स्टाप का आरोप है कि कथित मीडिया कर्मी और उसके सहयोगी धनादोहन करते हैं पैसा न देने पर वह फर्जी मुकदमा दर्ज कराया है। सूत्रों का कहना है कि मऊआइमा क्षेत्र में कथित मीडिया कर्मियों की बाढ आ गई है। वह कहीं कोटेदारों से अनाजों की वसूली करते हैं तो कहीं बोर्ड की परीक्षा में नकल कराने का आरोप लगा कर घूम घूम कर सेंटरों पर जा कर धनादोहन करते हैं।

अवमानना में प्रमुख सचिव गृह को हाईकोर्ट ने किया तलब

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने प्रमुख सचिव गृह को कोर्ट की अवमानना में पेश होने का आदेश दिया है। कोर्ट ने कहा है कि अगर वह मामले की सुनवाई की तिथि 25 मार्च तक आदेश का अनुपालन नहीं कराते हैं तो वह कोर्ट के समक्ष पेश हों। कोर्ट उन पर आरोप तय करेगी। यह आदेश न्यायमूर्ति आलोक माथुर ने इजहार अहमद की अवमानना याचिका पर सुनवाई करते हुए दिया है।मामले में याची ने अपने बेटे सरफराज अहमद खान पर एनडीपीएस एक्ट के तहत दर्ज एफआईआर पर निष्पक्ष जांच कराने की मांग की थी। कोर्ट ने इस पर आदेश देते प्रमुख सचिव से कहा था कि मामले को छह महीने में निस्तारित करें लेकिन आज तक कुछ नहीं हुआ।

याची ने आदेश का पालन न करने पर अवमानना याचिका दाखिल की। याची के अधिवक्ता काजी वकील अहमद की ओर से तर्क दिया गया कि प्रमुख सचिव गृह की ओर से कोर्ट के आदेश का पालन नहीं किया जा रहा है। इस पर कोर्ट ने प्रमुख सचिव को नोटिस जारी करते हुए 25 मार्च को पेश होने केलिए कहा है। मामले में याची के पुत्र सरफराज अहमद खान पर बहराइच जिले के बेकनगंज थाने में 18 जून 2003 को एनडीपीएस एक्ट के तहत पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज की थी।

भाजपाइयों ने बुलडोजर के साथ निकाली विजय यात्रा

अखंड भारत संदेश

नैनी। उत्तरप्रदेश विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी द्वारा प्रचंड बहुमत प्राप्ति के पश्चात युवा भाजपा नेता रामजी मिश्र के नेतृत्व में सैकड़ों की संख्या में कार्यकताओं के साथ नैनी के वार्ड नंबर 33 काजीपुर क्षेत्र में बुलडोजर के साथ मे विजय यात्रा निकाली गई। भारी जीत की खुशी में कार्यकताओं ने जमकर गुलाल उड़ाया और एक दूसरे को मिठाई खिलाकर अपनी खुशी का इजहार किया। इस दौरान दिलीप केसरवानी, राजकुमार अग्रवाल, पिंटू चौबे , विनय गुप्ता, विनय सिंह, गुड्डू मिश्र, तेजू सिंह, रवि किरण सिंह, रजत दुबे समेत कई कार्यकर्ता मौजूद रहे। इसी प्रकार भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा के नेता संजय श्रीवास्तव के नेतृत्व में नैनी के विभिन्न स्थानों पर कार्यकताओं से बुलडोजर को लेकर विजय जुलूस निकाला गया इस दौरान भाजपा किसान मोर्चा के नेता संजय श्रीवास्तव ने कहा कि प्रयागराज समेत उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की भारी जीत मिलने से कार्यकताओं में भारी उत्साह है। उन्होंने आगे कहा कि आगामी दिनों में आने वाले नगर निगम के चुनाव की तैयारियों में कार्यकर्ता जुट जाएं और समस्त नगर निगम की सीटें बीजेपी के प्रत्याशियों को मिले। इसके लिए घर घर जाकर भाजपा की नीतियों को अवगत कराने पर बल दिया।

जीत पर लोगों ने अबीर गुलाल से मनाया जश्न, बांटी मिठाइयां

जसरा। पांच प्रान्तों के हुये चुनाव में चार प्रान्तों में भाजपा को मिले प्रचण्ड बहुमत से भाजपाईयों में खुशी का माहौल ब्याप्त है। वहीं जीत की खुशी में लोगों ने मिठाइयां बांटी और अबीर गुलाल उडा.कर जश्न मनाया। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में भारी बहुमत से जीत के साथ ही मणिपुर,गोवा, उत्तराखंड के चुनाव में भाजपा को मिले प्रचण्ड बहुमत से जसरा के पार्टी कार्यकताओं ने विजय जुलूस निकाल कर जश्न मनाया तथा मिठाइयां बांटी व पटाखे फोड़े। उत्तर प्रदेश में 273 सीट प्राप्त करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी के हाथों को मजबूत ही नहीं बल्कि यह भी साबित किया है कि भाजपा की नीतियां जनरक्षक रहीं। कोरोना काल हो या सड़क निर्माण हो, कश्मीर मुद्दा हो अथवा यूक्रेन में युद्ध रहा हो भाजपा सरकार ने बड़ी मजबूती के साथ कार्य किया है। इसी का परिणाम है कि जनता ने भाजपा को पुनः स्वीकारने का कार्य किया है। जसरा में हाजी मुस्ताक अहमद सिद्दीकी की अगुवाई में कार्यकताओं ने पार्टी की जीत पर जमकर पटाखे फोड़े और मिठाइयां बांटी। इस मौके पर वरिष्ठ भाजपा नेता राजाबाबू पाठक,आनंद सिंह, मनोज मिश्र, सुशील शुक्ल, उमेश पाठक,हसनैन अहमद सिद्दीकी, अवैश अहमद,जमाल अहमद सिद्दीकी, दीपू पाठक सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

7 दिवसीय स्पीयर हेड टीम का जिला स्तरीय आवासीय प्रशिक्षण का हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। नमामि गंगे में युवाओं की सहभागिता परियोजना के अंतर्गत नेहरू युवा केंद्र प्रयागराज द्वारा 7 दिवसीय स्पीयर हेड टीम का जिला स्तरीय आवासीय प्रशिक्षण आयोजित किया जा रहा है । नमामि गंगे की जिला परियोजना अधिकारी सिंह ने बताया कि आज प्रशिक्षण का तीसरा दिवस था और इसमें रोज सुबह प्रात 6 बजे योगाभ्यास कार्यक्रम होता है उसके पश्चात चेतना गीत होता है और फिर विभिन्न विभाग के विशेषज्ञों आकर युवाओं को पर्यावरण संरक्षण के तरीके ,गंगा स्वछता ,और संचार कौशल, पर्सनैलिटी डेवलपमेंट, व्यक्तित्व विकास, आदि का

प्रशिक्षण में भाग लेते स्पेयरहेड

प्रशिक्षण के दिया जा रहा है।तीसरे दिवस सर्वप्रथम गंगा टास्क फोर्स की टीम ने आकर उनके द्वार किया जा रहे गंगा सफाई हेतु गए कार्यों के बारे अवगत कराया जिसमें गंगा के विषय में वैज्ञानिक जानकारी दी, पौधारोपण, जीव विविधिता संरक्षण , एवं वॉटर सैंपलिंग के विषय में युवाओं से चर्चा एवं प्रोत्साहित किया इसमें भारतीय वन्य जीव संस्थान के अनुज ने घड़ियाल के बारे में विस्तार से जानकारी दी और। डॉक्यूमेंट्री के माध्यम से उनके खतरे और समस्या के बारे में अवगत कराया। इसे बाद तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें अतिथि के रूप में रिटायर सेवानिवृत्त उप निदेशक एवं की एम पी डिग्री कॉलेज की असिस्टेंट प्रोफेसर प्रिया सोनी रही । जिला युवा अधिकारी जागृति पांडे ने उनका स्वागत किया रही । कार्यक्रम में सभी स्पीयरहेड प्रतिभागियों ने अलग अलग विषयो पे 2 मिनट में अपनी बात रखी और टॉप 3 को पुरस्कृत कर उनका मनोबल बढ़ता गया।

चुनाव के दौरान मंच से पीएम सीएम पर अभद्र टिप्पणी में शिक्षक निलंबित

प्रयागराज। विधानसभा चुनाव के दौरान पार्टी के विशेष का प्रचार करने और मंच से प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री पर अभद्र टिप्पणी के आरोप में शिक्षक अजीत यादव को निलंबित कर दिया गया है। वह बहरिया विकासखंड के कंपोजिट विद्यालय सराय ख्वाजा में तैनात है। निलंबन अवधि में शिक्षक अजीत यादव अपनी उपस्थिति ब्लॉक संसाधन केंद्र कौड़िहार में दर्ज कराएंगे। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व छात्रनेता और शिक्षक अजीत यादव पर विधानसभा चुनाव के दौरान पार्टी विशेष के समर्थन में मंच से भाषण देने, जनसंपर्क में सक्रिय भूमिका निभाने का आरोप लगा। मंच से प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री पर अभद्र टिप्पणी करने का वीडियो भी वायरल हुआ थाइस मामले के संज्ञान में आने पर बीएसए प्रवीण कुमार तिवारी ने शिक्षक को पांच मार्च को नोटिस देकर स्पष्टीकरण मांगा था, लेकिन शिक्षक की तरफ से कोई जवाब नहीं दिया गया। इस पर बीएसए ने शिक्षक अजीत यादव को अध्यापक आचरण सेवा नियमावली के विरूद्ध काम करने का दोषी पाए जाने पर निलंबित कर दिया है।

परमात्मा ने धर्म की रक्षा के लिए अवतार लेकर पृथ्वी पर धर्म की स्थापना की : श्याम जी

जंघई। चनेथू डीह गांव में सामूहिक सहयोग से हो रही श्रीमद्भागवत कथा में कथावाचक श्याम जी महाराज ने ध्रुव चरित्र सुनाया।बताया कि सतयुग के दौरान अवधपुरी में राजा उत्तानपद राज किया करते थे। उनकी बड़ी रानी का नाम सुनीति था और उनके कोई संतान नहीं थी। देवर्षि नारद रानी को बताते हैं कि यदि तुम दूसरी शादी करवाओगी तो संतान प्राप्त होगी। रानी अपनी छोटी बहन सुरुचि की शादी राजा से करवा देती है। कुछ समय बाद सुरुचि को एक संतान की उत्पत्ति होती है। जिसका नाम उत्तम रखा। उसके कुछ दिनों के बाद बड़ी रानी भी एक बालक ध्रुव को जन्म देती है। 5 वर्ष बाद जब राजा उत्तम का जन्म दिन मना रहे थे तो बालक ध्रुव भी बच्चों के साथ खेलता हुआ उनकी गोद में बैठ गया, जिस पर सुरुचि उठा देती है और उसे कहती है कि यदि अपने पिता की गोद में बैठना है तो अगले जन्म तक इंतजार कर। बालक ध्रुव यह बात चुभ जाती है और वह वन में जाकर कठिन तपस्या करने लगते हैं। उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु उन्हें दर्शन देते हैं और उन्हें मनचाहा वरदान देने का वचन देते हैं। इस प्रसंग से यह शिक्षा मिलती है कि किसी से भेदभाव नहीं करना चाहिए और प्रभु की भक्ति में कोई विघ्न नहीं डालना चाहिए।इस अवसर पर यजमान सुशील उपाध्याय एवं सहयोगियों में लल्लन प्रसाद पांडेय, रंगनाथ उपाध्याय, देवमणि तिवारी, मातादीन उपाध्याय, उदयराज उपाध्याय, सुशील उपाध्याय, त्रिभुवन नाथ उपाध्याय, जयप्रकाश उपाध्याय, संजय उपाध्याय, रामप्रकाश पांडेय, राम अभिलाष पांडेय, डिप्टी मिश्रा, सुरेश मिश्रा, अजय दुबे, आशीष उपाध्याय, राजेंद्र पांडेय सहित तमाम भक्तगण मौजूद रहे।

खबर संक्षेप

8वीं के छात्र 21 मार्च तक करें छात्रवृत्ति के लिए आवेदन

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश के राजकीय, सहायता प्राप्त और स्थानीय निकाय के स्कूलों में कक्षा आठ में पढ़ने वाले छात्र-छात्राएं राष्ट्रीय आय एवं योग्यता आधारित छात्रवृत्ति योजना परीक्षा 2022-23 के लिए अब 21 मार्च तक वेबसाइट पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। मनोविज्ञानशाला की निदेशक ऊषा चन्द्रा ने बताया कि पहले आवेदन की अंतिम तिथि 15 मार्च थी जिसे बढ़ाकर 21 मार्च कर दिया गया है। ऑनलाइन आवेदन में आवेदकों के स्तर से हुई त्रुटियों में संशोधन की तिथि 22 और 23 मार्च निर्धारित की गई है। इस छात्रवृत्ति योजना के तहत यूपी के 15143 मेधावियों को कक्षा नौ से 12 तक प्रतिमाह एक हजार या प्रतिवर्ष 12 हजार रुपये छात्रवृत्ति मिलेगी। आवेदन करने वाले छात्र के अभिभावक की सालाना आय 1.5 लाख से अधिक नहीं होनी चाहिए। कोरोना के कारण तमाम स्कूलों में परीक्षा नहीं हो सकी और छात्र-छात्राओं को बिना परीक्षा 8वीं में प्रमोट कर दिया गया। इसी वजह से इस बार 7वीं में प्रोन्नत सभी अभ्यर्थी आवेदन कर सकते हैं।

सड़क हादसे में दो दोस्तों की मौत, घर में मचा कोहराम

अखंड भारत संदेश

दो कारों की आपस में हुई भिड़ंत

दो भाइयों में छोटा था नितिन, घर में कोहराम

पुलिस ने बताया कि मृतक नितिन दो भाईयों में छोटा था और अभी उसकी शादी नहीं हुई थी। उसकी मौत की खबर घर पहुंची तो कोहराम मच गया। पिता व मां रेशम सिंह का रो-रोकर बुरा हाल रहा। उनकी हालत देखकर आसपास के लोगों की भी आंखें भी नम हो गईं। उधर रोहित तीन भाइयों में दूसरे नंबर पर था। वह घर पर ही रहताथा।

प्रयागराज। सरायइनायत के हबूसा मोड़ के पास रात में हुए हादसे में दो दोस्तों की मौत हो गई। दोनों घर लौट रहे थे तभी सामने से आ रही कार और उनकी कार में भिड़ंत हो गई। घटना में एलएलबी छात्र नितिन सिंह (25) की मौके पर ही मौत हो गई जबकि गंभीर रूप से जख्मी हाल में उसके साथी रोहित यादव (22) को एसआरएन भेजा गया। जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। घटना से अफरातफरी मची रही।नितिन हबूसा मोड़ के पास का ही रहने वाला था। उसके पिता जीतेंद्र प्रताप सिंह हबूसा मोड़ के पास ही सीमेंट-सरिया की दुकान चलाते हैं। शुक्रवार को वह रोहित निवासी दुर्जनपुर झूंसी के साथ किसी काम से शुक्रवार शाम झूंसी गया था। रात नौ बजे करीब दोनों कार से वापस लौट रहे थे तभी हबूसा मोड़ के पास सामने से आ रही कार और उनकी कार में भिड़ंत हो गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि दोनों कारें बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गईं। सूचना पर पहुंची पुलिस ने कार में फंसे दोनों युवकों को बाहर निकाला लेकिन तब तक नितिन की मौत हो चुकी थी। उसके दोस्त की भी हालत बेहद गंभीर थी। घटना की जानकारी पर पुलिस मौके पर पहुंची और उसे अस्पताल भेजा लेकिन उसने भी दम तोड़ दिया। घटना की जानकारी नितिन के घरवालों को मिली तो कोहराम मच गया। वह रोते-बिलखते अस्पताल पहुंच गए। सरायइनायत पुलिस ने बताया कि दोनों कारों को कब्जे में ले लिया गया है। जांच पड़ताल की जा रही है।

मौलाना जौहर अली ट्रस्ट मामले में , अवैध रूप से जमीन खरीदने के आरोपियों को राहत

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने मौलाना जौहर अली ट्रस्ट के रजिस्ट्रार अदीब आजम, निफत अफलाख, जकीउर्रहमान सिद्दीकी, मोहम्मद फसीह जैदी, सलीम कासिम, नसीर अहमद खां, मुश्ताक अहमद सिद्दीकी के खिलाफ रामपुर की विशेष अदालत में चल रहे आपराधिक मामलों की सुनवाई पर रोक जारी रखते हुए बड़ी राहत दी है।याचिका की अगली सुनवाई चार और पांच अप्रैल को होगी। यह आदेश न्यायमूर्ति राजीव गुप्ता ने नसीर अहमद खां व कई अन्य की याचिका पर दिया है। जिसमें कानून का उल्लघंन कर जबरन बैनामा कराने के आरोप में चल रहे 27आपराधिक केसों व चार्जशीट की वैधता को चुनौती दी गई है।याची का कहना है कि अजीमनगर थाने में दर्ज आपराधिक मामले में पूर्व कैबिनेट मंत्री आजम खां सहित दर्जनों लोगों को आरोपित किया गया हैं। इन बैनामों से याची का कोई सरोकार नहीं है। याचियों का कहना है कि कोर्ट ने पुलिस चार्जशीट पर बिना विवेक का इस्तेमाल किए संज्ञान लिया है। मुख्य आरोप आजम खां व आले हसन पर लगाया गया है। हम लोगों ने न कोई बैनामा कराया और न ही किसी को धमकी दी है। सरकार का कहना है कि सभी के खिलाफ चार्जशीट दाखिल है। अदालत की कार्यवाही में हस्तक्षेप न किया जाए।

रेलवे ने दो साल बाद बहाल की कंबल सुविधा

ट्रेनों में अब फिर लगाए जाएंगे पर्दे, यात्रियों को मिलेंगे कंबल

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। रेल मंत्रालय ने 2 साल बाद रेल यात्रियों के लिए कंबल सुविधा बहाल कर दी है। हालांकि यह सुविधा अभी केवल लंबी दूरी की ट्रेनों में ही दी गई है। रेलवे ने मार्च-2020 से कोरोना महामारी के कारण यात्रियों को दिए जाने वाले चादर, तकिया और कंबल देना बंद कर दिया था। इसके पीछे संक्रमण को फैलने से रोकना कारण बताया गया था।

अभी सुविधा मिलने में लग सकता है कुछ और समय

उत्तर मध्य रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी डॉक्टर शिवम शर्मा ने बताया कि कोविड-19 के कारण महामारी और कोविड प्रोटोकॉल को देखते हुए ट्रेनों से यात्रियों की आवाजाही के लिए स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोटोकॉल (एसओपी) जारी किया गया था, जिसमें लिनेन चादर, कंबलों और ट्रेनों के अंदर के पर्दों पर पाबंदी लगाई गई थी। हालांकि अभी ट्रेनों में कंबल, तकिया और चादर मिलने में कुछ समय लग सकता है। अब रेलवे ने चादर, कंबल और पर्दों पर लगाई गई पाबंदी को हटा दी है। ये चीजें उसी तरह उपलब्ध कराई जाएंगी, जिस तरह कोरोना से पहले थीं।

की जा रही थी लंबे समय से सुविधा बहाल करने की मांग

कोरोना का प्रकोप कम होने के बाद लगातार लंबी दूरी की यात्रा करने वाले यात्री रेलवे बोर्ड से कंबल तकिया और चादर की सुविधा बहाल करने की मांग कर रहे थे। यह सुविधा ना होने से यात्रियों को अपने साथ कंबल चादर और तकिया लेकर जाना पड़ता था। इससे यात्रियों के पास ज्यादा लगेज हो जा रहा था। ऐसे में सुविधा बहाल करने को लेकर रेलवे के पास लाखों ट्वीट किए गए थे।

दो दिन नए स्वरूप में चलेगी प्रयागराज-उधमपुर ट्रेन

प्रयागराज। यात्रियों की सहूलियत के लिए उत्तर मध्य रेलवे ने गाड़ी संख्या 04151 व 04152 प्रयागराज-उधमपुर सुपरफास्ट एक्सप्रेस में बदलावा किया गया है एनसीआर के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी डॉ. शिवम शर्मा ने बताया कि सप्ताह में दो दिन इस ट्रेन के संचालन में बदलाव किया गया है। यह परिवर्तन प्रयागराज से एक अप्रैल व उधमपुर से दो अप्रैल को प्रभावी होगा। इसमें कुल 21 डिब्बे हैं। एक रछफ-ऊ, चार सामान्य श्रेणी, छह स्लीपर, छह थर्ड एसी, एक सेकेंड एसी व दो इकॉनमी डिब्बे हैं।कानपुर सेंट्रल-लोकमान्य तिलक के संचालन में विस्तारडॉ. शिवम कुमार शर्मा ने जारी प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से बताया कि गाड़ी संख्या 04141/04142 प्रयागराज-उधमपुर सुपरफास्ट एक्सप्रेस व 04152/04152 कानपुर सेंट्रल-लोकमान्य तिलक टर्मिनल सुपरफास्ट एक्सप्रेस के संचालन में विस्तार किया गया है। 04152 के संचालन की अवधि 25 मार्च तक थी जिसे बढ़ाकर अब एक अप्रैल से 30 सितंबर कर दी गई है।04141 प्रयागराज-उधमपुर एक्सप्रेस एक अप्रैल से 30 सितंबर तक कर दी गई है।04142 उधमपुर-प्रयागराज की अवधि बढ़ाकर दो अप्रैल से एक अक्टूबर कर दी गई है।

हार्ट अटैक ने डाक्टर की जान ली

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। हार्ट अटैक यानी दिल का दौरा आकस्मिक मौत की बड़ी वजह बनता जा रहा हैष पहले कहा जाता रहा है कि यह 50 उम्र के बाद की बीमारी है लेकिन इधर देखने में आ रहा है कि 25 से 40 साल के युवा इसकी वजह से जान गंवा रहे हैं। फिटनेस के प्रति जागरूक नेता और अभिनेता भी इससे बच नहीं पा रहे हैं। अब हार्ट अटैक ने एक डाक्टर की जान ले ली है। प्रयागराज में मोतीलाल नेहरू मेडिकल कालेज की स्त्री एवं प्रसूति रोग विभागाध्यक्ष डा. अमृता चौरसिया के पति डा. मनीष चौरसिया (47 वर्ष) का शुक्रवार शाम हृदय गति रुकने से निधन हो गया। डा. अमृता के साथ वह एक कांफ्रेंस में शामिल होने के लिए मेरठ गए थे, वहीं यह दुखद घटना हुई। इसकी जानकारी होते ही प्रयागराज के चिकित्सकों में शोक व्याप्त हो गया। फोन पर चिकित्सक एक दूसरे से दुख जताने लगे। शनिवार को शव को यहां प्रयागराज लाकर अंतिम संस्कार किया जाएगा।

प्रयागराज के डा. मनीष चौरसिया पत्नी अमृता संग कांफ्रेंस में गए थे मेरठ

टीबी अस्पताल तेलियरगंज में तैनात थे डा. मनीष चौरसिया

खुल्दाबाद निवासी डा. मनीष चौरसिया पीएमएस संवर्ग के डाक्टर थे। वे शिश् रोग और नेत्र रोग के भी विशेषज्ञ थे तथा आप्थलमोलोजी में भी उन्होंने डिप्लोमा किया था। करीब पांच साल से वह जिला क्षय रोग चिकित्सालय तेलियरगंज में तैनात थे। टीबी अस्पताल के मुख्य चिकित्साधीक्षक डा. देवेंद्र ने कहा कि डा. मनीष के निधन का समाचार मिलते ही उन्हें और सभी अन्य स्टाफ को दुख हुआ।

सीएमपी डिग्री कॉलेज में आयोजित खेलकूद प्रतियोगिता का हुआ समापन

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। शुक्रवार को सी. एम. पी डिग्री कॉलेज में आयोजित अंतर महाविद्यालीय खेल कूद प्रतियोगिता का आखिरी दिन था । इस दौरान अंतर महाविद्यालय खेलकूद प्रतियोगिता में बीते 10 दिनों में प्रतिभाग किए सभी विजेताओं और उपविजेताओं के लिए प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किया गया व साथ ही साथ महाविद्यालय के छात्र छात्राओं के लिए वार्षिक खेलकूद समारोह का भी आयोजन किया गया । इस प्रतिभा सम्मान समारोह में सीएमपी, आई एस डी सी, एस पी एम, ए डी सी, ईसीसी, जेटी और डेलीगेसी की टीमों ने शिरकत किया। पुरस्कार वितरण के दौरान जीते हुए सभी प्रतिभागियों को व उनके महाविद्यालय को प्रशस्ति पत्र, मेडल और ट्रॉफी भेंट कर पुरस्कृत किया गया।

इस प्रतियोगिता का उद्घघाटन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे श्री प्रेम प्रकाश, एडीजी प्रयागराज जोन व विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं महिला सेवा सदन की प्राचार्य डॉ अमिता शुक्ला,डॉ रूबी वर्मा , मातृ स्नेह फाउंडेशन के संस्थापक व अध्यक्ष भारत विकास परिषद नागेन्द्र सिंह , और सारथी ग्रुप के संस्थापक अनिल राज मौर्य ।सर्वप्रथम मुख्य अतिथि महोदय का स्वागत एनसीसी की टोली ने की जिसका नेतृत्व तनाज ने किया। प्राचार्य डॉ

खेलकूद प्रतियोगितामें उपस्थित मुख्यअतिथि।

खेलकूद प्रतियोगिता में विजयी खिलाडी प्रमाण पत्र व मेडल दिखाते

बृजेश कुमार ने मुख्य अतिथि महोदय को अंगवस्त्र व पुष्पगुच्छ भेंट किया वहीं खेल संयोजक अनंत सिंह ने स्मृति चिन्ह भेंट कर मुख्य अतिथि महोदय का स्वागत किया।मुख्य अतिथि महोदय ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि, हम सबको साथ मिलकर वह अपने कर्तव्यों को निभा कर सिर्फ इस महाविद्यालय को नहीं अपितु पूरे देश को वैश्विक पटल पर बड़े मजबूती के साथ पेश करना होगा जिसमें युवाओं की भूमिका सबसे अहम होगी। मुख्य अतिथि महोदय ने सभी छात्र छात्राओं को यह आश्वस्त किया कि भविष्य में उन्हें कोई भी कठिनाई की सामना नहीं करना पड़ेगा इसके लिए उनके ऑफिस के दरवाजे सीएमपी कॉलेज के सभी छात्र छात्राओं के लिए हमेशा खुले रहेंगे। साथ ही साथ उन्होंने, प्राचार्य डॉ बृजेश कुमार को और खेलकूद संयोजक श्री अनंत सिंह को विशेष बधाई दी। कहा कि जिस उम्मीद से मैंने ये बड़ी जिम्मेदारी आपको सौंपी थी, आप पूरी क्षमता के साथ उस जिम्मेदारी को निभा रहे हैं। इसी क्रम में महिला सेवा सदन की प्राचार्या डॉ अमिता शुक्ला ने सभी प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि यह भव्य आयोजन देखकर मैं स्तब्ध हूं और जिस तरह आप सब मिलकर कायस्थ पाठशाला का 150 वीं वर्षगांठ मना रहे हैं, इसके लिए कॉलेज के प्राचर्य, सभी शिक्षक व सभी छात्र छात्राएं बधाई के पात्र हैं।डॉ रवि वर्मा ने सभी छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि इसी खेल के माध्यम से आप पूरे विश्व को शांति और भाईचारे का संदेश दे सकते हैं और आप यह संदेश देने में सफल भी दिखाई दे रहे हैं।प्राचार्य डॉ बृजेश कुमार ने मुख्य अतिथि का धन्यवाद् ज्ञापित करते हुए, खेल संयोजक और सभी प्रतिभगियों व सहयोगियों को बधाई देते हुए कहा कि जो सपना मैंने कुछ वर्ष पहले देखा था वह आज पूरा हो रहा है।तत्पश्चात मुख्य अतिथि महोदय, विशिष्ट अतिथि गण, प्राचार्य महोदय व सभी शिक्षकों ने मिलकर सभी प्रतिभागियों से परिचय प्राप्त किया और आसमान में कबूतर वह गुब्बारों को छोड़ खेल का शुभारंभ किया। प्रतियोगिता के दौरान , डॉ संध्या पांडे, डॉ संगीता सहगल, डॉ अंजली, डॉ ऐश्वर्या, डॉ रूपम, डॉ रमा, डॉ वीरेंद्र सिंह, डॉ एकात्मदेव, डॉ शैलेंद्र, डॉ अंजनी, डॉ भूपेंद्र त्रिपाठी,डॉ नीता सिन्हा,डॉ भूपेंद्र बजाज,डॉ सत्येंद्र नाथ, डॉ भावना चौहान, डॉ रजत श्रीवास्तव, डॉ नीरज सिंह, डॉ यादवेंद्र ,डॉ अकरम डॉ हेमलता पंत, डॉ राजकुमार , डॉ रितेश त्रिपाठी, डॉ तेज प्रताप, डॉ अमित सिंह, डॉ मुनिंद्र, डॉ,अखिलेश, डॉ आर.सी पाल, और मुख्य अनुशासनाधिकारी अर्चना त्रिपाठी व अन्य पदाधिकारि उपस्थित रहे। इस खेल का आयोजन श्री अनन्त सिंह,संयोजक, खेल -कूद,सी. एम.पी डिग्री कॉलेज, प्रयागराज के नेतृत्व में संपन्न हुआ।इस आयोजन को सकुशल संपन्न कराने में प्रिया, निखिल, धर्मेंद्र, तबरेज, अंकुर, प्रत्यूष, हर्ष, अश्मित, अंशु, मनदीप, देवव्रत, अरविंद, रिजवान, हिमांशु, काजल, राधा, लकी पाण्डेय,रोशन, शांतनु वह अन्य सभी छात्र छात्राओं ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

ठग कंपनी के शिकार दारोगा ने निदेशक समेत तीन लोगों पर प्रयागराज में दर्ज कराया मुकदमा

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। शाइन सिटी के निदेशक राशिद नसीम, आशिफ नसीम और जावेद इकबाल के खिलाफ एक और जालसाजी का मुकदमा दर्ज हुआ है। इस बार रिपोर्ट केंद्रीय रिजर्व पुलिस के एसआइ अवधेश सिंह भदौरिया ने कोर्ट के आदेश पर सिविल लाइंस थाने में दर्ज करवाई है। शाइन सिटी के निदेशक समेत तीनों के खिलाफ जालसाजी कर सात लाख रुपये हड़पने का आरोप लगाया गया है।मध्य प्रदेश के रहने वाले अवधेश सिंह भदौरिया केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल में सब इंस्पेक्टर हैं। इस समय वह छत्तीसगढ़ में तैनात हैं। हालांकि, उनका परिवार धूमनगंज क्षेत्र में रहता है। उनका कहना है कि कुछ वर्ष पहले जावेद इकबाल ने उनसे फोन पर संपर्क किया। बोला कि प्रयागराज में कंपनी की तरफ से प्लाट बेचे जा रहे हैं। साथ ही उसने कई और बातें कहीं। इसके बाद वह अपनी पत्नी मीनाक्षी के साथ सिविल लाइंस स्थित कंपनी के कार्यालय पहुंचे और बातचीत की। दो प्लांट खरीदने की इच्छा उन्होंने जताई। इसमें एक प्लाट खुद और दूसरा पत्नी के नाम पर खरीदने की बात कही। सात लाख रुपये एडवांस रुपये देकर अवधेश सिंह भदौरिया ने दो प्लाट की बुकिंग करा ली।

स्पेशल आफर के नाम पर फिर जमा करा ली मोटी रकम

कुछ समय तक सब कुछ ठीक ठाक चलता रहा, लेकिन इसी बीच उनको फिर झांसा दिया गया कि कंपनी का एक विशेष आफर आया है। सात लाख रुपये निवेश करने पर 18 महीने में 14 लाख रुपये दिए जाएंगे। अवधेश इस झांसे में आ गए और सात लाख रुपये जमा कर दिया। तय समय बीतने पर उन्होंने कंपनी में संपर्क किया तो पता चला कि बड़ा फजीर्वाड़ा किया गया है। बड़ी संख्या में लोगों को शिकार बनाया गया है। सभी की तरह उनको भी न प्लाट मिला और न ही रुपये। कंपनी बंद कर सभी भागे हुए हैं। कंपनी का निदेशक राशिद नसीम विदेश भाग निकला है और उस पर पांच लाख का इनाम भी घोषित है। इसके बाद अवधेश सिंह भदौरिया ने कोर्ट का दरवाजा खटखटाया और फिर वहां से रिपोर्ट दर्ज करने का आदेश दिया गया।

इसी माह शुरू होगी पीसीएस-2022 की भर्ती प्रक्रिया

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। पीसीएस-2022 की भर्ती प्रक्रिया इसी माह शुरू हो जाएगी। उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (यूपीपीएससी) को अब तक पीसीएस के तकरीबन 300 पदों का अधियाचन मिल चुका है, लेकिन विधानसभा चुनाव के कारण नई भर्ती प्रक्रिया शुरू नहीं की जा सकी थी। चूंकि अब चुनाव के नतीजे आ चुके हैं, ऐसे में आयोग के सामने भर्तियों को तेजी से आगे बढ़ाने की चुनौती है। माना जा रहा है कि लोक सेवा आयोग जल्द ही पीसीएस-2022 का विज्ञापन जारी करेगा।यूपीपीएससी के कैलेंडर में पीसीएस-2022 की प्रारंभिक परीक्षा इस वर्ष 12 जून को प्रस्तावित है, जबकि मुख्य परीक्षा 27 सितंबर को होनी है। प्रारंभिक परीक्षा के आयोजन को तीन माह शेष रह गए हैं। आवेदन के लिए अभ्यर्थियों को एक माह का वक्त दिया जाता है।

ऐसे में आयोग पीसीएस-2022 की भर्ती प्रक्रिया जल्द ही शुरू करने जा रहा है। हालांकि आयोग ने जनवरी के अंतिम सप्ताह में ही विज्ञापन जारी करने की तैयारी की थी, लेकिन ऐसा नहीं हो सका। इसके बाद विधानसभा चुनाव शुरू हो गए। चुनाव खत्म होने के बाद अभ्यर्थियों को भर्ती प्रक्रिया का इंतजार है।

अभी बढ़ सकती है पदों की संख्या

आयोग को पिछले साल के अंत में ही पीसीएस-2022 के लिए तकरीबन डेढ़ सौ पदों का अधियाचन मिल चुका था। इसके लिए शासन की ओर से 22 फरवरी को एसडीएम के 39 पदों का अधियाचन आयोग को भेजा गया और पदों की संख्या बढ़कर 200 के आसपास पहुंच गई। सूत्रों का कहना है कि आयोग को 100 नए पदों का अधियाचन भी मिल गया है और अब पदों की संख्या बढ़कर लगभग तीन सौ पहुंच गई है पदों की संख्या अभी और बढ़ सकती है। नियमों के अनुसार प्रारंभिक परीक्षा का परिणाम जारी होने तक पदों की संख्या घट-बढ़ सकती है। पर्याप्त संख्या में पदों का अधियाचन मिलने के बाद आयोग अब विज्ञापन जारी करने की तैयारी कर रहा है। आयोग के सचिव जगदीश का कहना है कि इस पर काम चल रहा है। मार्च में पीसीएस-2022 का विज्ञापन जारी किए जाने की तैयारी है।

हाईकोर्ट समाचार

रिटायरमेंट विकल्प न देने पर ग्रेच्युटी देने से नहीं कर सकते इनकार

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि 60 साल में सेवानिवृत्ति का विकल्प नहीं भरने और पहले ही मृत्यु हो जाने पर सहायक अध्यापक को ग्रेच्युटी का भुगतान करने से इनकार नहीं किया जा सकता। कोर्ट ने जिला विद्यालय निरीक्षक जौनपुर को सर्वेश कुमारी केस के फैसले के आलोक में ग्रेच्युटी का भुगतान करने पर तीन माह में निर्णय लेने का निर्देश दिया है। साथ ही कहा कि बिना देरी किए अन्य कार्यवाही पूरी की जाए।याची अजीत कुमार श्रीवास्तव की ओर से तर्क दिया गया कि याची की पत्नी शिवमूर्ति बालिका इंटर कॉलेज केराकत जौनपुर में बायोलॉजी की सहायक अध्यापिका थी। सेवाकाल में ही उनकी मृत्यु हो गई। उनके सेवानिवृत्ति परिलाभों का भुगतान किया गया, लेकिन ग्रेच्युटी का भुगतान नहीं किया गया। कहा गया कि याची की पत्नी ने सेवानिवृत्ति विकल्प नहीं दिया था।

संगम तट पर इवि के छात्रों ने उकेरा यूपी का भगवा नक्शा, बोले- यह जन भावना

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। यूपी विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी प्रचंड बहुमत के साथ दोबारा सरकार बना रही है। पिछले कई चुनावों से यूपी की सत्ता में किसी दल का दोबारा रिपीट नहीं कर पाने का मिथक टूट चुका है। बीजेपी समर्थक उत्साह से लबरेज हैं और वे इसे मोदी-योगी का मैजिक कहते हुए जश्न मना रहे हैं। राजनीतिक पंडित भी कहते हैं कि यह पीएम मोदी और सीएम योगी का ही जादू है जिसने यूपी में सभी विरोधी दलों को चारो खाने चित्त कर दिया है। भगवाधारी दल की इस भारी जीत के बीच मनाए जा रहे जश्न के माहौल के बीच इलाहाबाद सेंट्रल यूनिवर्सिटी में दृश्य कला विभाग के भी छात्रों ने अनोखे ढंग से अपनी भावनाएं बयां की हैं। विश्वविद्यालय में दृश्य कला विभाग के अजय गुप्ता साथी छात्र-छात्राओं शालिनी कुशवाहा और आशीष निषाद आदि के साथ शुक्रवार सुबह जा पहुंचे संगम तट। वहां उन्होंने करीब दो घंटे से ज्यादा की मेहनत से रेत पर उकेरा उत्तर प्रदेश का नक्शा, और उसके बीच में लिखा जबरदस्त चर्चित स्लोगन- मोदी है तो मुमकिन है...। खास बात यह कि उन्होंने यूपी के नक्शे को भगवा रंग दिया है, और बगल में लगाया है भगवा झंडा।

बीजेपी के जीत के जश्न में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्रों ने संगम में बनाया यूपी का नक्शा

यूपी के नक्शे पर अंग्रेजी के अक्षरों में बीजेपी भी लिखा है जिस पर तीन कमल भी खिलाया है, कमल यानी भाजपा।अजय कहते हैं कि यूपी में बीजेपी की जीत से साफ है कि जनता ने सुरक्षा, सुशासन, विकास को तरजीह दी है, जातिवादी राजनीति को नकार दिया है। भाजपा की जीत जनता की जीत है इसलिए हमने जनता की भावना को संगम तट पर उकेरा है। उम्मीद है कि दोबारा सत्ता में आए योगी जनता के लिए कल्याणकारी साबित होंगे।

बीच चौराहे पर छात्र को पीटा , वीडियो वायरल

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। कर्नलगंज में भाजपा का झंडा लेकर जा रहे युवक पर हमला करने का मामला सामने आया है। छोटा बघाड़ा में हुई इस घटना में आधा दर्जन दबंगों ने उसे रोक लिया और फिर घेरकर उस पर लात-घूंसे बरसाए। घटना का वीडियो बनाने पर 10वीं के छात्र आशीष राजपूत को भी पीटा और मोबाइल भी छीन लिया। उसने सात-आठ अज्ञात हमलावरों के खिलाफ मारपीट, लूट की धारओं में एफआईआर दर्ज कराई है। घटना नौ मार्च की है। राज 10 बजे के करीब बघाड़ा में पूर्वांचल चौराहे के पास दो युवक भाजपा का झंडा लेकर जा रहे थे। अभी वह एनी बेसेंट चौराहे के पास पहुंचे थे कि तभी वहां पहले से मौजूद आधा दर्जन युवकों ने हाथ में झंडा देखते ही गालियां देने लगे। एक युवक ने विरोध किया तो उसे रोक लिया और घेरकर हमला बोल दिया। उसे लात-घूंसों से भरे चौराहे जमकर पीटा।

हमलावरों की तलाश जारी

इसी दौरान बघाड़ा में किराये के कमरे में रहने वाला आशीष राजपूत पहुंच गया जो खाना खाने के बाद टहलने के लिए निकला था। आशीष जीआईसी में 10वीं का छात्र है और अपने भाई जीतेंद्र के साथ रहता है। आरोप है कि झंडा लेकर जा रहे युवकों को पीट रहे हमलावरों ने वीडियो बनाने का आरोप लगाते हुए मोबाइल छीन लिया और फिर उसे भी पीट दिया। इसके बाद धमकाते हुए भाग निकले। जिसके बाद आशीष ने थाने पहुंचकर शिकायत की जबकि पिटने वाले अन्य दोनों युवक दहशत में भाग निकले। आशीष की तहरीर पर पुलिस ने सात-आठ अज्ञात हमलावरों पर रिपोर्ट दर्ज कर ली। शुक्रवार को छात्रनेता नीरज प्रताप सिंह समेत अन्य भुक्तभोगी को लेकर कार्रवाई की गुहार लगाने थाने पहुंचे तब एफआईआर की कॉपी दी गई। कर्नलगंज इंस्पेक्टर विश्वजीत सिंह ने बताया कि हमलावरों की तलाश की जा रही है। घटना में पीटे गए अन्य दोनों युवक थाने नहीं आए।

सोशल मीडिया पर वीडियो भी हुआ वायरल

जिस समय झंडा लेकर जा रहे युवक को पीटा जा रहा था, उसी समय घटनास्थल के पास ही मौजूद किसी व्यक्ति ने इसका वीडियो बना लिया। जो बाद में सोशल मीडिया पर वायरल भी हो गया। वीडियो में आधा दर्जन हमलावर एक युवक को पीटते दिख रहे हैं। यही नहीं वह झंडा छीनते भी दिखाई पड़ रहे हैं।

फ्लैट पर कब्जा नहीं देने पर बिल्डर्स से वसूली का आदेश

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने डीएम गाजियाबाद को अक्वापोलीस सोशल वेलफेयर सोसायटी के 14 फ्लैट खरीदारों के 22 से 81 करोड़ रुपये की वसूली के हर संभव कदम उठाने का निर्देश दिया है। कहा कि कोई कानूनी अड़चन न हो तो दो माह में बिल्डर्स से खरीदारों की जमा राशि की वसूली कर उन्हें वापस कराई जाय। यह आदेश न्यायमूर्ति प्रीतिंकर दिवाकर व न्यायमूर्ति आशुतोष श्रीवास्तव की खंडपीठ ने सोसायटी व 14 अन्य की याचिका को निस्तारित करते हुए दिया है।याचियों की ओर से तर्क दिया गया कि अंसल बिल्डर्स ने फ्लैट बुक कराया। इसके लिए करोड़ों की कीमत जमा करायी गईए लेकिन अवधि बीतने के बाद भी फ्लैट पर कब्जा नहीं दिया गया। याचियों ने रेरा अथारिटी से गुहार लगाई। रेरा अथारिटी ने खरीदारों को उनका पैसा ब्याज सहित वापस करने का निर्देश दिया है। मामले में डीएम ने नोटिस जारी की है लेकिन उस पर अमल नहीं किया जा रहा है। इस पर यह याचिका दायर कर डीएम को समादेश जारी करने की मांग की गई थी। 14 फ्लैट खरीदार ने 22 करोड़ से लेकर 81 करोड़ रुपये तक का निवेश किया है। इसकी वसूली अटकी हुई है। उनके हितों का नुकसान हो रहा है।

सपा ने भाजपा की दो प्रतिष्ठामूलक सीटें छीनी, महारथियों का जनाधार भी घटा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। भारतीय जनता पार्टी की सरकार प्रदेश में भले बन गई हो, लेकिन प्रतापगढ़ की भाजपा की दो प्रतिष्ठामूलक सीटें गवां देने पर उसे मलाल भी है। पट्टी विधान सभा सीट से प्रदेश सरकार के मंत्री रहे राजेन्द्र प्रताप सिंह मोती सिंह भाजपा के प्रत्याशी थे। उन्हें समाजवादी पार्टी के राम सिंह ने 22030 मतों से शिकस्त दी है। इसी प्रकार रानीगंज विधायक रहे अभय कुमार उर्फ धीरज ओझा को समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी डा0 आरके वर्मा ने 2369 मतों से मात दे दी है।

पट्टी में भाजपा प्रत्याशी मोती सिंह को 85691 मत मिले थे, जबकि सपा प्रत्याशी राम सिंह पटेल को 107721 मत मिले थे। इसी प्रकार रानीगंज में भाजपा प्रत्याशी धीरज ओझा को 72571 मत मिले,

जीते राम सिंह पटेल।

जीते सपा प्रत्याशी डा0 आरके वर्मा।

जबकि सपा प्रत्याशी डा0 आरके वर्मा को 74940 मत मिले थे। इस प्रकार भाजपा की दोनों सीटें सपा ने कब्जा कर लिया है, जिससे समाजवादी पार्टी में उत्साह है और इस क्षेत्र के भाजपाई मायूस हैं। इसके अलावा कुण्डा और रामपुर खास में धुरंधर राजनैतिक महारथियों ने चुनाव भले जीत लिया हो लेकिन इनका जनाधार घटा है जिस पर समय रहते अगर काम न किया गया तो वह दिन दूर नहीं, जब आमने-सामने की कड़ी टक्कर में कभी भी खतरा हो सकता है। इस बार के चुनाव में कुण्डा में अपना दमखम दिखाकर लाखों से जीत हासिल करने वाले मात्र 30315 मतों से जीते हैं। कुण्डा में राजा भइया को 99612 मत मिले हैं जबकि उनके निकटतम प्रतिद्वन्दी समाजवादी पार्टी के गुलशन यादव को 69297 मत मिले हैं। रामपुर खास में भी कांग्रेस की जीत का अंसर घटा है। यहां से कांग्रेस प्रत्याशी आराधना मिश्र उर्फ मोना मात्र 14741 मतों से भाजपा प्रत्याशी नागेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ छोटे सरकार को हरा पाई हैं। आराधना मिश्र मोना को 84334 मत मिले हैं जबकि भाजपा प्रत्याशी नागेन्द्र प्रताप सिंह को 69593 मत मिले हैं। इन क्षेत्रों में चर्चा है कि कुण्डा में सपा और भाजपा भले ही जीत न पाई हो लेकिन दोनों ने अपने-अपने क्षेत्रों में अपना दम खम दिखाया है। बता दें कि भाजपा प्रत्याशी राजेन्द्र मौर्य तथा विश्वनाथगंज सीट से भाजपा अपना दल एस गठबंधन प्रत्याशी जीतलाल ने जीतकर दो सीट भाजपा की झोली में डाल दी है। प्रतापगढ़ की सात विधान सभा क्षेत्रों में भाजपा, जनसत्ता दल व सपा को दो-दो सीटें तथा कांग्रेस को एक सीटें मिली हैं।

तिहाई और चौथाई से कम वोट पाकर बन गए विधायक

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। इस बार के विधान सभा चुनाव में जीतने वाले प्रत्याशियों को कुल मिले मतों का 25 से 30 प्रतिशत मत पाने वाले प्रत्याशी भी विधायक बन गये हैं। बताया जाता है कि राजा भैया को 27.26 प्रतिशत और आराधना मिश्र मोना को 26.12 प्रतिशत वोट मिला। राजेंद्र मौर्य को 25.07 प्रतिशत तो आर के वर्मा को 22.35 प्रतिशत वोट मिला।

58 प्रत्याशियों को मिला नोटा से भी कम वोट

प्रतापगढ़। जिले में कुल 90 प्रत्याशी थे जिनमें से आधे से ज्यादा तो ऐसे भी प्रत्याशी थे, जो नोटा से भी कम वोट पाए हैं। बताया जाता है कि 58 प्रत्याशियों को नोटा में मिले मतों से भी कम मत मिले हैं। इसकी भी चर्चा आज राजनैतिक गलियारों में होती रही कि आखिर इनका चुनाव लड़ने का मंतव्य क्या होता है?

पैसा मांगने पर ठेकेदार ने ईंट से मारकर युवक को किया जख्मी

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। एक व्यक्ति द्वारा ठेकेदार को घर बनवाने के लिए 10000 रुपये बयाना देने के बाद ठेकेदार मकान निर्माण शुरू नहीं किया तो युवक के पैसा मांगने पर ठेकेदार उसे ईंट से मारकर जख्मी कर दिया। पीड़ित ने इस संबंध में पट्टी कोतवाली में तहरीर देकर आरोपी ठेकेदार के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। रानीगंज थाना क्षेत्र के जामताली गांव के रहने वाले रत्नेश सोनी पुत्र लक्ष्मण प्रसाद सोनी शुक्रवार की दोपहर पट्टी कोतवाली पहुंचा उसने आरोप लगाया कि पट्टी कोतवाली क्षेत्र के कठार गांव का रहने वाला एक ठेकेदार मकान बनाने का ठेका लेता है। अपना मकान बनाने के लिए उसने ठेकेदार को 10000 रुपये बयाना के रूप में दिया था लेकिन उसने मकान निर्माण करना शुरू नहीं किया। शुक्रवार को अपना पैसा मांगने के लिए पीड़ित जब ठेकेदार के पास पहुंचा तो और अपना पैसा मांगा तो इस बात पर ठेकेदार बिफर पड़ा और उसे ईट से मारकर जख्मी कर दिया। जान से मारने की धमकी दी पीड़ित का कहना है कि पैसे के लिए वह उसे 6 महीने से परेशान कर रहा है, लेकिन पैसा नहीं दे रहा है।

आरोपी के खिलाफ हत्या के प्रयास का केस

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने रंजिशन मारपीट मे आरोपी के खिलाफ हत्या के प्रयास का केस दर्ज किया है। कोतवाली के खजुरी निवासी सच्चिदानंद मिश्र की पत्नी मनोरमा ने दी गई तहरीर मे कहा है कि दस मार्च को सुबह गांव के आरोपी कुलदीप मिश्र पुत्र ददन ने पुरानी रंजिश को लेकर उसके बेटे आदित्य को लाठी डंडे से मारापीटा। चुटहिल के विरोध करने पर आरोपी ने गाली देते हुए जानलेवा फायरिंग की। हमले मे आदित्य को चोटें आयी है। आरोपी ने पीड़िता व उसके परिवार के सदस्यों को जानलेवा धमकी भी दी है। तहरीर के आधार पर पुलिस ने गुरूवार की रात आरोपी कुलदीप मिश्र उर्फ आलोक के खिलाफ हत्या के प्रयास व धमकी का केस दर्ज किया है।

पढाई के साथ-साथ खेल भी जरूरी: डा0 वीरेन्द्र मिश्र

बहुगुणा पीजी कालेज में वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता संम्पन्न

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। हेमवतीनंदन बहुगुणा पीजी कालेज लालगंज की वार्षिक खेल कूद प्रतियोगिता बड़े गर्म जोशी के साथ सम्पन्न हुई। यह प्रतियोगिता दो दिवसीय होने के कारण खिलाड़ियों ने पूर्ण मनोयोग से प्रतिभाग किया।

उद्घाटन अवसर पर पधारे मुख्य अतिथि डॉ वीरेंद्र मिश्र प्रबंध समिति ने अपने उद्बोधन में कहा कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है, इसलिये पढाई के साथ-साथ खेल भी जरूरी है। समारोह की अध्यक्षता कर रहे कालेज के विकास पुरुष सुयोग्य प्राचार्य प्रो0 डॉ0 शैलेन्द्र मिश्र ने कहा कि खिलाड़ियों को खेल पूर्ण मनोयोग से खेलना चाहिए, जिससे आपसी भाई चारा सौहार्दपूर्ण बना रहे। एक अच्छे खिलाड़ी की पहचान उसके व्यक्तित्व से होती है। कार्यक्रम का संचालन डॉ श्याम नारायण तिवारी ने किया। क्रीड़ा संयोजक डॉ फणीन्द्र नारायण मिश्र ने सभी अतिथियों आभार प्रकट किया। सरस्वती बंदना महिला खिलाड़ियों ने की। इस अवसर पर क्रीड़ा समिति में डॉ सीमा त्रिपाठी, डॉ श्याम नारायण, डॉ शिव कुमार, डॉ जितेंद्र, डॉ गंगाधर, डॉ शैलेन्द्र सरोज सहित महाविद्यालय के समस्त स्टॉप मौजूद रहे। आपको बताते चले कि यह प्रतियोगिता पुरूष वर्ग एवं महिला वर्ग दोनों की थी।

खेलकूद प्रतियोगिता का फीता काटकर उद्घाटन करते वीरेन्द्र मिश्र व शैलेन्द्र मिश्र।

स्थगन आदेश के बाद भी दबंग कर रहे निर्माण

पट्टी, प्रतापगढ़। जमीनी विवाद में न्यायालय में चल रहे वाद में स्थगन आदेश के बावजूद भी आरोपीगढ़ निर्माण कर रहे हैं पीड़ित पक्ष ने इस संबंध में जिलाधिकारी को प्रार्थना पत्र देकर आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। क्षेत्र के भरोखन गांव के रहने वाले बृजलाल सूत्र नोहर ने जिलाधिकारी को प्रार्थना पत्र देकर बताया कि उसके घर के समीप जमीन जिसका विवाद उसके विपक्षी वाद चल रहा है और मामला न्यायालय में विचाराधीन है। न्यायालय यथास्थिति बनाए रखने का आदेश दिया है। उसके बावजूद भी विपक्षीगढ़ मामले में हस्तक्षेप करते हुए उक्त जमीन पर मकान निर्माण कर रहे हैं। पीड़ित ने जिलाधिकारी पट्टी को प्रार्थना पत्र देकर इंसाफ की मांग की है।

नगर पालिका बोर्ड की बैठक में आगामी वर्ष के लिये 69.95 करोड़ के व्यय की स्वीकृति

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर पालिका परिषद बेल्हा की बैठक पालिकाध्यक्ष प्रेमलता सिंह की अध्यक्षता में पालिका सदन ने सर्व सम्मति से 69 करोड़ 95 लाख 69090 रुपये की अनुमानित व्यय की स्वीकृति प्रदान की। बोर्ड की बैठक में नवनिर्वाचित विधायक राजेन्द्र मौर्य को सदन द्वारा शुभकामनाएं दी गई और यह विश्वास व्यक्त किया गया कि वह इस सदन के सदस्य रह चुके हैं। ऐसी दशा में विशेष सहयोग नगर पालिका को मिलता रहेगा।

बैठक में दहिलामऊ उत्तरी के सभासद श्रीनाथ के निधन पर दो मिनट का शोक जताया गया। इसके पूर्व सदस्यों ने वार्षिक आय व्यय माह अप्रैल 2021 से फरवरी 2022 को अवलोकन कर उसका भी अनुमोदन किया। इसके उपरान्त वर्ष 2022-23 का मूल अर्थ संकल्प जिसकी प्रति सदस्यगणों को उपलब्ध करा दी गई थी, पर व्यापक विचार विमर्श करने के बाद सम्पूर्ण वर्ष के लिये लगभग 70 करोड़ की अनुमानित व्यय की स्वीकृति प्रदान की गई। नगर पालिका की बैठक की अध्यक्षता नगर पालिकाध्यक्ष प्रेमलता सिंह तथा संचालन अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह ने किया। अध्यक्ष व ईओ ने बैठक को सौहार्दपूर्ण सम्पन्न कराने के लिये सदस्यों के प्रति आभार जताया। अध्यक्षा ने सभी सदस्यों व कर्मचारियों को धन्यवाद दिया। बैठक में मुख्य रुप से इमरान, आरती, मालती सिंह, सिद्धार्थ सिंह, सुशील कुमार श्रीवास्तव, प्रदीप जायसवाल, उदय शंकर मिश्र, आशीष जायसवाल, अनिल कुमार सिंह, आशुतोष सिंह, धर्मशील शुक्ला, प्रेमा देवी, ज्ञानेश मिश्र, वंदना शर्मा, छाया उमर वैश्य, शहनाज, महरुन निशा, मलय कुमार सिंह, गायत्री शुक्ला, सुमन शर्मा आदि उपस्थित रहे।

सदर विधायक से नगर पालिका को सहयोग की है आशा

नगर पालिका बोर्ड की बैठक में बोलतीं पालिकाध्यक्षा प्रेमलता सिंह

दो दिवसीय हजरत शहीद मर्द बाबा का सालाना उर्स शुरू

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। प्रयागराज-लखनऊ नेशनल हाइवे के नवाबगज थाना के मुरस्सापुर नवाबगंज में शुक्रवार को दो दिवसीय हजरत शहीद मर्द बाबा का सालाना उर्स का आयोजन कमेटी द्वारा किया गया जिसमे अकीकत मंद लोगो ने बड़े ही सादगी के साथ बाबा की मजार पर जाकर मन्नतें मांगी, जिसमें हिन्दू भाइयों ने भी बढ़ चढ़कर भाग लिया और बाबा की मजार पर फूलों की चादर व प्रसाद चढ़ाकर अपने परिवार के लिए दुआ मांगी।

मुस्लिम भाइयों ने जुमे की नमाज अदा करने के बाद बाबा के मजार पर फूलों की माला व चादर चढ़ाकर देश के लिए अमन चैन की दुआ मांगी। बाबा की मजार के आस पास उर्स कमेटी द्वारा मेले का आयोजन किया गया जिसमें सभी प्रकार की खाने पीने व खिलौने की दुकानें लगी हुई थी। रात में नूरानी मियां किछौछे शरीफ का तकरीर का प्रोग्राम का आयोजन हुआ। शनिवार को उर्स के समापन पर ताहिर चिश्ती बदायूं व अरसद चिश्ती बरेली के बीच कव्वाली का प्रोग्राम उर्स कमेटी द्वारा किया गया हैं। प्रोग्राम में उर्स कमेटी के आरिफ खान कोटेदार, जलील खान, पप्पू असगर, साउथ खान, हाजी इमरान,सलमान अंसारी, साबित अंसारी, सरफराज मंसूरी, आरिफ खान, आदिल सिद्दीकी, मंसूर अहमद पूर्व प्रधान आदि लोग शामिल रहे।

जुमे की नमाज अदा कर मांगी गई अमन-चैन की दुआ

शहीद मर्द बाबा की सालाना उर्स में जुटे लोग।

चार आरोपियों के खिलाफ मारपीट व धमकी का केस

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने रंजिशन मारपीट को लेकर चार आरोपियो के खिलाफ शुक्रवार को केस दर्ज किया है। कोतवाली के बिहारी का पुरवा अगई निवासी रामदीन पटेल की पत्नी आरती पटेल ने पुलिस को दी गई तहरीर मे कहा है कि बीती गुरूवार की शाम गांव के विपक्षियों ने पीड़िता को गाली देते हुए मारापीटा। विपक्षी अमित पुत्र हरिश्चंद्र व उमेश कुमार पुत्र फूलचंद्र, आशीष कुमार पुत्र पुत्तीलाल एवं संजय यादव पुत्र विन्देश्वरी ने पीड़िता की साइकिल बाहर फेंकते हुए उस पर हमलावर हो गये। विरोध करने पर आरोपियो ने पीड़िता को जानलेवा धमकी दी।

नगर में शांति कायम के लिए आइटीबीपी जवानों के साथ पुलिस का फ्लैग मार्च

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। होली के त्यौहार तथा मतगणना के बाद किसी भी उपद्रव तथा किसी भी पार्टी की तरफ से बवाल ना हो इसके लिए प्रशासन ने कमर कस ली है शुक्रवार की दोपहर पट्टी कोतवाली पुलिस के साथ आईटीबीपी के जवानों ने पट्टी नगर के विभिन्न स्थानों पर फ्लैग मार्च करके शांति कायम करने का संदेश दिया। जिला प्रशासन ने होली के मद्देनजर धारा 144 पहले से ही लागू कर दिया है वही मतदान बीत जाने के बाद किसी प्रकार का उपद्रव ना हो और किसी भी पार्टी के उत्साही कार्यकर्ता किसी के साथ बवाल ना करें इसके लिए प्रशासन पूरी तरह मुस्तैद है गुरुवार को जहां आईटीबीपी के जवान मुस्तैद होकर पट्टी ढकवा मोड़ उड़ैयाडीह मोड़, पट्टी चैक, रायपुर रोड सहित विभिन्न स्थानों पर फ्लैग मार्च किया तो उनके साथ पट्टी कोतवाली पुलिस के एसआई सचिन सिंह, सुजीत सिंह, मनोज कनौजिया तथा कांस्टेबल अमित सिंह सहित कई पुलिसकर्मी लोगों से शांति बनाए रखने की अपील करते हुए फ्लैग मार्च किया।

नगर क्षेत्र में फ्लैग मार्च करते आइटीबीपी के जवान व पुलिस बल

बांके बिहारी की आराधना मे निहित है जीवन का परमार्थ : अनूपदेव

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। महेशगंज बाजार के समीप हो रही श्रीमदभागवत कथा ज्ञानयज्ञ मे गुरूवार को श्रद्धालुओं की उत्साहजनक भीड़ दिखी। नृसिंह पीठाधीश्वर धाम से पधारे कथाव्यास आचार्य अनूपदेव जी महराज ने कथा को आगे बढ़ाते हुए कहा कि भगवान कृष्ण सत्य के स्वरूप हैं। वह ज्ञान के स्वरूप हैं।

उन्होनें कहा कि भक्त को सुख की प्राप्ति के लिए इहलौकिक तथा परलौकिक कल्याण के लिए सदैव भगवान के भजन को आत्मसात करना चाहिये। उन्होनें कहा कि श्रद्धालु किसी भी कामना से भगवान का पूजन करते है तो वह स्वतः पुण्यात्मा होने का भाग्य फल अर्जित कर लिया करते है। उन्होनें कहा कि ज्ञानी को भगवत्साक्षात्कार हो जाने पर वह सदैव भगवान के प्रति नित्य निष्काम भाव से समर्पित हो जाया करता है। आचार्य अनूपदेव जी महराज ने कहा कि भगवान का कृपा पात्र अवश्यसम्भावी होने के लिए धर्म के सर्वोत्कृष्ट आचरण का निर्वहन करना चाहिये। उन्होनें कहा कि भगवत ज्ञान यही है कि परमात्मा के रहते हुए दूसरा हमारी धर्म पथ की रक्षा मे कभी हानि नहीं कर सकता है। कथा श्रवण के लिए पूर्व मंत्री एवं जनसत्ता दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष रघुराज प्रताप सिंह राजा भइया भी पहुंचे। कथास्थली पर राजा भइया के पहुंचने पर श्रद्धालुओं को भी मगन देखा गया। वहीं राजा भइया को आचार्य अनूपदेव जी महराज तथा काशी धाम के राजगुरू आचार्य विष्णुपति त्रिपाठी ने लोक मंगल का मांगलिक आशीष स्वरूप उन्हें धार्मिक ग्रन्थ व आध्यात्मिक पट्टिका सौंपा। वहीं श्रद्धालुओं के बीच अपने संबोधन मे राजा भइया ने कहा कि जिस पावन धरा पर भगवान की कथा हुआ करती है वहां सदैव लोक कल्याण फलीभूत हुआ करता है। राजा भइया कथा के दौरान मंगल आरती मे भी शामिल हुये। सह संयोजक आलोक त्रिपाठी गुडडू व अधिवक्ता अरविंद त्रिपाठी पंकज एवं आनन्द त्रिपाठी ने आयोजन समिति की ओर से राजा भइया का कथास्थली पर सारस्वत सम्मान भी किया। वहीं विश्राम बेला मे संयोजक पं. जनार्दन प्रसाद त्रिपाठी तथा सह संयोजिका शकुन्तला त्रिपाठी ने कथा व्यास आचार्य अनूपदेव तथा राजगुरू आचार्य विष्णुपति त्रिपाठी व कुलगुरू पं. कमलाकर राम त्रिपाठी का मंगल टीका कर श्रीअभिषेक किया। कथा श्रवण के दौरान बाबागंज विधायक विनोद सरोज, रूरल बार के राष्ट्रीय अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल, हितेश सिंह पंकज, कुलदीप पटेल भी मौजूद रहे। कथा समापन पर पादुका पूजन कार्यक्रम के प्रबन्धन में डा. सुरेश पाण्डेय, डा. राकेश पाण्डेय, डा. संध्या पाण्डेय, धीरज शुक्ल, आदित्य त्रिपाठी, महेश शुक्ल, प्रवीण पाण्डेय, अमन त्रिपाठी, बबन पाण्डेय, पीयूष त्रिपाठी, आयुष त्रिपाठी, ऋषभ शुक्ला, ऋतिक शुक्ला, तपन पाण्डेय, श्रुति त्रिपाठी, पूजा त्रिपाठी, विद्योतमा त्रिपाठी, सुषमा शुक्ला, किरन शुक्ला, गीता त्रिपाठी, अनीता शुक्ला, आर्या, समृद्धि का योगदान भी सराहनीय देखा गया।

भागवत कथा मे पहुंचे पूर्व मंत्री राजा भइया का हुआ मांगलिक सम्मान

शमीम को मिला प्रतापगढ़ अधीक्षक का चार्ज

प्रतापगढ़। प्रतापगढ़ रेलवे स्टेशन के अधीक्षक एसके यादव को माँ बाराही देवी धाम स्टेशन का नया अधीक्षक बनाया गया। शुक्रवार को उनको रिलीव कर दिया गया। उनके स्थान पर एसएम मोहम्मद शमीम को चार्ज मिला है। बता दें कि एसके यादव का महीने पहले ट्रांसफर हुआ था। उन्होंने खुद ही ट्रांसफर मांगा था। हालांकि चिट्ठी निकलने के बाद भी एसके यादव काम करते रहे। इससे लगा कि अब नहीं जायेंगे। सूत्रों के अनुसार इधर एक सप्ताह से अधिकारी उनको रिलीव करने का दबाव बना रहे थे। शुक्रवार को उनको रिलीव कर दिया। बता दें कि ऐसी चर्चा है कि सीनियर डिप्टी एसएस एसपी पांडेय को एसएस बनना है। फिलहाल अभी वे शिक पर हैं। उनके ड्यूटी जॉइन करने तक शमीम एसएस रहेंगे।

मोना की हैट्रिक जीत लोकतंत्र के इतिहास में अप्रतिम जनादेश: प्रमोद तिवारी

कार्यकताओं व समर्थकों से मिलकर प्रमोद व मोना ने जताया आभार

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। रामपुर खास की नव निर्वाचित कांग्रेस विधायक आराधना मिश्रा मोना एवं सीडब्ल्यूसी मेंबर प्रमोद तिवारी का चुनाव परिणाम के दूसरे दिन शुक्रवार को भी जीत की खुशी मे जगह जगह जोरदार स्वागत दिखा।

स्थानीय कैम्प कार्यालय पर दोपहर जैसे ही प्रमोद तिवारी के साथ तीसरी बार विधायक चुनीं गयी आराधना मिश्रा मोना यहां पहुंची भारी तादात मे जुटे कार्यकताओं व समर्थकों ने उन्हें फूल व मालाओं से लाद दिया। कैम्प कार्यालय पर कार्यकताओं व समर्थकों को संबोधित करते हुए प्रमोद तिवारी तथा आराधना मिश्रा मोना ने रामपुर खास के मतदाताओं व कार्यकताओं को विधानसभा के चुनाव मे रामपुर खास का नाम स्वर्णिम अक्षरों में अंकित कराने के लिए आभार जताया। प्रमोद तिवारी ने कहा कि आराधना मिश्रा मोना की एक ही निर्वाचन क्षेत्र से, एक ही चुनाव चिन्ह से लगातार तीसरी बार जीत की हैट्रिक लगाकर लोकतंत्र के इतिहास मे अप्रतिम जनादेश का भी उदाहरण प्रस्तुत किया है। वहीं प्रमोद तिवारी ने कहा कि रामपुर खास का यह परिणाम इसलिए भी अधिक महत्वपूर्ण हो गया है कि क्षेत्र की महान जनता ने इक्यावन प्रतिशत मत आराधना मिश्रा मोना के पक्ष मे दिया है। उन्होनें कहा कि यह बहुमत क्षेत्र मे विकास तथा शांति व अमन चैन मे विश्वास रखते हुए जनता ने विरोधियों को करारा जबाब भी दिया है।

फोटो 5-लालगंज कैम्प कार्यालय पर कार्यकताओं के बीच विधायक मोना व प्रमोद तिवारी

खबर संक्षेप

मुंबई में फांसी पर झूला कौशाम्बी का युवक कोहराम

कौशाम्बी। दो जून रोटी का जुगाड़ करने युवक मुंबई गया था लेकिन रोटी का जुगाड़ तो नहीं कर सका उसका शव मुंबई से वापस गांव आ रहा है पिपरी कोतवाली इलाके के नगर पंचायत चायल के एक युवक ने मुंबई में फांसी लगा लिया। मुंबई में रह कर युवक प्रेस का कार्य करता था और अपने परिवार का भरण पोषण करता था। वह एक गार्डन में घूमने गया लेकिन लौट कर नहीं आया। शुक्रवार को शव गांव पहुंचने के लिए गांव के ही लोग वापस ला रहे है। परिजनों में कोहराम मच गया।परिवारीजनों ने कहा कि शव का अंतिम संस्कार गांव में ही होगा। पिपरी कोतवाली के नगर पंचायत चायल निवासी संदीप पुत्र रोशन लाल किसान का लड़का है। उनका बेटा संदीप कलंबोली में रहकर कपड़ा प्रेस का काम करता है। परिजनों के मुताबिक नजदीक के गार्डन में रस्सी के सहारे फांसी के फंदे पर लटक कर उसने जान दे दिया। लेकिन मौत का कारण स्पष्ट नही हो सका, साथियों को उसका शव फंदे पर लटकता मिला है मुंबई पुलिस ने गांव में रह रहे परिजनों को घटना की जानकारी दी तो परिजनों का रोना बिलखना मच गया। मुंबई पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराकर शव परिजनों को सौंप दिया। शनिवार को शव लेकर आ जायेंगे अंतिम संस्कार गांव से ही करेंगे।

उपद्रव करने वाले 400 सपा कार्यकर्ताओं पर दर्ज हुआ मुकदमा

पुलिस पार्टी पर हमला करने वाले समाजवादी पार्टी के नेताओं की जल्द हो सकती है गिरफ्तारी, विधान सभा मतगणना के दौरान प्रशासन पर पक्षपात का आरोप लगाकर सपाइयों ने जमकर काटा था बवाल

अखंड भारत संदेश

मतगणना के दौरान उपद्रव करते सपा नेताओं का मोर्चा संभालती पुलिस फोर्स

अझुवा कौशांबी। विधानसभा चुनाव में मतगणना के दौरान सिराथू विधानसभा प्रत्याशी डॉ पल्लवी पटेल और डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य के चुनाव नतीजे पर कुछ देर रोक लगाए जाने के बाद प्रशासन पर पक्षपात का आरोप लगाते हुए सपा कार्यकर्ता पदाधिकारी आग बबूला हो गए और उन्होंने मतगणना स्थल के बाहर जमकर हंगामा किया पुलिस टीम पर समाजवादी पार्टी के नेताओं ने ईट पत्थर बरसाए जिससे तमाम पुलिसकर्मी लहूलुहान हो गए मतगणना का फैसला होने के बाद पुलिस ने 400 समाजवादी पार्टी के नेताओं कार्यकताओं के विरुद्ध गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है। मतगणना के दौरान उपद्रव करने वाले 400 सपा कार्यकताओं पर मुकदमा दर्ज होने के बाद समाजवादी पार्टी के भीतर मंथन शुरू हो गया है मतगणना के दौरान सपा कार्यकताओं के आक्रोश से स्थिति बिगड़ती दिख रही थी पुलिस प्रशासन के भी हाथ-पांव फूल गए थे बता दें 10 मार्च मतगणना के दौरान कुछ कार्यकताओं ने पत्थर बरसा दिया था जिससे कई सिपाहियों को चोट लग गई थी उस पर संज्ञान लेते हुए मंझनपुर कोतवाल ने लगभग 400 सपा कार्यकताओं पर मुकदमा दर्ज कर लिया है और जांच में जुट गई है सीसीटीवी फुटेज कैमरे और वीडियोग्राफी के आधार पर उपद्रव करने वाले समाजवादी पार्टी के नेताओं कार्यकताओं को पुलिस चिन्हित करने में जुट गई है पुलिस टीम पर हमला करने वाले समाजवादी पार्टी के नेताओं की जल्द गिरफ्तारी हो सकती है।

कानूनगो ने माना लेखपाल कर रहा है गलत पैमाइश

अखंड भारत संदेश

जमीन को विवादित बनाकर धनादोहन में जुटे राजस्व लेखपाल और थाना पुलिस से बेखबर है आला अधिकारी

साफ-सुथरी बेदाग जमीन को विवादित बनाकर धना दोहन करने में जुटे राजस्व लेखपाल और पुलिस की भूमिका से कौशांबी की धरती होती है खून से लाल

कौशांबी। साफ-सुथरी बेदाग जमीन को विवादित बनाकर धना दोहन करने में राजस्व लेखपाल और पुलिस की भूमिका हमेशा सवालों के घेरे में रहती है जिसके चलते जिले में आए दिन खून खराबा होता है आए दिन कौशांबी की धरती खून से लाल हो जाती है लेकिन राजस्व लेखपाल के इन कारनामों पर आला अधिकारी गंभीर नहीं है एक तरफ राजस्व लेखपाल और पुलिस की गठजोड़ के चलते जहां कौशांबी की धरती आए दिन खून से लाल हो रही वहीं दूसरी तरफ योगीराज में भ्रष्ट राजस्व लेखपालों के कारनामों के चलते गरीब कमजोर मजलूम बेबस बेसहारा लोग न्याय के लिए अधिकारियों की चौखट पर गिड़गिड़ा रहे हैं लेकिन उसके बाद भी अधिकारी राजस्व लेखपाल को भगवान मान लेते है जिससे गरीब कमजोर न्याय को अधिकारियों की चौखट से लेकर अदालत तक भटक रहे हैं फिर भी अत्याचारी और दबंग उन पर भारी पड़ रहे हैं ताजा मामला चायल तहसील क्षेत्र के मोहम्मदपुर असवा गांव का है जहां न्याय के लिए राधा देवी पत्नी राघवेंद्र सिंह निवासी समदा जलालपुर साना थाना चरवा अधिकारियों के चौखट पर गुहार लगा रही हैं राधा देवी के प्रकरण पर राजस्व कानूनगो ने माना है कि वर्तमान लेखपाल गलत पैमाइश कर रहा है लेखपाल के गलत पैमाइश करने के बाद दबंगों ने जमीन पर कब्जा शुरू कर दिया है लेकिन उनका साहस नहीं है कि वह लेखपाल के गलत पैमाइश का विरोध कर सके अब सवाल उठता है कि गलत पैमाइश करने वाले लेखपाल को क्या उप जिला अधिकारी निर्लंबित कर मुकदमा दर्ज कराते हुए राधा देवी के साथ न्याय करेंगे या फिर योगीराज में अधिकारियों की मनमानी चलती रहेगी आम जनता इसका जवाब चाहती है।

गौरतलब है कि चायल तहसील क्षेत्र के मोहम्मदपुर असवा गांव के आराजी संख्या 549 के आधे भूमि के हिस्सेदार राधा देवी हैं यह जमीन सड़क किनारे स्थित है लेकिन पड़ोसी गांव के अत्याचारी गुंडों की इस बेशकीमती जमीन पर नियत खराब हो गई और सड़क किनारे कीमती जमीन पर दबंगों ने कब्जा करने के मंसूबे स्थानीय पुलिस और लेखपाल की सांठगांठ से बना लिए स्थानीय पुलिस और राजस्व लेखपाल ने अवैध कब्जे में लगे गुंडों का साथ देना शुरू कर दिया चचाओं पर जाए तो लाखों रुपए की रकम राजस्व लेखपाल और स्थानीय पुलिस ने कब्जा धारकों से वसूल लिया सरकारी अभिलेखों में जमीन सड़क किनारे दर्ज है जिला अधिकारी कार्यालय के राजस्व अभिलेखागार कार्यालय से मिले रिकार्ड के मुताबिक राधा देवी की जमीन सड़क किनारे हैं लेकिन इस जमीन को वर्तमान लेखपाल ने नाप जोक कर पीछे पहुंचा दिया है और अन लीगल तरीके से गुंडों को सड़क पर काबिज करा दिया है बीते 15 दिन से गुंडों का यह खेल बेखौफ तरीके से चल रहा है। राधा देवी की जमीन पर जबरिया कब्जा करने वाले इन गुंडों पर बीते सात दशक से तरह-तरह के अत्याचार का आरोप इलाके की जनता लगा रही है लेकिन फिर भी गुंडों की चरणों में राजस्व लेखपाल और स्थानीय पुलिस चंद रुपयों के लालच में गिर पड़ी है पुलिस और राजस्व लेखपाल ने खून खराबे की पृष्ठभूमि बनाने का भरसक प्रयास किया है आला अधिकारियों को मामले को गंभीरता से लेना होगा और खून खराबे की पृष्ठभूमि बनाकर धना दोहन में जुटे स्थानीय पुलिस और राजस्व लेखपाल के कारनामे को गंभीरता से लेते हुए लेखपाल और स्थानीय पुलिस पर मुकदमा दर्ज कराए जाने के साथ-साथ इन्हें निर्लंबित किए जाने की जरूरत है ताकि योगीराज में गरीब कमजोर मजलूम बेसहारा लोगों को न्याय मिल सके लेकिन क्या योगीराज में आला अधिकारी राजस्व लेखपाल और थाना पुलिस के बढ़ते अत्याचार पर गंभीरतापूर्वक विचार करते हुए गरीब कमजोर मजलूम को न्याय देने की पहल करेंगे जनता इस बात का उत्तर अधिकारियों से चाहती है।

सट्टे में हारने के बाद युवक ने की आत्महत्या

अखंड भारत संदेश

मरने से पहले युवक ने लिखा सुसाइड नोट पोस्टमार्टम से शव आते ही फिर बिलख पड़े परिजन, वर्षों से इलाके में होता है सट्टे का बेखौफ खेल बर्बाद हो चुके अब तक दर्जनों परिवार

युवक का शव घर पहुंचते ही रोते बिलखते परिजन

कौशाम्बी। चायल सर्किल क्षेत्र के मनौरी आदि बाजार में बेखौफ तरीके से वर्षों से सट्टे का खेल संचालित हो रहा है इस खेल में अब तक दर्जनों परिवार बर्बाद हो चुके हैं गुरुवार को पिपरी कोतवाली इलाके के मखऊपुर गांव में एक युवक ने जहर खाकर जान दे दिया। युवक ने सुसाइड करने से पहले एक नोट भी लिखा है जो पुलिस के हाँथ लगा है। पुलिस ने युवक के शव को लेकर कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है शुक्रवार को युवक का शव पोस्टमार्टम हाउस से जैसे घर पहुंचा है परिजन दहाड़ मार कर रोने लगे हैं।

जानकारी के मुताबिक मखऊपुर निवासी निखिल केसरवानी उम्र 28 वर्ष पुत्र राकेश केशरवानी परचून का कारोबारी था परिवार के लोगों की मानें तो निखिल ने विधानसभा चुनाव के चायल सीट पर हर जीत को लेकर इलाके के ही कुछ लोगों से मोटी रकम के लिए सट्टा लगा रखा था बृहस्पतिवार की देर शाम आए चुनाव परिणाम के बाद वह सट्टे में लगाई गई रकम को हार गया इसे लेकर सट्टा लगाने वाले युवक उसे पैसों के लिए परेशान करने लगे तो उसने एक सुसाइड नोट लिखकर जहर निगल लिया। हालत जब बिगड़ने लगी तो परिजनों को जानकारी हुई। गंभीर हालत में निखिल को इलाहाबाद के एक निजी अस्पताल भर्ती कराया गया। जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो घटना से परिजनों में कोह राम मच गया। सूचना पर पहुचीं पुलिस ने मृतक के मिले सुसाइड नोट को कब्जे में लेकर शव पोस्टमार्टम के लिए दिया शुक्रवार को पोस्टमार्टम हाउस से वापस घर पहुंच गया है जहां हिंदू रीति-रिवाज से उसका अंतिम संस्कार गंगा नदी के किनारे किया गया है इंस्पेक्टर पिपरी श्रवण कुमार का कहना है कि मामले में परिजन ने तहरीर दिया है। जांच कर कार्यवाही की जा रही है।

सटोरियों का नाम किया उजागर

कौशांबी। सट्टे के खेल में भारी रकम हार जाने के बाद मौत को गले लगाने वाले निखिल केसरवानी ने 2 सटोरियों का नाम उजागर किया है लेकिन खबर लिखे जाने तक सटोरिए पुलिस के गिरफ्त में नहीं पहुंच सके हैं

बेखौफ होता है सट्टे का खेल पुलिस मौन

कौशांबी। जिले के चायल सर्किल क्षेत्र में वर्षो से बेखौफ तरीके से सट्टे का खेल होता है इसमें कई सफेदपोश भी शामिल है सब कुछ इलाके की पुलिस जानती है लेकिन फिर भी सट्टा संचालकों पर पुलिस कार्रवाई नहीं कर रही है जिससे पुलिस की मंशा पर भी सवाल उठना लाजमी है युवक की मौत के पहले पुलिस ने सट्टे का खेल बंद करा दिया होता तो युवक को मौत नहीं चुनना पड़ता।

सीज गैस एजेंसी की जांच करने पहुंचे डीएसओ

4 दिन बीते किसी नतीजे पर नहीं पहुंचे जांच अधिकारी

अझुवा कौशाम्बी। गैस एजेंसी में ग्राहकों का जमकर उत्पीड़न होता है घटतौली से लेकर अधिक कीमत वसूलना गैस एजेंसी संचालकों की आदत में शुमार है शिकायत के बाद भी एजेंसी संचालकों पर ठोस कार्यवाही नहीं हो रही है बीते दिनों एक गैस एजेंसी की शिकायत ग्राहकों ने आला अधिकारियों से की थी जिस पर एजेंसी की जांच शुरू हो गई है लेकिन 4 दिन बाद भी किसी नतीजे पर जांच अधिकारी नहीं पहुंचे हैं। कड़ा धाम कोतवाली क्षेत्र के गैस एजेंसी में अनियमितता की शिकायत पर कौशांबी डीएसओ ने बुधवार को सील कर दिया था शुक्रवार को कौशांबी डीएसओ फिर गैस एजेंसी पहुंचे हैं और सीज गैस एजेंसी को खोल कर उन्होंने एजेंसी के अभिलेखों की जांच शुरू कर दी है गैस एजेंसी पर आरोप है कि ग्राहकों के साथ अभद्रता करता है अवैध वसूली और घटतौली सहित तमाम आरोप गैस एजेंसी संचालक पर है गैस एजेंसी पहुंच कर विभिन्न पहलुओं से जिला पूर्ति अधिकारी ने जांच की है ग्राहक की शिकायत पर गैस एजेंसी को सीज किए जाने के बाद उसकी जांच करने पहुंचे डीएसओ ने किसी प्रकार की भी जानकारी का खुलासा नहीं किया है।

लल्ली महाराज के विधायक बनने पर मनाया जश्न

भरवारी कौशांबी। मंझनपुर तहसील के यमुना नदी किनारे बसे महिला गांव निवासी अविनाश द्विवेदी उर्फ लल्ली महाराज के मऊ मानिकपुर से विधायक बनने पर कसिया पूर्व मूरतगंज में उनके समर्थकों ने लड्डू वितरित कर जश्न मनाया जश्न मना रहे लोगों ने कहा कि कौशांबी के लाल ने पड़ोसी जनपद में जीत दर्ज कर इतिहास कायम किया है जश्न का माहौल चुनावी नतीजे आने के बाद ही शुरू हो गए विधायक बने लल्ली महाराज के भतीजे अशोक द्विवेदी आलोक द्विवेदी अनूप द्विवेदी एवं कृष्ण चंद चौरसिया रमेश चंद केसरवानी प्रमोद मिश्रा राहुल पांडेय रवि भूषण पाठक अमन दिलीप राजकुमार श्यामल हमजा जीशान गुड्डू मनीष आदि लोगों ने मिलकर सभी लोगों को बधाई दिया एवं आतिशबाजी करके खुशी का इजहार किया।

करारी थाना क्षेत्र में दबंगों ने की पिता-पुत्र की पिटाई

कौशाम्बी। करारी कोतवाली के अडहरा गांव में वृहस्पतिवार को बाइक से जा रहे पिता-पुत्र की लाठी डंडे से पिटाई कर दिया। पिटाई से युवक वा उसके पिता और उसके दादा को गम्भीर चोटें आई है। पीड़ित युवक ने इलाकाई थाने में घटना की शिकायत किया है। पुलिस घटना की जांच कर रही है। जानकारी के मुताबिक करारी कोतवाली के अड़हरा गांव निवासी रामसिंह पुत्र राममूरत सरोज वृहस्पतिवार को वह अपने पिता व दादा को बाइक पर बैठाकर जा रहा था। जैसे ही गांव के ही नरेश पुत्र अज्ञात के घर के समीप पहुंचा। तभी पुरानी रंजिश को लेकर गांव के ही गुलाब पुत्र रामखेलावन, राहुल, कपिल पुत्रगण गुलाब लाठी डंडे लेकर आ गए आरोपी गाली गलौच करते हुए तीनो की पिटाई शुरू कर दिए। जब तक गांव के लोग पहुंचे आरोपियों ने पीटकर पिता-पुत्र व एक अन्य को घायल कर दिया। मारपीट से तीनों को गंभीर चोटें आई है। पीड़ित ने स्थानीय थाने में घटना की शिकायत किया है पुलिस मामले की जांच कर रही है।

चार ई-रिक्शा सहित दो बाइक ले उड़े चोर

पुलिस को सूचना देने के बाद भी नही आई पुलिस न ही लिखी जा रही चोरी की रिपोर्ट

ई रिक्शा शोरूम में चोरी को दिखाते एजेंसी संचालक

अखंड भारत संदेश

भरवारी कौशाम्बी। कोखराज थाना अंतर्गत नगर पालिका परिषद भरवारी के मेहता रोड के मेहता डिग्री कॉलेज के सामने ई रिक्शा के शोरूम से चार ई रिक्शा और दो बाइक चोरों ने पार कर दिया है ईरिक्शा शोरूम में थोक में ई-रिक्शा बेचा जाता है मामले की सूचना पुलिस को दी गई है लेकिन मौके पर पुलिस जांच करने नहीं पहुंची है खबर लिखे जाने तक मुकदमा नहीं दर्ज हो सका है। घटनाक्रम के मुताबिक कल रात्रि में चोरों ने सूना पड़ा शो रूम में ताला तोड़कर निशाना बनाते हुए उसमे रखा चार ई रिकसा व दो बाइक को चोर शो रूम से उठा ले गये इतना ही नही उसमे रखी बाइक की व ई रिक्शा की बैटरी व कुछ अन्य सामानों पर भी हाथ साफ कर दिया ' इसकी सूचना एजेंसी के मालिक अमित कुमार उर्फ गुड्डू ने पुलिस को दी उसके बाद भी पुलिस ने घटना स्थल पर जाना उचित नही समझ साथ ही रिपोर्ट लिखाने के लिए पुलिस चौकी व थाना की परिक्रमा लगाते एजेंसी मालिक थक गया परंतु खबर लिखे जाने तक चोरी की रिपोर्ट तक नही लिखी गयी जिससे एजेंसी मालिक व मोहल्ले वासियो में चोरी व रिपोर्ट न लिखने की वजह से आक्रोश ब्याप्त हैं।

चोरों ने दीवार फांद कर किया लाखों का गहना पार

चोरी के बाद घटनास्थल बिखरा सामान

अझुवा कौशाम्बी। कड़ाधाम कोतवाली क्षेत्र के कंथुवा गांव में मनबढ़ चोरों ने बीती रात जमकर उत्पात मचाया है।शातिर चोरों ने घर के ऊपरी हिस्से में बने कमरों का ताला तोड़कर आलमारी से सोने चांदी के जेवरात व नगदी पार कर दिया है। पीड़ित ने मामले की लिखित शिकायत कड़ा धाम कोतवाली पुलिस से करते हुए कार्रवाई किये जाने की मांग की है। जानकारी के मुताबिक कड़ाधाम कोतवाली क्षेत्र के कंथुवा गांव के मजरा मुराइन का पूरा निवासी अनीश अहमद पुत्र बकरीदी के घर मे शातिर चोरों ने बीती रात लाखों का सामान पार कर दिया।सुबह जब तकरीबन साढ़े 6 बजे अनीश की नींद खुली तो उसने देखा कि उसके छत के दोनों कमरों के दरवाजे खुले हुए है वहीं जब उसने कमरें के अंदर देखा तो उसके होश उड़ गए।कमरों में रखी आलमारियां खुली हुई थी और सारा सामान बिखरा हुआ था।भुक्तभोगी की माने तो शातिर चोरों ने आलमारी से लाखों के कीमत के गहने व नगदी पार कर दिया।जिसमें करीब 25 तोला सोने के जेवरात,एक किलो चांदी के जेवरात सहित हजारों की नगदी पार कर दिया है।पीड़ित ने मामले की सूचना पुलिस से करते हुए न्याय की गुहार लगाई है।

अपनों को दुत्कार पराए का सम्मान भाजपा का बना हार का कारण !

अखंड भारत संदेश

विधान सभा चुनाव में भाजपा की हार का जिम्मेदार नेता कौन !

कौशाम्बी। विधानसभा चुनाव 2022 में कौशांबी लोकसभा क्षेत्र के पांचों विधानसभा सिराथू मंझनपुर चायल कुंडा और बाबागंज विधानसभा सीट से भारतीय जनता पार्टी और उनके सहयोगी दल के प्रत्याशी को पराजय का मुंह देखना पड़ा है आखिर भाजपा का गढ़ समझा जाने वाला कौशांबी लोकसभा क्षेत्र की पांचों विधानसभा सीट से भाजपा और उनके सहयोगी दल के प्रत्याशियों के हार का क्या कारण है यह बड़ी मंथन का विषय होगा। विधानसभा चुनाव हार जाने के बाद भारतीय जनता पार्टी में विभीषण की खोज शुरू हो गई है और बिभीषण की खोज करने के बाद उन्हें पार्टी से निष्कासित करने की तैयारी हो रही है लेकिन भाजपा प्रत्याशियों की हार का मूल बिंदु क्या है जल्दबाजी में इस पर मंथन नहीं हो रहा है पार्टी में विभीषण की भूमिका निभाने वाले नेता अब भाजपा की हार के बाद शीर्ष नेतृत्व को फिर गुमराह करने में लगे हैं दूसरी तरफ भाजपा के प्रत्याशियों की करारी हार होने के बाद प्रतिशोध की भावना प्रत्याशियों और भाजपा के बड़े नेताओं में दिखाई पड़ रही है और हार की खीझ में जो सामने पड़ा उस पर योगी सरकार से चाबुक चलाने का प्रयास होगा। भारतीय जनता पार्टी ने दो बार लोकसभा और एक बार विधानसभा सीट पर प्रचंड जीत के बाद भाजपा नेताओं ने पार्टी विरोधी लोगों से संपर्क बनाना शुरू कर दिया काले कारोबार में जुटे पराए लोगों को वरीयता दी जाने लगी वह मंच पर शोभायमान होने लगे और पार्टी के निष्ठावान लोगों से दूरी बनाई जाने लगी भाजपा में दूसरे दल के लोगों को वरीयता दी जाने लगी ब्लाक प्रमुख के चुनाव में पार्टी के निष्ठावान पदाधिकारियों को किनारे लगा दिया गया और दूसरे दल से आए पराए लोगों को तवज्जो दी गई पराए लोगों का अधिक सम्मान करना भाजपा का हार का कारण बन गया है पराए लोगों को चिन्हित करने की जरूरत है जिन्होंने बीजेपी की सरकार में अपने काले कारनामों पर पर्दा डाल कर मलाई काटी है और चुनाव आने पर भाजपा का झंडा लगाने के बाद भी उन्होंने अन्य दलों का समर्थन कर दिया है पार्टी में निष्ठावान कार्यकताओं की दुत्कार भी भाजपा की हार का एक प्रमुख कारण है आखिर भाजपा के निष्ठावान कार्यकताओं को दुत्कारने वाला वह भाजपा नेता कौन है जिससे विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी दो खेमे में बट गई है और इसका खामियाजा भाजपा को कौशांबी लोकसभा की पांचों विधानसभा सीट गंवा कर चुकानी पड़ी है। यदि भाजपा के निष्ठावान कार्यकर्ता ब्लाक प्रमुख पदाधिकारियों और नेताओं को दुत्कारने वाले नेता की शीर्ष नेतृत्व ने खोज शुरू कर उस पर कार्रवाई करने का प्रयास किया तो हिंदुत्व की भावना से जुड़े लोग फिर भाजपा से जुड़ेंगे और भाजपा को अपने पुराने अच्छे दिन वापस लाने में देर नहीं लगेगी।

गर्मी शुरू होते ही पानी की समस्या से जूझ रहे ग्रामीण

कौशांबी। जल निगम के उदासीनता और लापरवाही के चलते हैंडपंप सूखने लगे हैं पानी की तमाम समस्याएं ग्रामीणों के बीच व्याप्त हो गई हैं गांव क्षेत्र के एक तिहाई से अधिक हैंडपंपों में पानी देना बंद कर दिया है जिससे ग्रामीणों को दूरदराज से पानी लाना पड़ता है लेकिन ग्राम पंचायत और नगर पंचायत पानी की समस्याओं को दूर करने के लिए गंभीर नहीं है।

सपा प्रत्याशी के साथ भाजपा सांसद ने किया पौधारोपण

अखंड भारत संदेश

सपा प्रत्याशी के साथ पौधारोपण करते सांसद भाजपा

कौशाम्बी। सांसद कौशांबी विनोद सोनकर कुंडा विधानसभा क्षेत्र के समाजवादी पार्टी प्रत्याशी गुलशन यादव के साथ एक कार्यक्रम में पौधा रोपण करते दिख रहे हैं इस कार्यक्रम में कुंडा से भाजपा विधायक प्रत्याशी के पति भी दिखाई पड़ रहे हैं भाजपा सांसद विनोद सोनकर के समाजवादी प्रेम के चलते इलाके में कड़ी आलोचना हो रही है विधानसभा चुनाव में कौशांबी लोकसभा क्षेत्र के चायल सिराथू मंझनपुर कुंडा और बाबागंज पांचो विधानसभा सीट पर भारतीय जनता पार्टी और उनके सहयोगी दल के प्रत्याशी चुनाव हार गए हैं जिससे भाजपा की बड़ी छीछालेदर हो रही है एक तरफ पूरे प्रदेश में भाजपा भारी बहुमत से जीत दर्ज कर योगी के नेतृत्व में सरकार बनाने जा रही है दूसरी तरफ भाजपा का कौशांबी जिले की 3 विधानसभा और प्रतापगढ़ जिले के 2 विधानसभा से सूपड़ा साफ हो जाना चर्चा का विषय बन गया है आखिर सांसद विनोद सोनकर के सामने ऐसी कौन सी मजबूरी थी जिसके चलते उन्होंने समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी गुलशन यादव के साथ एक कार्यक्रम में शामिल होकर एक साथ पौधारोपण किया है सांसद का सपा प्रेम जगजाहिर हो रहा है और इस पर लोगों ने भाजपा शीर्ष नेतृत्व से शिकायत की है।

संपादकीय

जलवायु परिवर्तन अगला बड़ा संकट

पहले कोरोना, फिर यूक्रेन पर रूस का हमला, दोनों घटनाओं ने दुनिया को हिला कर रख दिया है। दो साल तक सब कुछ जाम करने के बाद, कोरोना का डर तो अब करीब करीब खत्म हो रहा है। रही बात यूक्रेन में रूसी युद्ध की, तो वो भी एक दिन समाप्त हो जाएगा। लेकिन मानवता के समक्ष मुसीबत फिर भी बनी रहेगी, क्योंकि जलवायु परिवर्तन का खतरा बरकरार है और आने वाले वर्षों में इसने बढ़ते ही जाना है। युद्धों और फौजी कार्रवाइयों से जलवायु परिवर्तन में वृद्धि ही होती है। मसलन, पाकिस्तान सीमा पर हिमालय के ऊंचे ग्लेशियरों पर भारतीय फौज की मौजूदगी से बर्फ पिघलती रहती है, जिससे पर्यावरण संतुलन बिगड़ता है। जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट कहती है कि जलवायु को खराब करने वाली गैसों के उत्सर्जन में 14 प्रतिशत का इजाफा हुआ है। इस नुकसान को बढ़ाने में विकसित देशों की बड़ी भूमिका है, जिनकी पर्यावरण विरोधी गतिविधियों से आधी पृथ्वी पर जीवन संकट पैदा हो गया है। ग्रीन हाउस गैसों के लगातार फैलने से पेड़ पौधों, जीव जंतुओं और मनुष्यों के भविष्य पर सवालिया निशान लग जाता है। पृथ्वी पर सभी जीव जंतुओं और वनस्पतियों का अस्तित्व एक दूसरे पर निर्भर होता है। इस परस्पर निर्भरता को ही इकोसिस्टम कहा जाता है। ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा बढ़ने से इकोसिस्टम का संतुलन बिगड़ता जाता है। उदाहरण के लिए, खेती में कीटनाशकों का अधिक प्रयोग होने से दुनिया के 75 प्रतिशत कीट पतंगे नष्ट हो गए हैं, जो पक्षियों का भोजन होते हैं। कीट पतंगों का सफाया होने से चिड़ियों को खुराक नहीं मिल पाती है, जिससे उनकी आबादी तेजी से घट रही है। इसी तरह, तालाब समाप्त होने से पानी में रहने वाले जीवों की प्रजातियां समाप्त हो रही हैं, जिनमें कछुए और मेढक प्रमुख हैं। मेढक न होने से सांपों का अस्तित्व संकट में पड़ गया है। इकोसिस्टम में कोई भी एक जीव समाप्त होने का मतलब है कि उस पर निर्भर रहने वाली दूसरी प्रजातियां समाप्त होने लगती हैं। इन सबके समाप्त होने से मनुष्य का जीवन संकट में आने लगता है।

यूक्रेन युद्ध के मद्देनजर फिलहाल कुकिंग ऑयल्स के दाम बढ़ गए हैं, लेकिन आगे दाम स्थिर रहने की उम्मीद की जा रही है। इस साल देश में तिलहन की पैदावार अच्छी होने की आशा है, इसलिए आने वाले महीनों में सरसों के तेल और सोयाबीन के तेल की आपूर्ति अच्छी रहने की संभावना जताई जा रही है। कृषि क्षेत्र से प्राप्त हो रही खबरों के अनुसार, देश में सरसों की पैदावार 40 लाख टन बढ़ने की आशा है, जिसके चलते 15 लाख टन सरसों तेल की आपूर्ति बढ़ जाएगी। सोयाबीन का उत्पादन भी सुधरा है। भारत में हर महीने करीब 18 लाख टन कुकिंग ऑयल की खपत होती है। रूसी हमले से पहले ही, यूक्रेन से 1.6 लाख टन सनफ्लॉवर ऑयल भारत के लिए रवाना हो गया था। हमारा देश अर्जेंटीना, मलेशिया और इंडोनेशिया से भी खाद्य तेल मंगाता है, जहां हालात सामान्य हैं। खाद्य तेल इंडस्ट्री के अनुसार, देश में सनफ्लॉवर ऑयल का महीने भर का स्टॉक मौजूद है। इस बीच यदि यूक्रेन युद्ध समाप्त हो जाता है तो स्थिति सामान्य हो जाएगी। कुछ कमी होगी भी, तो पाम ऑयल, कॉटन सीड ऑयल और मूंगफली के तेल से उसकी भरपाई की जा सकती है।

खाड़ी देश भी भारत के साथ मजबूती से खड़े

प्रमोद भार्गव

चुनाव सर्वेक्षणों के प्रसारण व प्रकाशन पर रोक लगाई जाने की मांग भी उठ रही है। ओपिनियन पोल मतदाता को गुमराह कर निष्पक्ष चुनाव में बाधा बन रहे हैं। वैसे भी ये सर्वेक्षण वैज्ञानिक नहीं हैं, क्योंकि इनमें पारदर्शिता की कमी है और ये किसी नियम से बंधे नहीं हैं। साथ ही ये सर्वे, कंपनियों को धन देकर कराए जा सकते हैं। बावजूद इन्हें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के बहाने ढोया जा रहा है। जबकि ये पेड न्यूज की तर्ज पर पेड ओपोनियन पोल में बदल गए हैं। इसीलिए इनके परिणाम भरोसे के तकाजे पर खरे नहीं उतरते। सर्वे कराने वाली एजेंसियां भी स्वायत्त होने के साथ जवाबदेही के बंधन से मुक्त हैं। इसलिए इन पर भरोसा किस आधार पर किया जाए ?

हाल ही में भारत ने संयुक्त अरब अमीरात के साथ व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते (सीईपीए) पर हस्ताक्षर किए हैं। यह एतिहासिक समझौता न केवल भारत और संयुक्त अरब अमीरात के द्विपक्षीय संबंधों को और भी मजबूती प्रदान करेगा बल्कि दोनों देशों के बीच विदेशी व्यापार को 100 अरब डॉलर के स्तर के ऊपर ले जाने में भी सहायक होगा। इस समय अमेरिका एवं चीन के बाद, संयुक्त अरब अमीरात भारत का तीसरा सबसे बड़ा विदेशी व्यापार का भागीदार है। भारत का किसी भी अरब देश (मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका के देश) के साथ यह पहला व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौता है और इस समझौते के अंतर्गत दोनों देशों के बीच विभिन्न उत्पादों एवं सेवाओं का विदेशी व्यापार बढ़ाने के साथ ही प्रत्यक्ष विदेशी निवेश बढ़ाने पर भी जोर दिया जाएगा। साथ ही इस समझौते के अंतर्गत दोनों देश एक दूसरे के साथ की जाने वाली आयात एवं निर्यात की वस्तुओं पर आयात शुल्क एवं कस्टम शुल्क आदि को कम करेंगे एवं विदेशी व्यापार में आने वाली अन्य कठिनाइयों को भी दूर करने का प्रयास करेंगे। वर्तमान में भारत एवं संयुक्त अरब अमीरात के बीच प्रतिवर्ष 60 अरब डॉलर का विदेशी व्यापार होता है तथा सेवा क्षेत्र में भी प्रतिवर्ष 15 अरब डॉलर का व्यापार होता है। संयुक्त अरब अमीरात एक तरह से भारत के लिए दक्षिण अफ्रीका का प्रवेश द्वार है एवं अफ्रीका आज आर्थिक क्षेत्र की दृष्टि से बहुत बड़ा बाजार है। अतः उक्त समझौते के बाद भारतीय उत्पादों को संयुक्त अरब अमीरात के बाजारों में प्रदर्शित कर अरब के अन्य देशों के साथ ही दक्षिणी अफ्रीकी देशों को भी निर्यात किया जा सकेगा। इससे भारत और संयुक्त अरब अमीरात के बीच आर्थिक साझेदारी और भी मजबूत होगी। वैसे भी संयुक्त अरब अमीरात किसी भी आर्थिक क्षेत्र में भारत का प्रतिद्वंद्वी नहीं है अतः भारत द्वारा किया गया यह एक पहला ऐसा समझौता है जो कॉम्प्लिमेंटरी अर्थव्यवस्था के साथ किया गया है अन्यथा भारत द्वारा अभी तक किए गए मुक्त व्यापार समझौते विनिर्माण क्षेत्र में मजबूत देशों के साथ किए गए हैं जैसे दक्षिण कोरिया, जापान या आसियान देशों के साथ हुआ है। भारत ने उक्त व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते को मिलाकर अभी तक कुल 12 मुक्त व्यापार एवं क्षेत्रीय व्यापार समझौते विभिन्न देशों के साथ किए हुए हैं। यह मुक्त व्यापार समझौते

भारत के विदेश व्यापार को रफ्तार देने में अहम भूमिका निभा रहे है। भारत ने पूर्व में श्रीलंका, नेपाल, दक्षिणी कोरिया, जापान, मलेशिया, मारिशस, अफगानिस्तान, चिली, मरकोसुर आदि देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौते, व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते (सीईपीए) अथवा तरजीही व्यापार समझौते किए हैं। इसी प्रकार भारत ने कुछ क्षेत्रीय व्यापार समझौते भी किए हैं जैसे दक्षिण एशिया मुक्त व्यापार क्षेत्र समझौता (एसएएफटीए), भारत एशिया एनएफटीए, एशिया पेसिफिक व्यापार समझौता, सार्क तरजीही व्यापार समझौता (एसएपीटीए), आदि। अब भारत द्वारा ब्रिटेन, अमेरिका एवं यूरोपीयन यूनियन देशों के साथ भी मुक्त व्यापार समझौते को शीघ्रता से सम्पन्न किए जाने के प्रयास किए जा रहे हैं, क्योंकि जिन अन्य देशों के साथ उक्त देशों के मुक्त व्यापार समझौते सम्पन्न किए जा चुके हैं उन देशों को उक्त देशों के साथ विदेशी व्यापार करने में वरीयता प्रदान की जाती है जिसके कारण भारतीय व्यापारियों को उक्त देशों के साथ विदेशी व्यापार करने में कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है। वर्ष 2015 के बाद से भारत एवं संयुक्त अरब अमीरात कई क्षेत्रों में मिलकर कार्य कर रहे हैं एवं इस दौरान इन दोनों देशों के बीच आपस में सामरिक भागीदारी भी बढ़ी है, चाहे वह सुरक्षा का क्षेत्र हो, चाहे वह समुद्रीय क्षेत्र हो एवं चाहे वह दोनों देशों के नागरिकों के आपसी रिश्ते का क्षेत्र हो। आज संयुक्त अरब अमीरात एक ऐसा अरब देश है जिससे भारत के बहुत मजबूत आर्थिक रिश्ते हैं। हाल ही के समय में आर्थिक रिश्तों के मजबूत होने के साथ ही भारत और संयुक्त अरब अमीरात की आपस में राजनैतिक निकटता एवं सूझबूझ भी बढ़ी है। संयुक्त अरब अमीरात के साथ भारत का निर्यात बहुत तेज गति से आगे बढ़ रहा है। वित्तीय वर्ष 2020-21 में संयुक्त अरब अमीरात को भारत से 17 अरब डॉलर का निर्यात किया गया वहीं भारत ने 26 अरब डॉलर का आयात किया है। इस प्रकार इस समय भारत के लिए 9 अरब डॉलर का व्यापार घाटा है। परंतु भारत एवं संयुक्त अरब अमीरात के बीच हाल ही में संपन्न किए गए व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते के बाद भारत से निर्यात को संयुक्त अरब अमीरात में जीरो ड्यूटी का लाभ मिलेगा इससे भारत से संयुक्त अरब अमीरात को निर्यात अधिक तेज गति से बढ़ेंगे इससे भारत को अपने व्यापार घाटे को कम करने में मदद मिलेगी। भारत के सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र एवं फार्मा उद्योग के लिए भी अब संयुक्त अरब अमीरात के द्वार खुल जाएंगे। विशेष रूप से फार्मा क्षेत्र को अपने उत्पाद संयुक्त अरब अमीरात को निर्यात करने में बहुत दिक्कत का सामना करना पड़ता था क्योंकि संयुक्त अरब अमीरात भारत से दवाईयों का आयात करने के पूर्व भारतीय फार्मा उत्पादक कम्पनियों का निरीक्षण करना चाहता था, परंतु अब संयुक्त अरब अमीरात द्वारा अमेरिका के यूएसएफडीए द्वारा प्रदान की गई अनुमति के आधार पर भारतीय फार्मा उत्पादक कम्पनियों को संयुक्त अरब अमीरात में दवाईयों के निर्यात की अनुमति प्रदान कर दी जाएगी। साथ ही भारत से रत्नों, रक्षा उत्पादों, ग्रीन इनर्जी उत्पादों, मशीनरी आदि का निर्यात भी बहुत तेजी से आगे बढ़ेगा। एक अनुमान के अनुसार संयुक्त अरब अमीरात के साथ किए गए व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते के बाद आने वाले समय में भारत में 10 लाख रोजगार के नए अवसर निर्मित होंगे।

उक्त वर्णित व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते के सम्पन्न होने के बाद भारत के लिए संयुक्त अरब अमीरात के साथ ही अब अरब खाड़ी के अन्य देशों यथा बहरीन, कुवैत, ओमान, कतर, सऊदी अरब एवं इराक के साथ भी विदेशी व्यापार बढ़ाने में मदद मिलेगी एवं इन देशों के साथ भी मुक्त व्यापार समझौते किए जा सकेंगे। वैसे भी अब अरब खाड़ी के देश भारत के साथ न केवल अपने विदेशी व्यापार को आगे बढ़ाना चाहते हैं बल्कि भारत में भारी मात्रा में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश भी करना चाहते हैं। क्योंकि, ये देश भी अब समझने लगे हैं कि आगे आने वाले समय में भारत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक मजबूत आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रहा है अतः अब भारत से ये देश भी आर्थिक सम्बंध मजबूत करना चाहते हैं। अभी हाल ही में सऊदी अरब द्वारा भारतीय कम्पनी रिलायंस के साथ ही अन्य भारतीय कम्पनियों में भी भारी मात्रा में विदेशी निवेश करने की इच्छा व्यक्त की गई है। अरब खाड़ी के देशों में लगभग 130 लाख भारतीय निवास कर रहे हैं और इन समस्त देशों के नागरिकों तथा भारतीय नागरिकों का आपस में पहले से ही बहुत अच्छा समन्वय है। अरब खाड़ी के देशों की आय का मुख्य स्त्रोत पेट्रोलियम पदार्थों से है परंतु संयुक्त अरब अमीरात ने अपनी निर्भरता पेट्रोलियम पदार्थों पर कम करते हुए अन्य आर्थिक क्षेत्रों पर ध्यान देना शुरू किया है जिसका परिणाम यह हुआ है कि आज संयुक्त अरब अमीरात के सकल घरेलू उत्पाद में पेट्रोलियम पदार्थों का योगदान केवल 21 प्रतिशत रह गया है अर्थात 79 प्रतिशत सकल घरेलू उत्पाद अन्य आर्थिक क्षेत्रों से प्राप्त हो रहा है, जोकि अपने आप में बहुत बड़ा परिवर्तन है। अरब खाड़ी के ही एक अन्य देश बहरीन ने अपनी निर्भरता एवं इसी प्रकार के प्रयास सऊदी अरब द्वारा भी किए जा रहे हैं।

इस प्रकार के परिवर्तनों के चलते खाड़ी के देश अब भारत से अपने व्यापार को बढ़ाना चाहते हैं एवं इन देशों के बड़े बड़े फण्ड एवं घराने अपने निवेश को भारत की मोड़ने का प्रयास कर रहे हैं।

भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था का स्वर्णिम कमाल!!!

किशन भावनानी

विश्व स्तरपर सबसे बड़ा और पुराने लोकतंत्रों में से एक भारतीय लोकतंत्र है जो विश्व के अनेक देशों के लिए प्रेरणा स्त्रोत भी है!! जिसका संचालन संवैधानिक संस्था भारतीय चुनाव आयोग द्वारा बहुत कुशलता और जिम्मेदारी के साथ करता है जो विश्वसनीय, विश्व विख्यात है साथियों बात अगर हम 10 मार्च 2022 को घोषित चुनाव परिणामों के 2 दिन पूर्व ईवीएम मशीनों के संबंध में विवाद और उसपर संदिग्धता पूर्वक उठे प्रश्नचिन्ह भारतीय लोकतंत्र की प्रतिष्ठा के लिए अच्छा संकेत नहीं है। हालांकि इसके पूर्व भी कई बार ऐसे बयान आए हैं के ईवीएम का बटन कोई भी दबाओ वोट किसी एक खास पार्टी को ही जाता है!! इसके वैश्विक स्तरपर भारतीय लोकतंत्र के प्रति अच्छा संकेत नहीं जाता, इसलिए अब नए भारत को स्वर्णिम प्रभावी आकार देने के लिए इस तरह के आरोपों, बयानों, बातों पर विराम लगाने के लिए राज्य विधानसभाओं और संसद को प्रभावी साधन बनना होगा!! याने ऐसी तकनीकी या कानून लाना होगा ताकि ईवीएम से मतदान सहित मतदान के सभी साधनों पर विपक्ष, पक्ष व जनता का अटूट विश्वास हो तथा उसपर सवाल उठाने की गुंजाइश ही ना हो!! ऐसा प्रभावी साधन बनाने और विश्व के सबसे पुराने और बड़े लोकतंत्र को एक अटूट स्वर्णिम एवं विश्वसनीय लोकतंत्र बनाना होगा!!! हालांकि अभी भी मजबूत लोकतंत्र है परंतु ईवीएम पर उठनेवाले सवाल इस मजबूती पर संशय पैदा करने की कोशिश है!! जिसे समाप्त करने की तकनीकी पर विचार करना तात्कालिक जरूरी है।

साथियों बात अगर हम भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था के स्वर्णिम कमाल की करें तो यह इतनी जबरदस्त ताकतवर है कि बड़े-बड़े नेता को चुनाव में धराशाई करने की ताकत रखती है जो काबिले तारीफ है!!! उसकी ताकत हमने 10 मार्च 2022 को पांच राज्यों से आए चुनावी नतीजों में देखे कि कैसे उत्तराखंड के सारे भावी प्रस्तावित मुख्यमंत्रियों सहित वर्तमान मुख्यमंत्री और बहुत पावरफुल उम्मीदवार भी चुनाव हार गए और सीटों की सुनामी के साथ एक पार्टी जीत गई!!! यूपी चुनाव में हमने देखे कि बड़े-बड़े ओहदे वाले महत्वपूर्ण व्यक्ति भी हार गए जिसपर सभी को आश्चर्य होगा लेकिन यह भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था की खूबसूरती कमाल है!! पंजाब में हमने देखे के भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्वर्णिम खूबसूरती ने कुछ बात ही निराली कर दी!! वर्तमान मुख्यमंत्री सहित बड़े-बड़े ताकतवर नार्मी और मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार धराशाई हुए जिस पर सबको आश्चर्य है! परंतु यह भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्वर्णिम खूबसूरती का कमाल है!!! कुल मिलाकर हमने देखे कि इन चुनावों में लोकतंत्र के स्वर्णम कमाल का लोहा सब को मानने पर मजबूर किया है !क जनता ने लोकतंत्र में अपने मताधिकार का उपयोग ऐसे स्वर्णिम रूप में किया के बड़े-बड़े नेताओं को पटखनी देकर अपनी ताकत दिखाई जो काबिले तारीफ है!!! साथियों बात अगर हम दिनांक 10 मार्च 2022 को घोषित चुनाव परिणामों की करें तो हार-जीत जिंदगी का एक हिस्सा है। हार के बाद जीत और जीत के बाद हार होना स्वभाविक है!! बस हर व्यक्ति को इसे नजरअंदाज करते हुए अपने कर्तव्य पालन के रूप में अपनी सेवा जारी रखना है परंतु यह याद रखना चाहिए कि जीत का खूब जश्न जरूर मनाइए और जनादेश का आदर कीजिए, क्योंकि जीत एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है!! जो उम्मीदवार आपसे हारा है उसके लिए सहानुभूति रखना और उसके करीबियों को उनकी पार्टी को हार का एहसास या अपमान नहीं करना है!! यह एक अच्छे इंसान का गुण है, यही लोकतंत्र की खुशबू और खूबसूरती है कि जीत को अहंकार नहीं बनाएं हार को अंतिम हार नहीं बनाकर फिर जनता से जुड़े, जनसेवा कार्यों में लग जाएं यही खूबसूरती भारतीय परंपरा और लोकतंत्र की खुशबू रही है!!! साथियों बात अगर हम लोकतंत्र के मौलिक उद्देश्य और विशेषताओं की करें तो, संविधान में लोकतंत्र की संपूर्ण व्याख्या की गई है। लोकतंत्र के कुछ मौलिक उद्देश्य एवं विशेषताएं निम्न हैं। (1) जनता की संपूर्ण और सर्वोच्च भागीदारी, (2) उत्तरदायी सरकार, (3) जनता के अधिकारों एवं स्वतंत्रता की हिफाजत सरकार का कर्तव्य होना, (4) सीमित तथा सांविधानिक सरकार, (5) भारत को एक लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने, सभी नागरिकों को समानता, स्वतंत्रता और न्याय का वादा, (6) निष्पक्ष तथा आवधिक चुनाव, (7) वयस्क मताधिकार, (8) सरकार के निर्णयों में सलाह, दबाव तथा जनमत द्वारा जनता का हिस्सा, (9) जनता के द्वारा चुनी हुई प्रतिनिधि सरकार, (10) निष्पक्ष न्यायालय, (11) कानून का शासन, (12) विभिन्न राजनीतिक दलों तथा दबाव समूहों की उपस्थिति, (13) सरकार के हाथ में राजनीतिक शक्ति जनता की अमानत के रूप में। साथियों बात अगर हम माननीय उपराष्ट्रपति द्वारा दिनांक 10 मार्च 2022 को एक कार्यक्रम में संबोधन की करें तो उन्होंने, स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने पर आजादी का अमृत महोत्सव समारोहों की चर्चा करते हुए कहा कि अपने देश की महान लोकतांत्रिक परंपरा को मजबूत बनाने के लिए हमें महान संकल्प लेना चाहिए।

चिंतन

यूपी में लौटा 'बुलडोजर बाबा' का राज

प्रभुनाथ शुक्ल

उत्तर प्रदेश ने जो राजनीतिक संदेश दिया है अपने आप उसके मायने बेहद अलग है। प्रतिपक्ष की लाख कोशिशों के बावजूद भी भारतीय जनता पार्टी भारी बहुमत से सरकार बनाने में कामयाब रहीं। दोबारा सत्ता में वापसी कर भाजपा ने साफ संदेश दे दिया कि है कि उसके मुकाबले विपक्ष कहीं नहीं ठहरता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की लोकप्रियता बरकरार है। भाजपा जातिवाद की राजनीति को ध्वस्त कर पुनः सत्ता में वापसी की है। उत्तर प्रदेश की राजनीतिक में यह बहुत बड़ी सफलता है। योगी आदिनाथ ऐसे मुख्यमंत्री हैं जो 37 सालों में दोबारा शपथ ले रहे हैं और सत्ता में वापसी कराएं। कांग्रेस और बहुजन समाज पार्टी का सूपड़ा साफ हो गया है। भाजपा ने कांग्रेस और बहुजन समाज पार्टी के साथ सपा को यह संदेश देने में सफल हुईं है कि प्रदेश में अब विकास विश्वास की राजनीति ही सफल होगी जातिवाद का कोई स्थान नहीं है। राज्य में भाजपा की वापसी के पहले समाजवादी और बहुजन समाज पार्टी का सियासी दबदबा था। राममंदिर आंदोलन के बाद भाजपा सत्ता में जबरदस्त वापसी कि थी लेकिन मंडल की राजनीति ने उसे गायब कर दिया। राज्य में 90 के दशक के बाद कांग्रेस कि वापसी नहीं हो पाई। 40 साल तक उत्तर प्रदेश की सत्ता में रहने वाली कांग्रेस हर चुनाव में अपना जनाधार खोती चली गई। कांग्रेस धर्मनिरपेक्षता के लबादे में इतना उलझी कि मंडल-कमंडल की राजनीति में उसका अस्तित्व ही खत्म हो गया। इसके बाद कांग्रेस सत्ता में फिर वापस नहीं हो पाई। उत्तर प्रदेश में 2017 के पहले जातिवादी राजनीति चरम पर थी। राज्य में राम मंदिर आंदोलन के बाद भाजपा की सत्ता में वापसी हुई। लेकिन इसके बाद यहां सपा-बसपा की जातिवादी राजनीति हावी रहीं लेकिन 2014 में केंद्र की सत्ता में भाजपा की वापसी के बाद जहां राज्य में कांग्रेस खत्म होती चली गई वहीं उत्तर प्रदेश की राजनीति में भारतीय जनता पार्टी ने जबरदस्त वापसी की> उत्तर प्रदेश में भाजपा को घेरने के लिए सपा -बसपा कांग्रेस ने कई प्रयोग दुहराए लेकिन उसका कोई खास प्रभाव नहीं दिखा। क्योंकि विपक्ष चाह कर भी आंतरिक रुप से टूटा और बिखरा था जिसका सीधा फायदा भाजपा को मिला।

केंद्र और प्रदेश में भाजपा की डबल इंजन की सरकार होने की वजह से विकास पर भी काफी गहरा प्रभाव पड़ा। जिस मुद्दों से कांग्रेस बचती थी भाजपा उसे फ्रंटफुट पर खेला। राम मंदिर, धारा 370, तीन तलाक, एनआरसी और हिंदुत्व जैसे मुद्दों को धार दिया। 'सबका साथ सबका विकास' वाले मंत्र को अपनाकर भाजपा आगे बढ़ी और कामयाब हुईं। उत्तर प्रदेश में भाजपा जितनी मजबूत हुई विपक्ष उतना कमजोर हुआ। वर्तमान समय में बदले सियासी हालात में विपक्ष को गंभीरता से विचार करना होगा। उत्तर प्रदेश में भाजपा के मुकाबले विपक्ष कहीं दिख नहीं रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि 2022 के आम चुनाव में भाजपा की प्रचंड जीत ने 2024 का भी मार्ग प्रशस्त कर दिया है। क्योंकि विपक्ष के तमाम प्रयासों के बावजूद भी भाजपा को घेरने में वह कामयाब नहीं हो सका है। उत्तर प्रदेश में बहुजन समाज पार्टी दलित विचारधारा की मुख्य पार्टी मानी जाती रही। मायावती चार-चार बार प्रदेश के मुख्यमंत्री रह चुके हैं। लेकिन बहुजन समाज पार्टी इतनी जल्द कमजोर हो जाएगी इसकी कल्पना तक नहीं की जा सकती थी। देश में आज जिस तरह कांग्रेस गुजर रहीं है वहीं हालत बहुजन समाज पार्टी की है। हालांकि आज भी दलित मत उसके साथ है, लेकिन अब उसकी संख्या भी कम हो चली है। सिर्फ दलितों के भरोसे वह चुनाव को नहीं जीत सकती है। 2007 सोशलइंजीनियरिंग के जरिए अगड़े और दलितों को लेकर उन्होंने सरकार बनायी थी। लेकिन इस बार के आम चुनाव में बहुजन समाज पार्टी की जो दुर्गति हुई है वह चिंतनीय। चुनाव परिणाम को देखकर साफ होता है कि दलित विचारधारा की मुख्य पार्टी का अस्तित्व खत्म हो चला है।

मायावती अभी तक कोई सियासी उत्तराधिकारी नहीं दे सकी हैं। साल 2017 में 19 सीटों पर जीत हासिल करने वाली बहुजन समाज पार्टी एक सीट पर सिमट गई। उसे करीब 12.9 फीसदी मत मिले।

यूपी के लिए उपयोगी साबित हुए योगी

डॉ. दिलीप अग्निहोत्री

कुछ दिन पहले नरेन्द्र मोदी ने योगी को यूपी के लिए उपयोगी बताया था। यह रोचक तुकबंदी थी। उत्तर प्रदेश से उ व प शब्द लिया गया। उसके साथ योगी शब्द जोड़ दिया गया। इस प्रकार उपयोगी शब्द बन गया। यह शब्दों की रोचक संरचना थी। लेकिन इसका निहितार्थ व भाव बहुत व्यापक था। योगी आदित्यनाथ लगातार पांच वर्षों तक बिना रुके, बिना थके सुशासन के मार्ग पर आगे बढ़ते रहे। नरेन्द्र मोदी और योगी आदित्यनाथ की यह कार्यशैली बिल्कुल समान है। दोनों का समर्पण राष्ट्रधर्म के प्रति है। परिवार व निजी संपत्ति का कोई मोह नहीं है। दशकों के सार्वजनिक जीवन में इन पर कोई आरोप नहीं लगा। भारत की राजनीति में मोदी-योगी बिल्कुल अलग दिखाई देते हैं। दूर-दूर तक इनके जैसा कोई नहीं है। यही कारण है कि इतने वर्षों में विपक्ष इनके प्रभावी विरोध का तरीका समझ नहीं सका। अक्सर विपक्ष के दांव खुद पर भारी पड़ जाते हैं। इसीलिए विपक्ष गुजरात में भी नरेन्द्र मोदी को रोकने में विफल रहा था। इतना ही नहीं तमाम विरोध के बाद भी उन्हें देश का प्रधानमंत्री बनने से रोक नहीं सका। विपक्ष अपने घिसे-पिटे अंदाज में आगे बढ़ता रहा। इसका असर यह हुआ कि मोदी दूसरी बार भी प्रधानमंत्री बन गए। यह इतिहास उत्तर प्रदेश में भी अपने को दोहरा रहा है। यहां भी योगी के विरोध में विपक्ष जमीन आसमान एक करता रहा। लेकिन वह आमजन को अपनी बातों से प्रभावित नहीं कर सका। योगी सरकार को दोबारा जनादेश हासिल हुआ। मतदाताओं के समक्ष किसी निर्णय तक पहुंचने की इस बार बेहतर स्थिति थी। उन्होंने बसपा, सपा और फिर भाजपा की पूर्ण बहुमत सरकारों का कार्यकाल देखा था। इनके पहले मुलायम सिंह के नेतृत्व में सरकार थी। उसमें कानून-व्यवस्था की स्थिति दयनीय थी। उस समय भाजपा नंबर तीन पर हुआ करती थी। प्रदेश की राजनीति में सपा, बसपा का ही मुकाबला चलता था। मुलायम सरकार से मतदाता नाराज हुए तो बसपा को पूरे बहुमत के साथ सत्ता में पहुंचा दिया। लेकिन पांच वर्ष सरकार चलाने के बाद बसपा सरकार घोटालों के आरोपों से बेहाल हो चुकी थी। इधर सपा में अखिलेश यादव को उत्तराधिकार मिल गया। उन्होंने प्रारंभ में कतिपय बाहुबलियों व दबंगों के साथ तालमेल से इनकार कर दिया था। इससे सपा में सुधार का बड़ा सन्देश गया। यह लगा कि सपा अब पहले जैसी नहीं रहेगी। इस आधार पर सपा को बहुमत मिला। लेकिन शपथ ग्रहण समारोह के बाद ही बदलाव की संभावना धूमिल हो गई। सपा-बसपा के इस दौर से आजिज मतदाताओं ने भाजपा को मौका दिया। योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में सरकार का गठन हुआ। पद संभालने के फौरन बाद योगी आदित्यनाथ ने कानून-व्यवस्था को सुदृढ़ करने पर ध्यान दिया। उनका कहना था कि यह सुशासन व विकास की पहली शर्त है। जिस प्रदेश में कानून-व्यवस्था की स्थिति बेहतर नहीं होती, वहां विकास नहीं हो सकता। एंटी रोमियो के साथ शुरू हुई उनकी यात्रा बुलडोजर के माध्यम से आगे बढ़ी। योगी आदित्यनाथ ने पूरी ईमानदारी से अपने दायित्वों का निर्वाह किया। इस व्यापक आधार पर उनकी सरकार को जनादेश मिलना ही था। मतदाता पांच वर्ष पहले के राजनीतिक दौर में लौटने को तैयार नहीं थे। उत्तर प्रदेश विधानसभा का चुनाव परिणाम अप्रत्याशित नहीं है। योगी के नेतृत्व में भाजपा की जीत तय मानी जा रही थी। उसका बड़ा कारण है कि पांच वर्षों में कानून-व्यवस्था व विकास की बेहतर स्थिति रही। पिछली सरकारें मिल कर भी इन पांच वर्षों की उपलब्धियों का मुकाबला नहीं कर सकती। सपा की सीटें दो वादों के कारण बढ़ी है। इनमें तीन सौ यूनिट फ्री बिजली और पुरानी पेंशन बहाली का वादा शामिल है। इसके अलावा सपा के गठन के समय से ही जाति-मजहब का आधार रहा है। उसका भी उसे लाभ मिलता है। दूसरी ओर कानून-व्यवस्था, सांस्कृतिक गौरव व विकास कार्यों को महत्व देने वालों ने भाजपा को समर्थन दिया। मोदी और योगी की सरकार ने राष्ट्रीय गौरव व स्वाभिमान के बेमिसाल कार्य किये हैं। इनके सामने भी विपक्ष की चमक धूमिल हो गई थी।

विश्वासों का बम, बोले धम्म-धम्म

डॉ. सुरेश कुमार

जब विश्वास से श्वास दूर भागने लगे तब मंगल ग्रह पर जीवन तलाशने की बात सरासर बेईमानी होती है। कल तक जो विज्ञान के बल पर दुनिया को मुट्ठी में करने चले थे वहीं दुनिया की मुट्ठी से मुक्त होते होते रह गए। जिस देश में ताली ताली बजाकर करोना वायरस भगाने वाले नेता हों, जहाँ के वैज्ञानिक अंतरिक्ष में रॉकेट भेजने से पहले उसे प्रभु के चरणों में रखते हों, जहाँ के प्रोफेसर सड़क पर फेंके हुए नींबू-मिर्ची-कुमकुम-हल्दी से डरकर दूर भागते हों, जहाँ के डॉक्टर आकाश के नक्षत्रों को देखकर जन्मे शिशु का नाम रखते हों, जहाँ के अभिनेता अपने नाम की स्पेलिंग बदलकर सिनेमा हिट होने की कामना करते हों, ऐसे देश में क्षुद्र हत्याएं नहीं तो नए आविष्कार होंगे? नरबलि न होगी तो क्या नोबेल पुरस्कार मिलेंगे? कहने को हम 21वीं सदी में हैं लेकिन अंधविश्वास बाबा आदम के जमाने का है। शरीर चाहे किसी भी युग का हो यदि मन लकीर का फकीर बन अंधविश्वासों में सुस्ताता है तो पाषाण और आधुनिक युग में वही अंतर है जो नागनाथ और सांप नाथ में है। चिंतन मनुष्य और पशु के समान है जिसे नहीं पता कि उसका जन्म क्यों हुआ? खाओ खुजाओ बत्ती बुझाओ वाली जिंदगी जल्दी से यहां जाओ कहने पर मजबूर कर देती है। विज्ञान विषय की बदकिस्मती देखिए वह अंक प्राप्त करने और ऊंची-ऊंची नौकरी प्राप्त करने का खिलौना बन कर रह गया है। देश में विज्ञान के अध्ययनकर्ता भी अंधविश्वास की पिपड़ी बजाते हुए दिखाई देते हैं। पढ़े लिखे लोग भी अंधविश्वास के चलते अपनी संतान तक की नरबलि देने से पीछे नहीं हटते। जो शिक्षा तर्क करना नहीं सिखाती वह कागज के टुकड़े से ज्यादा कुछ नहीं है। हमारी शिक्षा व्यवस्था तर्क करने, सोचने समझने वालों को नहीं तो तोतों को तैयार कर रही है जो सारा जीवन रटी हुई चीज की उल्टी करने में बिता देते हैं।

पाकिस्तान के खिलाफ डेब्यू करेंगे मिशेल स्वेपसन, ऑस्ट्रेलिया ने प्लेइंग-11 की घोषणा की

कराची। पाकिस्तान और ऑस्ट्रेलिया के बीच 12 मार्च से कराची के नेशनल स्टेडियम में तीन मैचों की सीरीज का दूसरा टेस्ट खेला जाएगा। इस मुकाबले के लिए ऑस्ट्रेलिया ने प्लेइंग-11 की घोषणा कर दी है। टीम मैनेजमेंट ने इस मैच में लेग स्पिनर मिशेल स्वेपसन को प्लेइंग-11 में मौका दिया है। स्वेपसन का यह डेब्यू टेस्ट भी होगा। ऑस्ट्रेलियाई कप्तान पैट कमिंस ने शुक्रवार को दूसरे टेस्ट के लिए टीम की घोषणा की। स्वेपसन इस मैच में स्पिन डिपार्टमेंट में नाथन लॉयन का साथ निभाते दिखेंगे। कराची में टर्न की उम्मीद की जा रही है। इसी वजह से ऑस्ट्रेलियाई टीम मैनेजमेंट ने दो स्पिनरों के साथ उतरने का फैसला लिया है। इसके अलावा मार्नस लाबुशेन और स्टीव स्मिथ पार्ट टाइम स्पिनर के तौर पर टीम में मौजूद हैं। स्वेपसन को तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड की जगह प्लेइंग-11 में मौका दिया गया है। कमिंस ने कहा- स्वेपसन टेस्ट खेलने को लेकर बेहद उत्साहित हैं और तैयार हैं। हम भी उनको खेलता देखना चाहते हैं। कमिंस ने कहा- वह पिछले काफी समय से स्क्वॉड में तो शामिल रहे हैं, लेकिन कभी खेलने का मौका नहीं मिला। अब वह पूरी तरह से तैयार हैं। ऑस्ट्रेलिया और पाकिस्तान के बीच पहला टेस्ट ड्रॉ पर खत्म हुआ था। वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) के लिहाज से यह सीरीज दोनों टीमों के लिए बेहद महत्वपूर्ण है।

ऑस्ट्रेलिया प्लेइंग-11: डेविड वार्नर, उस्मान ख्वाजा, मार्नस लाबुशेन, स्टीव स्मिथ, ट्रैविस हेड, कैमरून ग्रीन, एलेक्स कैरी, मिशेल स्टार्क, पैट कमिंस (कप्तान), नाथन लियोन, मिशेल स्वेपसन

रावलपिंडी की पिच पर गिरी आईसीसी की गाज, औसत से भी नीचे बताया

रावलपिंडी। पाकिस्तान और ऑस्ट्रेलिया के बीच रावलपिंडी में हाल ही तीन मैचों की टेस्ट सीरीज का पहला मुकाबला खेला गया था। यह मैच ड्रॉ पर समाप्त हुआ था। अब अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट

काउंसिल (आईसीसी) ने रावलपिंडी के पिंडी क्रिकेट स्टेडियम की पिच को औसत से कम आंका है।

पहले टेस्ट में बल्लेबाजों का दबदबा रहा था। ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाज इस मैदान पर दोनों पारियों को मिलाकर पाकिस्तान के सिर्फ चार विकेट चटका पाए थे। पाकिस्तान ने पहली पारी चार विकेट पर 476 रन बनाकर घोषित कर दी थी, जबकि दूसरी पारी में टीम ने बिना किसी नुकसान के 252 रन बनाए थे। ऑस्ट्रेलियाई टीम ने अपनी इकलौती पारी में 459 रन बनाए थे। आईसीसी एलीट पैनल के मैच रेफरी के रंजन मदुगले इस पिच को औसम से भी नीचे बताया है। इसके साथ ही उन्होंने रावलपिंडी की पिच को आईसीसी पिच एंड आउटफील्ड मॉनिटरिंग प्रोसेस के तहत एक 'डिमेरिट प्वाइंट' दिया है।

अजहरुद्दीन ने की बेटे के साथ बैटिंग, असदुद्दीन की तूफानी बल्लेबाजी, फिर भी जीती पाकिस्तानी टीम

संयुक्त अरब। संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में फ्रेंडशिप कप का आयोजन हुआ। तीन दिनों तक चले इस टूर्नामेंट में इंडिया लीजेंड्स, वर्ल्ड लीजेंड्स, पाकिस्तान लीजेंड्स और बॉलीवुड किंग्स की टीम ने हिस्सा लिया। इंडिया लीजेंड्स की कप्तानी भारत के पूर्व दिग्गज मोहम्मद अजहरुद्दीन ने की।

फाइनल मैच में वर्ल्ड लीजेंड्स को हराकर पाकिस्तान लीजेंड्स ने खिताब पर कब्जा किया। उससे पहले आखिरी लीग मैच में इंडिया लीजेंड्स का सामना पाकिस्तान लीजेंड्स के साथ हुआ। इस मैच में अजहरुद्दीन ने बेटे मोहम्मद असदुद्दीन के साथ बल्लेबाजी की। बाप-बेटे की इस जोड़ी ने 19 रनों की साझेदारी की। अजहरुद्दीन ने बेटे के साथ बल्लेबाजी का एक वीडियो इंस्टाग्राम पर शेयर किया है। 59 साल के अजहरुद्दीन ने शारजाह में पाकिस्तान लीजेंड्स के खिलाफ बेटे के साथ बल्लेबाजी की। उन्होंने अपने बेटे की बल्लेबाजी की तारीफ करते हुए कहा, 'जब आप अपने बेटे के साथ बल्लेबाजी करते हैं तो वह एक खूबसूरत लम्हा होता है। स्क्रीन में असद को साथ में देखकर गर्व हो रहा है। फ्रेंडशिप कप में असद ने शानदार बल्लेबाजी की और कुछ अच्छी पारियां खेली।' इंडिया लीजेंड्स को पाकिस्तान लीजेंड्स के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा था।

सिंधू जर्मन ओपन से बाहर

नई दिल्ली। ओलंपिक में दो बार पदक जीतने वाली भारतीय स्टार पीवी सिंधू को यहां चीन की कम रैंकिंग की झांग यी मैन से हार का सामना करना पड़ा, जिससे वह जर्मन ओपन सुपर 300 बैडमिंटन टूर्नामेंट के दूसरे दौर में ही बाहर हो गयी।विश्व चैंपियनशिप 2019 की विजेता और यहां सातवीं वरीयता प्राप्त सिंधू 55 मिनट तक चले मैच में झांग से 14-21, 21-15, 14-21 से हार गयी। इस तरह से सिंधू के लिये यूरोपीय चरण की शुरुआत निराशाजनक रही। वह

अगले सप्ताह से शुरू होने वाली ऑल इंग्लैंड चैंपियनशिप में खिताब के दावेदारों में शामिल है। भारतीय खिलाड़ी शुरू में लय हासिल नहीं कर पायी तथा झांग ने पहले 5-5 से बराबरी की और फिर लगातार छह अंक बनाकर 11-5 से बढ़त बना दी। उन्होंने इसके बाद अच्छा खेल जारी रखा और पहला गेम आसानी से अपने नाम किया।

सिंधू ने दूसरे गेम में वापसी की। वह ब्रेक के समय 11-10 से आगे थी और इसके बाद उन्होंने यह गेम जीतकर मुकाबले को बराबरी पर ला दिया। लेकिन चीनी खिलाड़ी ने निर्णायक गेम में फिर से लय हासिल की और ब्रेक तक 11-8 से बढ़त बनाने के बाद आगे भी भारतीय खिलाड़ी को कोई मौका नहीं दिया।

आइपीएल से पहले गुजरात टाइटंस की टीम करेगी उद्घाटन समारोह का आयोजन, टीम की जर्सी भी होगी लांच

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग 2022 की नई टीम गुजरात टाइटंस ने एलान किया है कि वे रविवार को नरेंद्र मोदी स्ट्रेडियम में अपने एक उद्घाटन समारोह का आयोजन करेंगे। ये विश्व का सबसे बड़ा स्टेडियम होने के साथ-साथ गुजरात टाइटंस का होम ग्राउंड भी है। इस समारोह में गुजरात टाइटंस टीम की भावना और राज्य की विरासत की झलक देखने को मिलेगी। इस कार्यक्रम में टीम के सभी खिलाड़ी, सपोर्टिंग स्टाफ के अलावा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहेंगे। इस समारोह में ही टीम अपनी जर्सी भी लांच करेगी। इसे फैंस को ज्यादा से ज्यादा जोड़ने के लिए डिजाइन किया गया है। टीम फ्रेंचाइजी के बीच लोगो और जर्सी लांच करने की परंपरा पुरानी रही है।आइपीएल में पहली बार उतर रही गुजरात की टीम फैंस के बीच इस तरह के आयोजन के माध्यम से काफी चर्चित रही है। गुजरात की टीम हार्दिक पांड्या के नेतृत्व में काफी बैलेंस दिख रही है। टीम ने जनवरी में पांड्या, राशिद खान और शुभमन गिल को साइन किया था। टीम अपने आइपीएल सफर के लिए पूरी तरह से उत्साहित है।

श्रीलंका के खिलाफ दूसरे टेस्ट में नजरें कोहली के बल्ले पर

बेंगलुरू। पिछले 28 महीने से अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में शतक नहीं जमा सके विराट कोहली श्रीलंका के खिलाफ शनिवार से गुलाबी गेंद से खेले जाने वाले दूसरे टेस्ट में जब अपने आईपीएल मैदान पर उतरेंगे तो नजरें उन्हीं के बल्ले पर रहेंगी। कोहली ने आखिरी बार बांग्लादेश के खिलाफ कोलकाता में नवंबर 2019 में गुलाबी गेंद टेस्ट में ही शतक जमाया था। उन्होंने उस पारी में 136 रन बनाये थे। उसके बाद से भारतीय कप्तान 28 पारियां खेल चुके हैं लेकिन टेस्ट शतक नहीं बना सके। उन्होंने छह बार 50 से अधिक का स्कोर बनाया और सर्वोच्च स्कोर इस साल जनवरी में दक्षिण

अफ्रीका के खिलाफ 79 रन था। अब वह एम चिन्नास्वामी स्टेडियम पर लौट रहे हैं जिस पर उनकी टीम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर आईपीएल खेलती है। मैदान से वाकफियत होने का भी उन्हें फायदा मिलेगा। विश्व क्रिकेट में अपना अलग मुकाम बना चुके कोहली जब भी मैदान पर उतरते हैं तो उनसे काफी अपेक्षायें होती हैं।मैदान से भीतर और बाहर अपने कैरियर के सबसे चुनौतीपूर्ण दौर से जूझ रहे कोहली की बीसीसीआई से ठनने और फिर वनडे टीम की कप्तानी से हटाये जाने से उन पर दबाव बढा है।श्रीलंका के कमजोर गेंदबाजी आक्रमण के सामने हालांकि अपने मनचाहे मैदान पर वह बल्ले की खामोशी दूर कर सकते हैं। मोहाली टेस्ट में भी उन्होंने अच्छी शुरूआत की थी लेकिन उसे बड़ी पारी में नहीं बदल सके। ऐसा नहीं है कि वह अच्छा खेल नहीं पा रहे।

वह गेंद को बखूबी मार रहे हैं लेकिन जिस धाराप्रवाह अंदाज में वह खेलते हैं, वह नजर नहीं आ रहा और कई बार उनकी एकाग्रता भी भंग हो रही है। थकाऊ कार्यक्रम भी इसकी एक वजह हो सकता है और बढती उम्र भी। क्रिकेट के मैदान से इतर विवादों का असर भी उनके प्रदर्शन पर पड़ा है। गुलाबी गेंद का टेस्ट होने पर अंतिम एकादश में तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज या फिट होकर लौटे हरफनमौला अक्षर पटेल को जयंत यादव की जगह उतारा जा सकता है। जयंत मोहाली में कुछ खास नहीं कर सके थे। श्रीलंकाई पारी की हालत खस्ता होने पर भी वह दोनों पारियों में कोई विकेट नहीं ले सके थे।

विकेट खराब नहीं था लेकिन हमारे पास बल्लेबाज ही नहीं बचे थे : मिताली

हैमिल्टन। कप्तान मिताली राज ने न्यूजीलैंड के हाथों आईसीसी महिला विश्व कप के मैच में 62 रन से हार के बाद स्वीकार किया कि शीर्षक्रम का प्रदर्शन अपेक्षा के अनुरूप नहीं था और भारत के पास मैच में बने रहने के लिये बल्लेबाज नहीं बचे थे।जीत के लिये 261 रन के लक्ष्य के जवाब में भारतीय टीम 198 रन ही बना सकी। मिताली ने मैच के बाद कहा ,'' हमारे बल्लेबाजों को खासकर शीर्ष और मध्यक्रम को अच्छा प्रदर्शन करना होगा क्योंकि दूसरी टीमें 250 . 260 रन बना रहीं हैं।''

उन्होंने कहा ,'' यह लक्ष्य हासिल किया जा सकता था अगर शीर्षक्रम अच्छा प्रदर्शन करता। लगातार विकेट गिरने से काफी दबाव बना और बाद में हमारे पास बल्लेबाज ही नहीं बचे।' उन्होंने कहा ,'' पिच में अच्छी उछाल थी

लेकिन बल्लेबाजी के लिये यह खराब पिच नहीं थी। उनके तेज गेंदबाजों ने अनुशासित प्रदर्शन किया लेकिन हम इससे बेहतर बल्लेबाजी कर सकते थे।'' मिताली ने पाकिस्तान के खिलाफ पहले मैच में मिली जीत के बाद भी यह चिंता जताई थी। पहले मैच में शीर्षक्रम की नाकामी की भरपाई निचले क्रम ने कर दी थी। भारत के गेंदबाजों ने उम्दा प्रदर्शन करके न्यूजीलैंड को नौ विकेट पर 260 रन पर रोक दिया। मिताली ने कहा ,'' हमारे गेंदबाजों ने आज अच्छा प्रदर्शन किया। शुरूआती विकेट लेने के बाद जिस तरह से वे साझेदारियां बना रहे थे , मुझे लगा कि 270 या 280 रन बना लेंगे।'' मेजबान कप्तान सोफी डेवाइन ने जीत को टीम प्रयासों का नतीजा बताया। उन्होंने कहा ,'' यह मुकम्मिल प्रदर्शन था। हमने अच्छी साझेदारियां बनाई। एमी सैटर्थवेट ने शानदार प्रदर्शन किया। हमने नींव तैयार की और हमें पता था कि यह अच्छा स्कोर है।'' उन्होंने अपने गेंदबाजों की तारीफ करते हुए कहा ,'' गेंदबाजों ने शानदार प्रदर्शन किया। फ्रांसिस मैके ने उम्दा स्पिन गेंदबाजी की और ली ताहुहू ने बीच के ओवरों में रनगति रोकी।

पाकिस्तान के खिलाफ दूसरे टेस्ट में बेहतर पिच चाहते हैं वॉर्नर

कराची। आस्ट्रेलिया के सलामी बल्लेबाज डेविड वॉर्नर ने कहा है कि कराची में पाकिस्तान के खिलाफ दूसरे टेस्ट में उन्हें बेहतर पिच

मिलने की उम्मीद है। रावलपिंडी की सपाट पिच पर दोनों टीमों के बीच पहला मैच ड्रॉ रहा था। वॉर्नर ने कहा ,'' मैं ऐसा मैच चाहता हूं कि 20 मौके बन सके। जो दर्शकों के लिये रोमांचक और मनोरंजक हो।'' पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के अध्यक्ष रमीज राजा ने स्वीकार किया कि मैच ड्रॉ होना टेस्ट क्रिकेट के लिये अच्छा नहीं है।

आस्ट्रेलिया के बल्लेबाज और उपकप्तान स्टीव स्मिथ ने भी पिंडी क्रिकेट स्टेडियम की पिच को मृत बताया था। वॉर्नर ने कहा ,'' गेंद पिच पर सपाट और धीमी आ रही थी। इसमें उछाल भी नहीं थी और यह टूटी फुटी पिच की तरह थी।

कौशल भारत, खेलो इंडिया, फिट इंडिया योजनाओं ने रखी मजबूत भारत की नींव : ठाकुर

नई दिल्ली। खेल और युवा कार्य मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि कौशल भारत, खेलो इंडिया और फिट इंडिया जैसी योजनाओं से देश भर के करोड़ों युवाओं को अपने कौशल को निखारने में मदद मिली है और इससे मजबूत भारत की नींव पड़ी है।तीसरे राष्ट्रीय युवा संसद महोत्सव 2022 के राष्ट्रीय दौर के प्रारंभिक सत्र को संबोधित करते हुए ठाकुर ने युवा संसद के विभिन्न दौर में भाग लेने वाले प्रतिभागियों की भी तारीफ की। उन्होंने कहा ,'' इस साल महोत्सव की थीम 'नये भारत की आवाज बनो और समाधान तलाशकर नीति बनाने में योगदान दो ' थी। मैं आप सभी से किसी एक सामाजिक सरोकार के विषय पर फोकस करने का अनुरोध करता हूं जो ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, भुखमरी हटाओ, लैंगिक समानता, स्वच्छ और सस्ती ऊर्जा, शुद्ध जल और स्वच्छता कुछ भी हो सकता है।'' उन्होंने कहा ,'' आजादी

के अमृत महोत्सव में आपसे अब तक हुई प्रगति पर चर्चा करके आजादी के सौ साल पूरे होने तक भारत को और बेहतर बनाने के लिये समाधान तलाशने का भी अनुरोध करता हूं।'' उन्होंने कहा ,'' हम स्वास्थ्य, खेलों, मीडिया, परिवहन, बुनियादी ढांचे, विदेश नीति जैसे मामलों में क्या कर सकते हैं कि एक अरब लोगों का जीवन बदल जाये। एक अरब लोग मानवता के भविष्य और जीवन को आसान बनाने के लिये क्या कर सकते हैं।'' ठाकुर ने कहा कि स्वामी विवेकानंद के सिद्धांतों को आगे ले जाने में राष्ट्रीय युवा संसद ने अहम भूमिका निभाई है। इस मौके पर युवा कार्य और खेल राज्य मंत्री निसिथ प्रमाणिक, युवा कार्य और खेल सचिव सुजाता चतुर्वेदी, राज्यसभा महासचिव पी सी मोदी भी मौजूद थे।

ससेक्स के लिये काउंटी क्रिकेट खेलेंगे पुजारा

होव। भारतीय टीम से बाहर चल रहे बल्लेबाज चेतेश्वर पुजारा आगामी इंग्लिश काउंटी सत्र में ससेक्स के लिये खेलेंगे जो टीम में आस्ट्रेलिया के ट्रेविस हेड की जगह लेंगे। क्लब ने बृहस्पतिवार को कहा कि पुजारा ससेक्स के लिये प्रथम श्रेणी और लिस्ट ए मैच दोनों खेलेंगे।भारत के लिये 95 टेस्ट खेल चुके पुजारा को खराब फॉर्म के कारण बाहर किया गया है। वह इससे पहले यॉर्कशर और नॉटिंघमशर के लिये इंग्लिश काउंटी चैम्पियनशिप खेल चुके हैं। क्लब ने एक बयान में कहा ,'' ट्रेविस हेड ने बढी हुई अंतरराष्ट्रीय व्यस्तताओं और अपने पहले बच्चे के जन्म के

कारण अनुबंध से फारिग करने का अनुरोध किया था जो क्लब ने मान लिया है और 2022 सत्र में उनकी जगह चेतेश्वर पुजारा खेलेंगे।'' क्लब ने कहा ,'' पुजारा पहले मैच से पूर्व ही आ जायेंगे और आरएल 50 (राष्ट्रीय एक दिवसीय चैम्पियनशिप) के अंत तक रहेंगे।''

इंग्लिश काउंटी सत्र सात अप्रैल से शुरू होगा और ससेक्स का पहला मैच 14 अप्रैल को डर्बीशर के खिलाफ है। सत्र सितंबर तक चलेगा। पुजारा श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला खेल रही भारतीय टीम में नहीं है।

उनकी घरेलू टीम सौराष्ट्र भी रणजी ट्रॉफी के नॉकआउट चरण में जगह नहीं बना सकी और आईपीएल में उन्हें किसी टीम ने नहीं खरीदा। इसके मायने हैं कि वह पूरे सत्र में खाली हैं।

न्यूजीलैंड ने भारत को 62 रनों से हराया, नहीं चला कप्तान मिताली राज का बल्ला

होव। महिला विश्व कप 2022 में भारत अपना पहला मैच हार गया है। मेजबान न्यूजीलैंड ने भारत को 62 रनों से हराया। न्यूजीलैंड ने भारत को 261 रनों का टारगेट दिया था लेकिन भारतीय टीम 198 रनों पर ही ऑलआउट हो गयी। 261 रनों का पीछा करते हुए, भारत 46.4 ओवरों में सिर्फ 198 रन बना सका। हरमनप्रीत कौर ने धीमी शुरुआत के बाद 63 गेंदों में 71 रन बनाये। लेकिन भारत की धीमी शुरूआत के कारण यह रन जीत नहीं दिला पाये। कप्तान मिताली राज ने एक बार फिर अपना बल्ला

चलाया लेकिन 31 रनों पर वह आउट हो गयी। यासतिका भाटिया ने 27 रन बनाकर आउट हो गयी।हरफनमौला पूजा वस्त्राकर के चार विकेट की मदद से भारत ने आईसीसी महिला विश्व कप के मैच में न्यूजीलैंड को नौ विकेट पर 260 रन पर रोक दिया। वस्त्राकर ने दस ओवर में सिर्फ 34 रन देकर चार विकेट लिये जिसमें न्यूजीलैंड की कप्तान सोफी डेवाइन (35) और एमी सैटर्थवेट (75) के विकेट शामिल थे। वह 47वें ओवर में हैट्रिक से चूक गई। स्पिनर राजेश्वरी गायकवाड़ ने दो जबकि दीप्ति शर्मा और झूलन गोस्वामी ने एक एक विकेट लिया। न्यूजीलैंड के लिये सैटर्थवेट ने 84 गेंद में 75 और एमेलिया केर ने 64 गेंद में 50 रन बनाये। कैटी मार्टिन ने 41 रन का योगदान दिया।

पाकिस्तान दौरे पर गया यह ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज अचानक स्वीमिंग पूल में गिरा, हंसी नहीं रोक पाए साथी खिलाड़ी

कराची। ऑस्ट्रेलियाई टीम फिलहाल पाकिस्तान के दौरे पर है। दोनों टीमों के बीच तीन मैचों की टेस्ट सीरीज खेली जा रही है। रावलपिंडी में खेला गया पहला मुकाबला ड्रॉ पर समाप्त हुआ। अब दोनों टीमें दूसरे टेस्ट के लिए कराची पहुंच चुकी हैं।

यह मैच 12 मार्च से खेला जाएगा। इससे पहले ऑस्ट्रेलियाई विकेटकीपर बल्लेबाज एलेक्स कैरी के साथ एक अजीबोगरीब घटना घटी। इसे देखकर उनके साथ खिलाड़ी हंसी नहीं रोक

सके।दरअसल, जब ऑस्ट्रेलियाई टीम कराची में अपने होटल में पहुंची, तो कैरी नाथन लॉयन के साथ बातचीत कर आगे बढ़ रहे थे। वह बात करते-करते स्वीमिंग पूल में गिर गए।

वहां पर मौजूद उनके साथी खिलाड़ी पैट कमिंस, लॉयन अपनी हंसी नहीं रोक पाए। ऑस्ट्रेलियाई कप्तान पैट कमिंस ने इसका वीडियो भी बनाया है और इसे इंस्टाग्राम पर शेयर भी किया है।

हालांकि, कैरी ने स्वीमिंग पूल में गिरने के दौरान एक सूझबूझ वाला काम भी किया। उन्होंने गिरने के बाद सबसे पहले अपना मोबाइल फोन साथी खिलाड़ी की ओर फेंक दिया। स्वीमिंग पूल से बाहर निकलने के बाद कैरी को किसी ने बताया कि यह पूरी घटना रिकॉर्ड हुई है, तो वह खुद भी अपनी हंसी नहीं रोक पाए। इस वीडियो को फैन्स भी सोशल मीडिया पर काफी शेयर कर रहे हैं। ऑस्ट्रेलियाई टीम ने रावलपिंडी में पहले टेस्ट में शानदार प्रदर्शन किया था और पाकिस्तान को हावी होने का कोई मौका नहीं दिया।

डे-नाइट टेस्ट में पहली बार आमने-सामने होंगे भारत और श्रीलंका

नई दिल्ली। भारत और श्रीलंका के बीच दो टेस्ट मैचों की सीरीज का दूसरा मैच शनिवार 12 मार्च को बेंगलुरू में खेला जाएगा। भारतीय टीम मोहली टेस्ट जीतकर सीरीज में 1-0 से आगे है। बेंगलुरू टेस्ट डे नाइट होगा। भारत की सरजमीं पर ये तीसरा डे-नाइट टेस्ट मैच होगा। रोहित शर्मा के लिए कप्तान के तौर पर ये पहला डे-नाइट टेस्ट मैच होगा। इससे पहले अपने घर पर भारत ने दो डे नाइट टेस्ट खेले हैं और दोनों मैचों में भारत को जीत मिली है। पहली बार भारत ने बांग्लादेश को हराया था जबकि दूसरी बार उसने इंग्लैंड को हराया।इस तरह डे-नाइट टेस्ट में अपने घर पर भारत का सौ-प्रतिशत जीत का रिकार्ड है। भारत को डे नाइट टेस्ट में एकमात्र हार देश से बाहर मिली है। टीम को एडिलेड में आस्ट्रेलिया के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा था जिसे टीम इंडिया भूलना चाहेगी। उस मैच में भारत की पारी केवल 36 रन पर आलआउट हो गई थी। भारतीय टीम के लिए सबसे अच्छी बात ये है कि विराट कोहली के नाम हीं डे-नाइट टेस्ट में एकमात्र सेंचुरी है और बेंगलुरू टेस्ट में इसे दोहराने की कोशिश करेंगे।

विदेश संदेश

यूक्रेन-रूस संकटः सिर्फ तेल ही नहीं दुनिया के सामने मंडरा रहा खाद्य सुरक्षा का खतरा, गेहूं-जौ के साथ कई चीजों की सप्लाई हो रही बाधित

वाशिंगटन। रूस-यूक्रेन जंग के बीच दुनिया कई संकटों से जूझ रही है। सिर्फ सैन्य सुरक्षा एक मुद्दा नहीं है। कच्चे तेल और गैस के दाम भी तेजी से बढ़ रहे हैं। इस बीच एक और बड़ा संकट दुनिया के सामने मुंह फैला रहा है। दरअसल, कोरोना महामारी से उबर रहे विश्व के सामने अब खाद्य सुरक्षा का भी संकट खड़ा हो गया है।

दरअसल, यूक्रेन और रूस ऊर्जा उत्पादन के साथ ही साथ गेहूं और जौ के उत्पादन में भी विश्व के सबसे बड़े देशों में से एक हैं। दुनिया में गेहूं व जौ के आयात का लगभग एक तिहाई हिस्सा इन्हीं दो देशों से होता है। और तो और सूरजमुखी के तेल की सप्लाई करने वाला सबसे प्रमुख देश यूक्रेन ही है। युद्ध के बीच दुनिया में खाद्य पदार्थों की सप्लाई बाधित हो रही है, जिस कारण इनके दाम तेजी से बढ़ रहे हैं।

यूएन के अधिकारी ने जारी की चेतावनी

विश्व खाद्य सुरक्षा समिति के प्रमुख ग्रेबियल फरेरो ने चेतावनी जारी की है। उन्होंने कहा कि कोरोना महामारी ने पहले से ही दुनिया के सामने बड़ा संकट खड़ा कर दिया है। भुखमरी पहले से ही बढ़ रही है। ऐसे में अब दो प्रमुख देशों के बीच युद्ध ने एक बार फिर से इसमें इजाफा कर दिया है। उन्होंने बताया कि महामारी से पहले की तुलना में वर्तमान में 16.1 करोड़ ज्यादा लोग भुखमरी से पीड़ित हैं। इस समय इनकी संख्या 82.1 करोड़ के करीब है।

सात रूसी अमीरों की ब्रिटेन ने जब्त की संपत्तियां, चेल्सी फुटबॉल क्लब के मालिक पर भी शिकंजा

कीव। यूक्रेन पर हमले के बाद से रूस और राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के करीबी लोगों पर वैश्विक पाबंदियों का शिकंजा कसता जा रहा है। अब ब्रिटेन ने रूस के सात अमीरों व प्रभावशाली लोगों की संपत्तियां जब्त कर ली हैं। इनमें चेल्सी फुटबॉल क्लब के मालिक रोमन अब्रामोविच भी शामिल हैं।

ब्रिटेन का कहना है कि अब्रामोविच को क्रेमलिन का वरदहस्त प्राप्त है। उन्होंने अपने व्यावसायिक संपर्कों के जरिए यूक्रेन को अस्थिर करने का प्रयास किया। उन पर पूर्वी योरपीय देश यूक्रेन की एकता, अखंडता व संप्रभुता को को नुकसान पहुंचाने का आरोप लगाया गया है। ब्रिटेन के विदेश विभाग ने कहा कि अब्रामोविच पर इस्पात कंपनी एवरेज पीएलसी के जरिए पाबंदी लगाई गई है। इस कंपनी में उनकी बड़ी हिस्सेदारी है। इस कंपनी पर रूसी सेना को टैंक बनाने के लिए इस्पात की आपूर्ति करने का आरोप है। अब्रामोविच की संपत्तियां जब्त कर ली गई हैं और उन्हें ब्रिटेन में अब किसी कारोबार की इजाजत नहीं होगी। उनकी यात्रा पर भी पाबंदी लगाई गई है। ब्रिटेन के इस कदम के बाद लंदन स्थित एवरेज कंपनी के शेयर के दाम में 13 फीसदी की गिरावट देखी गई। इस कंपनी में अब्रामोविच की हिस्सेदारी 2021 के अंत में 1.4 अरब पाउंड की थी। लेकिन तक इसका मूल्य घटकर 32 करोड़ पाउंड रह गया।

पहली बार है जब अब्रामोविच पर ब्रिटेन या उसके किसी सहयोगी देश ने प्रतिबंध लगाए हैं। गुरुवार को लगाए गए इन प्रतिबंधों के दायरे में रूसी अमीर या प्रभावशाली लोग हैं- इगोर सेचिन, ओलेग डेरिपस्का, एंड्री कोस्टिन, एलेक्सी मिलर, निकोलाई टोकरेव और दिमित्री लेबेदेव। डेरिपस्का पहले अब्रामोविच का साझेदार था। जबकि ब्रिटिश विदेश विभाग ने सेचिन को पुतिन का दायां हाथ बताया है। इसी तरह कोस्टिन, मिलर, टोकरेव और लेबेदेव को राष्ट्रपति पुतिन के 'आंतरिक सर्कल' का हिस्सा बताया गया है।

पार्लियामेंट लॉज में पुलिस मुहिम के बाद हंगामा, 10 गिरफ्तार

इस्लामाबाद। पाकिस्तान की राजधानी पुलिस के पार्लियामेंट लॉज पर धावा बोलने के बाद विपक्षी दलों ने सरकार की जमकर खिंचाई की। विपक्षी सांसदों ने हंगामा भी मचाया।

इस बीच, जेयूआई-एफ एमएनए के सलाहुद्दीन अयूबी समेत 10 लोगों की गिरफ्तारी की गई। घटना के बाद पाकिस्तान में विपक्ष ने आरोप लगाया कि इमरान सरकार जानबूझकर यह कार्रवाई कर रही है। जानकारी के मुताबिक इस्लामाबाद पुलिस महानिरीक्षक मोहम्मद अहसान यूनुस ने घटना पर ध्यान देते हुए संबंधित अधिकारियों को निलंबित कर दिया।

एक्सप्रेस ट्रिब्यून के अनुसार, पुलिस ने जेयूआई-एफ की सहायक कंपनी अंसारुल इस्लाम के स्वयंसेवकों की मौजूदगी की सूचना पर लॉज में कार्रवाई की थी और पार्टी के लगभग 10 से 12 कार्यकर्ताओं को हिरासत में ले लिया। एमएनए की गिरफ्तारी का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है। ट्विटर पर #PTIAttacksParliament ट्रेंड कर रहा था। रिपोर्ट्स के मुताबिक, पाकिस्तान की कानून प्रवर्तन एजेंसी ने गिरफ्तारी करने के लिए एमएनए के कमरे का दरवाजा तोड़ दिया। ट्विटर पर वीडियो में पुलिस अधिकारियों को लॉज के अंदर तलाशी लेते हुए और पुलिस की तलाश करते हुए दिखाया गया है।

यूक्रेन के कई हवाई अड्डों के पास रूस ने किए बम धमाके, कीव की ओर तेजी से बढ़ रही रूसी सेना

कीव। रूस-यूक्रेन में तीसरे सप्ताह भी युद्ध जारी है। रूस ने आज अपना हमला तेज कर दिया है और यूक्रेन के कई शहरों पर घातक बमबारी कर रहा है। रूस की सेना अब कीव की ओर तेजी से आगे बढ़ रही है। इस बीच यूक्रेन ने दावा किया है कि पश्चिमी यूक्रेनी शहरों इवानो-फ्रैंकिव्स्क और लुत्स्क में हवाई अड्डों के पास रूस ने आज कई जबरदस्त बम धमाके किए हैं। दूसरी ओर रूस ने आज यूक्रेन से रूस के लिए दैनिक मानवीय गलियारे खोलने का ऐलान किया है। रूस के रक्षा मंत्रालय के अनुसार अब हर दिन सुबह दस बजे तक लोग यूक्रेन से रूस सुरक्षित कारिडोर से जा सकेंगे। उधर यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की ने मारियूपोल में सुरक्षित कारिडोर पर रूस द्वारा हमला करने का आरोप लगाया है। बता दें कि अभी तक 1,00,000 लोगों की दो दिनों में सुरक्षित निकासी हो चुकी है।

अमेरिका मोस्ट फेवरेट नेशन का स्टेटस वापस लेगा

अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन शुक्रवार को रूस के साथ सामान्य व्यापार संबंधों को समाप्त करने का ऐलान करेंगे। अमेरिका इसी

के साथ यूरोपीय संघ व जी-7 देशों से मिलकर रूस से व्यापार में मोस्ट फेवरेड नेशन का स्टेटस भी वापस लेगा। यूक्रेन पर रूसी आक्रमण के चलते बाइडन आयात पर भी टैरिफ को बड़ा सकते हैं। बता दें कि यह कदम संयुक्त राज्य अमेरिका और उसके सहयोगियों द्वारा पुतिन पर युद्ध को समाप्त करने के लिए दबाव बनाने का प्रयास है।

अमेरिका ने यूक्रेन को दिया 13.6 बिलियन डालर का पैकेज

रूस द्वारा हमले झेल रहे यूक्रेन के लिए अमेरिका ने एक बार फिर सैन्य और मानवीय सहायता का एलान किया है। आज ही यूएस सीनेट ने यूक्रेन के लिए सैन्य और मानवीय सहायता के रूप में 13.6 बिलियन डालर के आपातकालीन पैकेज को मंजूरी दे दी है।

यूक्रेन में फंसे 200 भारतीय लौटे

भारत सरकार द्वारा आपरेशन गंगा तेजी से काम कर रहा है। आज भी यूक्रेन में फंसे 200 भारतीय नागरिकों को एक विशेष विमान के दिल्ली लाया गया है। बता दें कि इससे पहले भी एक विशेष विमान 242 भारतीयों को लेकर पोलैंड से लौटा था।

युद्धग्रस्त यूक्रेन में लोग बुक कर रहें है होटल, वजह जानकर भर आएगा आपका दिल

मास्को। रूस यूक्रेन में इस समय भीषण जंग हो रही है। ऐसे हालातों में यूक्रेन के लोग अपने देश से भाग रहे हैं। तो इस युद्ध ग्रस्त क्षेत्र में रूम बुक कराने के क्या मायने हो सकते हैं। देश में फंसे अपने नागरिकों को निकाल रहे यूक्रेन में रूम बुकिंग में भारी उछाल देखा जा रहा है। दिग्गज वेकेशन रेंटल कंपनी Airbnb ने जानकारी दी है कि यूक्रेन में उसकी साइट पर लिस्टेड रूम की बुकिंग में भारी उछाल देखने को मिल रहा है। Airbnb के प्रवक्ता ने कहा कि दो-तीन दिन में, यूक्रेन में 61 हजार से ज्यादा बुकिंग हो चुकी है।अब आपके दिमाग में यह बात आ रही होगी कि आखिर इस देश में हो रही भीषण जंग के बीच यहां घूमने के बारे में कौन सोच रहा है तो आपको बता दें कि यह सब घूमने के लिए नहीं बल्कि

होटल और छोटे छोटे होम स्टे चानने वाले परिवारों की सहायता के लिए किया जा रहा है। बुकिंग के जरिए ऐसे लोगों को पैसा भेजा जा रहा है ताकि आर्थिक मदद की जा सके, दो-तीन दिन में की गई बुकिंग पर ही 1.9 मिलियन डॉलर खर्च किए जा चुके हैं।

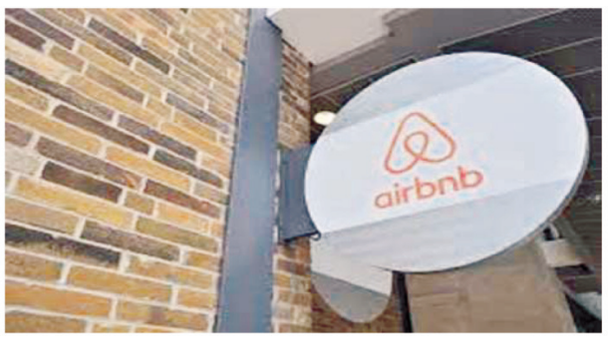

दरअसल यह सब तब शुरू हुआ जब Airbnb ने रूस और बेलारूस में अपने कारोबार को निलंबित करने की घोषणा की। इसके बाद Airbnb को बुक करने के बाद लोगों ने सोशल मीडिया पर कई पोस्ट साझा की। जिसमें यह बताया गया कि उन्होंने संकटग्रस्त इलाके में रह रहे लोगों की कैसे मदद की। एक यूजर ने बताया कि उसने और उसके पति ने उन शहरों में बुकिंग की जो चारों ओर से घेरे जा चुके थे। यहां रह रहे लोग वो थे जो संकट में फंसे हैं।

Airbnb पर बुकिंग इसलिए शुरू हुई ताकि यूक्रेन में इसके जरिए कमरे बुक कर के वहां के लोगों की मदद की जा सके। ऐसा करने से वहां फंसे लोगों तक तुरंत पैसे पहुंच सके। लोग इस आईडिया पर काम कर रहे हैं और इसके जवाब में सोशल मीडिया पर यूक्रेन की ओर से जो रिस्पॉन्स आ रहा है वह दिल छू लेने वाला है।

यूक्रेन संकट : युद्धविराम पर नहीं बनी बात मौजूदा मॉडल पर ही रूस से अगली वार्ता

कीव। रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध तीसरे हफ्ते में पहुंच गया है, लेकिन अब तक इसका कोई भी मकसद पूरा नहीं हुआ है। उल्टे इस युद्ध ने हजारों लोगों की जान ले ली है और 20 लाख से ज्यादा लोगों को बेघर कर दिया है। इन सबके बीच बृहस्पतिवार को यूक्रेन और रूस के विदेश मंत्रियों की बैठक में युद्धविराम पर बात नहीं बनी। इस बेनतीजा बातचीत में रूस ने यूक्रेन को कोई भी रियायत बरतने से इनकार कर दिया, हालांकि दोनों के बीच मौजूदा मॉडल पर ही अगली बैठक करने पर सहमति बनी। यूक्रेन के विदेशमंत्री दिमित्रो कुलेबा ने कहा कि नागरिकों को सुरक्षित निकालने के लिए मानवीय गलियारों और

युद्धविराम पर चर्चा के लिए तुर्की में रूसी विदेशमंत्री सर्गेई लावरोव के साथ बैठक की। बातचीत में युद्ध समाप्त करने को लेकर कामयाबी नहीं मिली। कुलेबा ने कहा, रूस के अन्य नीति निर्धारकों के साथ बात करने की जरूरत है। युद्ध से उपजे मानवीय मुद्दों के समाधान के लिए आगे इसी मॉडल पर बातचीत की सहमति बनी। उन्होंने कहा कि मॉस्को युद्धविराम के लिए तैयार नहीं है। वह चाहता है कि यूक्रेन आत्मसमर्पण कर दे, जो कभी नहीं होगा। लावरोव से युद्धविराम पर हमें आश्वासन नहीं मिला। रियायत मिलती तो नागरिकों को सहायता पहुंचाई जा सकती थी। यूक्रेन ने मैरियूपोल के बंदरगाह पर फंसे हजारों नागरिकों को निकालने और कीव में अपने लोगों को मदद पहुंचाने तक युद्ध रोकने की मांग की थी।

सऊदी अरब में तेल शोधन संयत्र पर ड्रोन से हमला, हूती विद्रोहियों पर शक

रियाद। सऊदी अरब की राजधानी रियाद में एक तेलशोधन संयंत्र पर ड्रोन से हमला किया गया, जिससे वहां मामूली आग लग गई। हालांकि, इससे कोई नुकसान नहीं हुआ और ना ही आपूर्ति प्रभावित हुई है। ऊर्जा मंत्रालय ने शुक्रवार को यह जानकारी दी।

मंत्रालय ने बयान में ड्रोन हमला कहा से किया गया, इस संबंध में कोई जानकारी नहीं दी। हमले की अभी तक किसी ने जिम्मेदारी भी नहीं ली है। देश के तेल प्रतिष्ठानों पर यमन के हूती विद्रोहियों ने पहले भी कई हमले किए हैं। ईरान समर्थित हूती विद्रोहियों ने 2019 में पूर्वी प्रांत में अबकैक तेल प्रसंस्करण प्रतिष्ठान पर हुए एक भीषण हमले की जिम्मेदारी भी ली थी।सरकारी 'सऊदी प्रेस एजेंसी' ने मंत्रालय का बयान बृहस्पतिवार देर रात जारी किया गया। हमला बृहस्पतिवार सुबह करीब चार बजकर 40 मिनट पर किया गया

था। मंत्रालय ने कहा कि इस तरह के हमले न केवल सऊदी अरब को निशाना बनाते हैं, बल्कि दुनिया में ऊर्जा आपूर्ति की सुरक्षा एवं स्थिरता को भी प्रभावित करते हैं। गौरतलब है कि सऊदी अरब, यमन की राजधानी सना में 2015 से हूती विद्रोहियों का मुकाबला कर रहा है, जिन्होंने राजधानी पर कब्जा कर वहां की सरकार को बेदखल कर दिया था। सात साल की लड़ाई के बावजूद सना और उत्तरी यमन के अधिकांश हिस्सों पर हूती विद्रोहियों का कब्जा कायम है।

योगी की जीत से बौखलाए पाकिस्तानीः अपनी ही सरकार से बोले- भारत का मुकाबला करने के लिए पाकिस्तान को अब ज्यादा तैयारी करनी होगी

इस्लामाबाद। उत्तर प्रदेश में भाजपा और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की जीत की गूंज पाकिस्तान तक सुनाई दी। ये गूंज इतनी तेज थी कि पाकिस्तानी बौखला गए हैं। कई पाकिस्तानियों ने अपनी इस बौखलाहट को सोशल मीडिया पर भी बयां किया। यही नहीं, योगी की जीत से गुस्साए पाकिस्तानियों ने अपनी सरकार को चेतावनी तक दे डाली। यहां तक ह दिया कि अब पाकिस्तान को भारत से मुकाबला करने के लिए 2019 के मुकाबले ज्यादा तैयारी करनी होगी। पाकिस्तान के राजनीतिक विश्लेषक मोशरफ जैदी ने योगी आदित्यनाथ की जीत पर ट्वीट किया। लिखा, 'यूपी में योगी आदित्यनाथ की जीत इस बात की एक बार और पुष्टि करता है कि भारत का रास्ता अब बदलने वाला नहीं है। आने वाले समय में ये और खराब होने वाला है। 2019 के मुकाबले पाकिस्तान को दुस्साहसी भारत से निपटने के लिए और अधिक तैयार रहना चाहिए।'

2019 में भारत ने किया था बालाकोट एयरस्ट्राइक-दरअसल मोशरफ ने 2019 का जिक्र इसलिए किया क्योंकि इसी साल भारत ने पीओके में बालाकोट एयरस्ट्राइक को अंजाम दिया था। तब करीब 400 आंतकवादियों को भारत ने मार गिराया था। इसके बाद पाकिस्तान काफी बौखला गया था।

केजरीवाल को मोदी का विकल्प बताया

जहां, एक तरफ योगी की जीत पर पाकिस्तानी भड़के नजर आए, वहीं पंजाब में आम आदमी पार्टी की जीत पर पाकिस्तानी मीडिया और यूजर्स खुश नजर आए। पाकिस्तानी मीडिया ने आम आदमी पार्टी के मुखिया और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को पीएम मोदी का विकल्प तक बता

दिया। एआरवाई न्यूज ने लिखा, 'मोदी से टक्कर लेने के लिए भारत की आम आदमी पार्टी की बड़ी चुनावी उछाल।' यही नहीं, इस लेख में आगे लिखा गया है कि अरविंद केजरीवाल ही पीएम मोदी का मजबूत विकल्प बन रहे हैं। अशफाक नाम के एक पत्रकार ने भी प्रधानमंत्री मोदी के खिलाफ अरविंद केजरीवाल को बड़ा विकल्प बताया। कहा कि जल्द ही केजरीवाल का जादू पूरे देश में देखने को मिलेगा।

अमेरिका में यूक्रेनी परिवार को देश में शरण लेने की इजाजत, बाइडेन प्रशासन ने दिया आदेश

तिजुआना। अमेरिकी अधिकारियों ने एक यूक्रेनी महिला और उसके तीन बच्चों को देश में शरण लेने की इजाजत दे दी। बुधवार को महिला को बाइडन प्रशासन के व्यापक प्रतिबंधों के तहत अमेरिका में प्रवेश देने से इनकार कर दिया गया था।

चौंतीस वर्षीय महिला और उसके तीनों बच्चे, जिनकी उम्र छह, 12 और 14 साल है,सभी औपचारिकताएं पूरी करने के लिए बृहस्पतिवार को सैन डिएगो में दाखिल हुए। इससे पहले, संसद में बहुमत के नेता चक शूमर

शरण देने से मना करने के बाइडन प्रशासन के फैसले की आलोचना

की थी।'सेंटर फॉर जेंडर एंड रिफ्यूजी स्टडीज' की विधि निदेशक ब्लेन बुके जब बुधवार को तिजुआना से सैन डिएगो लौट रही थीं, तब उन्होंने यूक्रेनी महिला और उसके बच्चों को रोते हुए देखा। चारों उस समय बहुत चिंतित लग रहे थे। बुके हैती के प्रवासियों की मदद के लिए तिजुआना गई थीं। उनके ट्वीट और मीडिया में इससे जुड़ी खबरों से पूर्ववर्ती ट्रंप प्रशासन के आदेश की फिर से आलोचनाएं हुईं, जिसमें कोविड-19 के प्रसार पर लगाम लगाने का हवाला देते हुए शरण के इच्छुक लोगों को देश में प्रवेश की अनुमति देने से मना किया गया था। इस आदेश को 'टाइटल 42'के नाम से जाना जाता है। लगातार बढ़ती आलोचनाओं के बीच बाइडन प्रशासन ने अपना फैसला पलटते हुए आखिरकार यूक्रेनी महिला और उसके बच्चों को अमेरिका में शरण देने की मंजूरी दे दी।

बीमारी फैलने से रोकने के लिए तुरंत नष्ट कर दें पैथोजन, WHO ने दी यूक्रेन को सलाह

कीव। विश्व स्वास्थय संगठन ने यूक्रेन को सलाह दी है कि वो अपने यहां पर मौजूद पैथोजोन को नष्ट कर दे, इससे बीमारी फैलने को खतरा है। डब्ल्यूएचओ ने अपनी सलाह में ये भी कहा है कि खतरे की आशंका के मद्देनजर पब्लिक हेल्थ लैब में मौजूद खतरनाक पैथोजन को फौरन नष्ट करना जरूरी है। इसकी मौजूदगी लोगों को बड़ी संख्या को बीमार कर सकती है। बायोसिक्योरिटी एक्सपर्ट का कहना है कि यूक्रेन में जिस तरह से रूस बमबारी कर रहा है और उसकी सेनाएं यूक्रेन में अलग अलग हिस्सों से दाखिल हो रही हैं उसकी वजह से पैथोजन के जरिए लोगों में बीमारी फैलने का खतरा भी बढ़ गया है। इसलिए ऐसी हर उस जगह को नष्ट करने

की जरूरत है जहां पर ये मौजूद है।आपको बता दें कि कई दूसरे देशों की ही तरह यूक्रेन में भी जानवरों पर होने वाले प्रभाव को देखने के लिए कई सारी लैब्स बनी हुई हैं। इनमें से कई सारी लैब्स को अमेरिका से मदद भी मिली है। इन लैब्स में खतरनाक बीमारियों के जानवरों पर होने वाले प्रभाव को देखा जाता है। हाल ही में कोरोना महामारी की जांच और इससे जुड़े दूसरे पहलूओं को जानने के लिए यहां पर अमेरिका के सहयोग से लैब बनाई गई थीं।

इसमें यूरोपीयन यूनियन और डब्ल्यूएचओ का भी सहयोग यूक्रेन को हासिल हुआ थाडब्ल्यूएचओ से यूक्रेन को दी जाने वाली मदद और रूस के हमलों के मद्देनजर उभरे खतरे से संबंधित एक सवाल के जवाब में संगठन ने ईमेल के जरिए बताया है कि वे काफी समय से यूक्रेन की पब्लिक हेल्थ लैब्स के साथ मिलकर काम कर रहा है। इसका मकसद पैथोजन के किसी तरह से लीक हो जाने से होने वाले नुकसान को रोकना है।

इस काम में यूक्रेन को दिए गए सहयोग के चलते ही संगठन ने किसी भी अनहोनी को रोकने के लिए पैथोजन को तुरंत नष्ट करने की सलाह दी है। संगठन की तरफ से दी गई एडवाइजरी में ये भी कहा गया है कि किसी को भी ये न दिया जाए और न ही कहीं ये रहना चाहिए।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
211019 से प्रकाशित
स्वामी श्री योगी सत्यम एवम्
योग सत्संग समिति द्वारा
विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज
से मुद्रित एवम् क्रियायोग
आश्रम अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
Title UPHIN 29506

यूक्रेन की मदद को उठे दुनियाभर में हाथ

हेल्सिंकी (फिनलैंड)। रूस के आक्रमण से दहल रहे यूक्रेन की मदद को दुनियाभर से हाथ उठे हैं। कोई हथियार, कोई पैसा, कोई खाद्य सामग्री तो कोई दवाएं भेजकर संकट में घिरे यूक्रेन के नागरिकों और राष्ट्रपति जेलेंस्की की मदद कर रहा है। फिनलैंड की युवा प्रधानमंत्री सना मारीन ने कहा है कि वह 2,500 असॉल्ट राइफल्स, 1.50 लाख बुलेट्स, 1,500 एंटी टैंक हथियार और 70 हजार फूड पैकेट्स यूक्रेन भेजेंगी। 30 साल की उम्र में सांसद बनने वालीं सना 33 साल में देश की प्रधानमंत्री बन गई थीं।अमेरिकन स्टार गीगी हदीद ने फैशन वीक फाल 2022 (फैशन शो) से होने वाली आय को यूक्रेन को दान करने की घोषणा की है। गीगा हदीद ने इंस्टाग्राम पर लिखा, 'मैं यूक्रेन में युद्ध से पीड़ित लोगों की मदद करने के लिए फॉल 2022 फैशन शो से होने वाली अपनी कमाई दान करूंगी। साथ ही फिलिस्तीन को भी मदद जारी रखूंगी। गीगी ने मॉडल मीका अगार्नाराजू से प्रेरित होकर यह फैसला किया है।' यूक्रेन मूल की अमेरिकी एक्ट्रेस मिला कुनिस और उनके पति एश्टन कचर भी आगे आए हैं। उन्होंने ऋड्ढक्र४ल्लटी नाम से अभियान शुरू किया है। कुनिस ने कहा है- 'मुझे गर्व है कि मैं यूक्रेन में पैदा हुई हूं। मैं यहां के लोगों की मदद करूंगी। मैं तीन मिलियन तक की राशि भेजूंगी। पूर्व टेलीविजन स्टार बेथेनी फ्रेंकल ने यूक्रेन हमले के पीड़ितों को 10 मिलियन डॉलर की सहायता राशि भेजी है। उन्होंने कहा है कि यूक्रेन में रूसी हमले की चपेट में आए लोगों की मदद के लिए चलाए जा रहे राहत प्रयासों के तहत 25 मिलियन डॉलर जुटाए हैं।

फ्रेंकल ने इंस्टाग्राम स्टोरी वीडियो में कहा- हम इन लोगों (युद्ध पीड़ितों) को ठहरने के लिए अलग-अलग कंपनियों, खाद्य कंपनियों, लॉजिंग कंपनियों के साथ साझेदारी कर रहे हैं। इसकी घोषणा बाद में की जाएगी।ह्व इसके अलावा ट्रेनों और विमानों के लिए ट्रैवल कंपनियों के साथ सामान भेजने के लिए भागीदारी की है। हॉलीवुड एक्टर लियोनार्डो डिकैप्रियो ने 10 मिलियन यूएस डॉलर की मदद की है। इसके अलावा दुनिया के 30 से ज्यादा संस्थान यूक्रेन की मदद के लिए आगे आए हैं। इनमें यूनिसेफ यूएसए, इंटरनेशनल मेडिकल कॉर्प, हर्ट टू हर्ट इंटरनेशनल, एमईआरसीवाई कॉर्प्स, वर्ल्ड विजन और प्रोजेक्ट होप आदि प्रमुख हैं।